दिव्य दिनकर

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

एक निडर सच का दर्पण

रांची और पटना से एक साथ प्रकाशित

8

वर्ष 12 अकं :200 रांची (झारखंड) गुरुवार,01 मई 2025 पेज - 08 मूल्य: 2 RNI NO- JHAHIN/2013/54373

'प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना' के 9 वर्ष, देश में स्वच्छ ईंधन से बेहतर हुई करोड़ों जिंदगियां

एजेंसी

नई दिल्ली। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय (एमओपीएनजी) ने ग्रामीण और वंचित परिवारों को एलपीजी जैसे स्वच्छ खाना पकाने के ईंधन को उपलब्ध कराने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई) शुरू की थी, जिसके 9 वर्ष पूरे हो रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस योजना की शुरुआत 1 मई 2016 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले से की थी। पारंपरिक खाना पकाने के ईंधन के इस्तेमाल से ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य के साथ-साथ पर्यावरण पर भी हानिकारक प्रभाव पड़ता है। ऐसे में यह योजना उन ग्रामीण और वंचित परिवारों के लिए एक वरदान बनी है, जो खाना पकाने के लिए ईंधन के रूप में जलावन, लकड़ी, कोयला, गोबर के उपलों, का इस्तेमाल करते थे।पीएमयूवाई का उद्देश्य गरीब परिवारों की वयस्क महिलाओं को बिना डिपॉजिट के एलपीजी कनेक्शन उपलब्ध करवाना है। इस योजना के साथ केंद्र सरकार स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा दे रही है। पीएमयूवाई योजना के पहले चरण में मार्च 2020 तक वंचित परिवारों को 8 करोड़ एलपीजी कनेक्शन जारी करने का लक्ष्य रखा गया था। हालांकि, इस लक्ष्य को समय से पहले ही प्राप्त कर लिया गया।

पीएम मोदी ने महाराष्ट्र के औरंगाबाद में 7 सितंबर 2019 को 8 करोड़वां एलपीजी कनेक्शन सुपुर्द किया।

शेष गरीब परिवारों तक इस योजना के जरिए मदद पहुंचाने के लिए सरकार ने अगस्त 2021 में दूसरा चरण 'उज्ज्वला 2.0' लॉन्च किया था। योजना के दूसरे चरण 'उज्ज्वला 2.0' में प्रवासी परिवारों को विशेष सुविधा के साथ पीएमयूवाई योजना के तहत 1.6 करोड़ एलपीजी कनेक्शन के अतिरिक्त आवंटन का लक्ष्य रखा गया। 'उज्ज्वला 2.0' के तहत कनेक्शन की लक्ष्य संख्या दिसंबर 2022 के दौरान हासिल की गई, इस प्रकार योजना के तहत कुल कनेक्शन 9.6 करोड़ हो गए। इसके अलावा, भारत सरकार ने पीएमयूवाई योजना के तहत अतिरिक्त 75 लाख कनेक्शन जारी करने की मंजूरी दी है, जिससे योजना के तहत कुल लक्ष्य अब 10.35 करोड़ हो गया है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, इस वर्ष 1 मार्च तक पूरे भारत में 10.33 करोड़ पीएमयूवाई कनेक्शन मौजूद हैं। इसके अलावा, 1 अप्रैल 2022 तक जारी किए गए 8.99 करोड़ कनेक्शनों में से 8.34 करोड़ लाभार्थियों ने अप्रैल 2022 और मार्च 2024 के बीच पिछले दो वित्त वर्ष के दौरान कम से कम एक रिफिल का लाभ उठाया है।

बड़ा बाजार अग्निकांड: होटल में रखा गया था ज्वलनशील पदार्थ: ममता बनर्जी

एजेंसी

कलकाता । कोलकाता के बड़ा बाजार स्थित मछुआ फलपट्टी इलाके में एक होटल में लगी भीषण आग में 14 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। घटना के बाद मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इसे बेहद दुखद बताते हुए शोक व्यक्त किया है। उन्होंने मृतकों के परिजनों को दो-दो लाख तथा घायलों को 50 हजार रुपये की मुआवज़े की भी घोषणा की । उन्होंने कहा कि जिस होटल में आग लगी, वहां बड़ी मात्रा में ज्वलनशील पदार्थ जमा था, जिससे आग तेजी से फैली। मुख्यमंत्री इन दिनों अक्षय तृतीया के अवसर पर दीघा में हैं, लेकिन उन्होंने घटना के बाद से ही स्थिति पर लगातार नजर रखी। बुधवार सुबह उन्होंने कहा कि होटल में रखे गए ज्वलनशील पदार्थों के कारण ही यह त्रासदी घटी। मैंने इस पूरे मामले की जांच के आदेश दे दिए हैं। पुलिस और दमकल विभाग की तत्परता से 99 लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला गया, जिसमें स्थानीय लोगों की भी अहम भूमिका रही। उधर तृणमूल सांसद अभिषेक बनर्जी ने भी इस हादसे पर शोक जताया और पीड़ित परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त की। कोलकाता पुलिस आयुक्त मनोज वर्मा ने बताया कि घटना की गहराई से जांच के लिए एक विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया गया है, जिसकी अगुवाई डीसी सेंट्रल कर रहे हैं। 11 सदस्यीय टीम ने जांच शुरू कर दी है। साथ ही बुधवार को फॉरेंसिक टीम भी मौके पर पहुंचकर जांच करेगी। पुलिस इस बात की भी जांच कर रही है कि आग कैसे लगी। किन कारणों से समय रहते लोगों को बाहर नहीं निकाला जा सका और क्या होटल प्रबंधन की ओर से कोई लापरवाही हुई थी।

नवी मुंबई में ड्रग सिंडिकेट का पर्दाफाश, कस्टम अधिकारी समेत 10 गिरफ्तार

मुंबई। नवी मुंबई पुलिस के विशेष जांच दल (एसआईटी) ने बड़े ड्रग सिंडिकेट का पर्दाफाश करते हुए दो पुलिसकर्मियों, एक कस्टम अधिकारी सहित 10 लोगों को गिरफ्तार किया है। इन सभी के पास से 73 लाख रुपये मूल्य की प्रतिबंधित सामग्री और अन्य संपत्ति जब्त की गई है। पुलिस ने विदेश में बसे चिखर भाई का इस सिंडिकेट के पीछे हाथ होने की आशंका जताई है। नवी मुंबई के क्राइम ब्रांच के पुलिस उपायुक्त अमित काले ने बुधवार को बताया कि 14 अप्रैल को एक गुप्त सूचना के आधार पर नेरुल पुलिस स्टेशन की टीम ने आशीष गवरे (22) और अहमद आल्गी(23) को 2.76 लाख रुपये मूल्य की 17.19 ग्राम ड्रग के साथ गिरफ्तार किया था। इन दोनों से पूछताछ के बाद 28 वर्षीय सुजीत बंगेरा की गिरफ्तारी हुई। बंगेरा अमेरिका या थाईलैंड से ड्रग्स मंगवाता था। कस्टम अधिकारी प्रशांत गौर की मदद से इस पार्सल को एयरपोर्ट पर मंजूरी मिल जाती थी। इसलिए बंगेरा की निशानदेही पर पुलिस ने कस्टम अधिकारी प्रशांत गौर को भी गिरफ्तार कर लिया। इन सभी से पूछताछ के बाद पुलिस को पता चला कि 56 वर्षीय कमल चांदवानी विदेश से आए ड्रग पार्सल को रिसीव कर सुजीत बंगेरा को सौंपता था। इसलिए पुलिस ने कमल चांदवानी को भी गिरफ्तार कर लिया।

गंगोत्री के साथ यमुनोत्री धाम के कपाट श्रद्धालुओं के लिए खुले

उत्तरकाशी। अक्षय तृतीया के पावन पर्व पर बुधवार सुबह 10:30 बजे गंगोत्री धाम के कपाट विधि-विधान के साथ श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए गए। इस शुभ अवसर पर उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रथम पूजा अर्चना कर मां गंगा से देश और प्रदेश की सुख-समृद्धि की कामना की।मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखंडवासियों के लिए यह पर्व किसी उत्सव से कम नहीं है। उन्होंने देशभर के श्रद्धालुओं को चारधाम यात्रा में सम्मिलित होने का आमंत्रण देते हुए बताया कि यात्रा को सुगम बनाने के लिए राज्य सरकार की सभी तैयारियां पूर्ण हैं। इस मौके पर तीर्थ पुरोहितों ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ देवी की भोग मूर्ति (चल विग्रह) को गर्भगृह में स्थापित कर विधिपूर्वक पूजा की। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम से धाम में पहली पूजा संपन्न कराई गई। कपाट खुलते ही गंगोत्री धाम हर-हर गंगे के जयकारों से गूंज उठा और मंदिर प्रांगण में फूलों की वर्षा की गई। धाम में उपस्थित तीर्थ यात्रियों और स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने इस अलौकिक दृश्य के साक्षी बने। इस दौरान तीर्थ पुरोहितों ने मुख्यमंत्री धामी के समक्ष झांगला मोटर मार्ग निर्माण की मांग भी रखी। चारधाम यात्रा की शुरुआत पर गंगोत्री के साथ यमुनोत्री धाम के भी कपाट तय मुहूर्त पर खोले गए। सुबह 11:55 पर यमुना माई के कपाट श्रद्धालुओं के लिए खोले गए, जहां देवी यमुना की डोली खरसाली गांव से धाम पहुंची थी। चारधाम यात्रा की परंपरा वामावर्ती क्रम में होती है, जिसमें यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बदरीनाथ शामिल हैं।गंगोत्री मंदिर समिति के अध्यक्ष धर्मानंद सेमवाल, सचिव सुरेश सेमवाल, विधायक सुरेश चौहान, पूर्व विधायक विजय पाल सजवाण, जिलाधिकारी डॉ. मेहरबान सिंह बिष्ट, पुलिस अधीक्षक सरिता डोबाल, अपर जिलाधिकारी पी.एल. शाह, डुंडा के उपजिलाधिकारी देवानंद शर्मा, भटवाड़ी की उपजिलाधिकारी सालनी अग्रवाल, रावल रवीन्द्र सेमवाल व संजीव सेमवाल सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

पहलगाम हमले के बाद केंद्र सरकार का बड़ा फैसला, एनएसए बोर्ड का पुनर्गठन, पूर्व रॉ प्रमुख आलोक जोशी बने अध्यक्ष

आलोक जोशी को देश की सुरक्षा से जुड़े मामलों की गहरी समझ और जानकारी है।

एजेंसी

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले के बाद केंद्र सरकार एक्शन मोड में है। इसी बीच केंद्र सरकार ने बुधवार को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड का पुनर्गठन किया है। पूर्व रॉ प्रमुख आलोक जोशी को इस बोर्ड की कमान सौंपी गई है।

आलोक जोशी को देश की सुरक्षा से जुड़े मामलों की गहरी समझ और जानकारी है। उन्होंने 2012 से 2014 तक रॉ के प्रमुख के रूप में कार्य किया था। इसके बाद 2015 से 2018 तक एनटीआरओ के चेयरमैन के रूप में भी सेवा दी। उन्होंने पाकिस्तान और नेपाल में कई महत्वपूर्ण ऑपरेशन्स को अंजाम देने में अहम भूमिका भी निभाई है। इसके अलावा बोर्ड में 7 सदस्यों को शामिल किया गया है, जिसमें तीन सेना से रिटायर अधिकारी, दो रिटायर आईपीएस अधिकारी और एक भारतीय विदेश सेवा से रिटायर अधिकारी हैं।इसमें वेस्टर्न एयर कमान के पूर्व चीफ एयर मार्शल पीएम सिन्हा, सदर्न आर्मी कमान के पूर्व चीफ लेफ्टिनेंट जनरल एके सिंह और रिटायर रियर एडमिरल मॉन्टी सन्ना

को सदस्य नियुक्त किया गया है। वहीं, भारतीय पुलिस सेवा से रिटायर राजीव रंजन वर्मा और मनमोहन सिंह को भी इस बोर्ड में शामिल किया गया है। इसके साथ ही विदेश सेवा के पूर्व अधिकारी बी. वेंकटेश वर्मा को भी इसका सदस्य बनाया गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में बुधवार को उनके आवास पर सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति (सीसीएस) की बैठक हुई। सूत्रों के अनुसार, दोपहर 3 बजे एक प्रेस ब्रीफिंग होगी, जिसमें सीसीएस की बैठक में लिए गए बड़े फैसलों की घोषणा की संभावना है।

यह महत्वपूर्ण बैठक 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद सुरक्षा स्थिति और भविष्य की कार्रवाई पर चर्चा के लिए बुलाई गई थी। राष्ट्रीय सुरक्षा पर निर्णय लेने वाली शीर्ष समिति की बैठक प्रधानमंत्री के आवास पर दूसरी बार बुलाई गई थी। सीसीएस की बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह, विदेश मंत्री एस. जयशंकर और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण शामिल थे। इस बैठक के बाद राजनीतिक मामलों की मंत्रिमंडल समिति (सीसीपीए) और आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडल समिति (सीसीईए) की बैठकें हुईं। सरकार दोपहर 3 बजे मीडिया से मुलाकात करेगी।

पाकिस्तानी ने की नौशेरा, सुंदरबनी, बारामूला और अखनूर में फायरिंग, सेना ने दिया त्वरित जवाब

पाकिस्तानी सेना द्वारा यह फायरिंग बिना किसी उकसावे के की गई है।

एजेंसी

नई दिल्ली। पाकिस्तानी सेना नियंत्रण रेखा पर बार-बार संघर्ष विराम का उल्लंघन कर रही है। 29-30 अप्रैल की रात को भी पाकिस्तानी सेना ने एक बार फिर संघर्ष विराम का उल्लंघन करते हुए नियंत्रण रेखा के उस पार से भारतीय इलाकों में गोलीबारी की है। भारतीय सेना के मुताबिक 29-30 अप्रैल की रात को पाकिस्तानी सेना की चौकियों ने केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के नौशेरा, सुंदरबनी और अखनूर सेक्टरों के सामने नियंत्रण रेखा के पार से फायरिंग की। पाकिस्तानी सेना द्वारा यह फायरिंग बिना किसी उकसावे के की गई है। फायरिंग के लिए छोटे हथियारों का इस्तेमाल किया गया। भारतीय सेना के जवानों ने बिना देरी किए तेजी से इस फायरिंग का जवाब दिया। गौरतलब है कि पाकिस्तान की सैन्य चौकियों से पिछले 6 दिनों से

फायरिंग की जा रही है। नौशेरा, सुंदरबनी और अखनूर सेक्टरों के अलावा पाकिस्तानी सेना ने कई अन्य स्थानों पर भी गोलीबारी की है। सेना के अनुसार पाकिस्तानी सेना द्वारा 29-30 अप्रैल की रात को ही नियंत्रण रेखा के पार से बारामूला और कुपवाड़ा जिलों में भी गोलीबारी की गई। पाकिस्तानी सैन्य चौकियों द्वारा परगवाल सेक्टर में भी अंतरराष्ट्रीय सीमा के पार बिना उकसावे के छोटे हथियारों से गोलीबारी की गई है। भारतीय सेना के जवानों ने इन सभी स्थानों पर पाकिस्तान को उचित व करारा जवाब दिया है। सेना के मुताबिक 28-29 अप्रैल की रात को भी पाकिस्तानी सेना ने कुपवाड़ा और बारामूला जिलों के साथ-साथ अखनूर सेक्टर में नियंत्रण रेखा के पार से बिना उकसावे के गोलीबारी की थी। भारतीय सेना ने इस उकसावे का तुरंत और प्रभावी जवाब दिया था। वहीं इससे पहले 27-28 अप्रैल की रात को भी पाकिस्तान की सेना ने नियंत्रण रेखा के पार से गोलाबारी की थी।

सीआईएससीई के 10वीं और 12वीं के रिजल्ट जारी, लड़कियों ने फिर मारी बाजी

एजेंसी

नई दिल्ली। काउंसिल फॉर द इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेशन (सीआईएससीई) ने आईसीएसई और आईएससी का रिजल्ट बुधवार को घोषित कर दिया। इस बार का रिजल्ट 99 प्रतिशत से अधिक रहा है। सीआईएससीई ने छात्र-छात्राओं को सफलता पर बधाई दी है। आईसीएसई (कक्षा 10वीं) का रिजल्ट 99.09 फीसदी रहा, जबकि आईएससी (कक्षा 12वीं) का रिजल्ट 99.02 फीसदी रहा है। इस साल के रिजल्ट की खास बात यह रही है कि दोनों ही परीक्षाओं में लड़कियों ने लड़कों से बेहतर प्रदर्शन किया है। आईसीएसई (कक्षा 10वीं) में लड़कियों का पास प्रतिशत 99.37 रहा तो वहीं आईएससी (कक्षा 12वीं) में यह आंकड़ा 99.45 रहा है। सीआईएससीई ने बताया कि इस साल आईसीएसई कक्षा 10 की परीक्षा 18 फरवरी से 27 मार्च तक और आईएससी कक्षा 12 की परीक्षा 13 फरवरी से 5 अप्रैल तक

आयोजित की गई थी। इसके परिणाम आधिकारिक वेबसाइट 'सीआईएससीई डॉट ओआरजी' पर जाकर देखा जा सकता है। सीआईएससीई के मुख्य कार्यकारी और सचिव डॉ. जोसेफ इमैनुएल ने आईएएनएस से बातचीत में बताया कि काउंसिल फॉर द इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेशन ने 10वीं और 12वीं परीक्षाओं के परिणाम बुधवार सुबह 11 बजे घोषित किए। आईसीएसई (कक्षा 10वीं) का रिजल्ट 99.09 फीसदी रहा, जबकि आईएससी (कक्षा 12वीं) का रिजल्ट 99.02 फीसदी रहा है। उन्होंने कहा, 'इस बार का रिजल्ट काफी अच्छा रहा है। कक्षा 10वीं और 12वीं के नतीजों ने एक बार फिर अपनी उत्कृष्टता की परंपरा को कायम रखा है। इन परिणामों से पता चलता है कि टीचर और पैरेंट्स का बच्चों की सफलता में काफी योगदान रहा है।' उन्होंने आगे कहा, 'इस साल सीआईएससीई ने कई तकनीकी और नीतिगत बदलाव किए, जिससे परीक्षा प्रक्रिया और अधिक पारदर्शी और विश्वसनीय बनी। मैं सभी बच्चों को उनकी सफलता के लिए बधाई देता हूं।

पहलगाम हमले पर घिनौनी राजनीति न करे विपक्ष , देशहित में ठीक नहीं : मायावती

एजेंसी

लखनऊ। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले का सरकार से मुहंतोड़ जवाब देने के लिए जगह-जगह मांग हो रही है। इस बीच राजनीतिक दलों में भी हलचल तेज हो गई है। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने सभी दलों से अपील की है कि इस वक्त सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना जरूरी है। इस पर कोई भी घिनौनी राजनीति नहीं होनी चाहिए। पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने एक्स पर लिखा, 'पहलगाम आतंकी हमले को लेकर सभी पार्टियों को एकजुट होकर सरकार का साथ देना चाहिए। ना कि इसकी आड़ में पोस्टरबाजी व बयानबाजी आदि के जरिए घिनौनी राजनीति की जानी चाहिए। इससे लोगों में भ्रम पैदा हो रहा है, जो देशहित में ठीक नहीं है।' मायावती ने सपा और कांग्रेस को चेतावनी दी है कि बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर का भी अपमान ना करें। वरना बसपा उनके विरुद्ध सड़कों पर भी उतर सकती है।

विपक्ष के संसद के विशेष सत्र की मांग पर सीसीपीए लेगा फैसला : मेघवाल

एजेंसी

नई दिल्ली। पहलगाम आतंकी हमले के बाद विपक्ष लगातार सरकार से संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग कर रहा है। इस पर केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने आज कहा कि आतंकी हमले के बाद संसद का विशेष सत्र बुलाने के मामले में ससंदीय मामलों की केंद्रीय समिति निर्णय करेगी। बुधवार को प्रेसवार्ता में केंद्रीय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि संसदीय मामलों की कैबिनेट समिति पहलगाम आतंकी हमले को लेकर संसद के विशेष सत्र के लिए कांग्रेस सहित कई विपक्षी दलों की मांग पर फैसला लेगी। मेघवाल ने संवाददाताओं से कहा कि सत्र बुलाने पर सीसीपीए का जो निर्णय होगा, उस बारे में सूचित किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि राज्यसभा में नेता विपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी सहित कई विपक्षी नेताओं ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर 22 अप्रैल को हुए आतंकवादी हमले के बाद सामूहिक संकल्प प्रस्तुत करने के लिए संसद

का सत्र बुलाने की मांग की है। इस हमले में 26 लोग मारे गए थे, जिनमें से अधिकतर पर्यटक थे।

भारतीय सेना के साथ खड़ा है पूरा देश : केसी त्यागी

एजेंसी

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को निर्दोष पर्यटकों पर गोलियां बरसाने वाले आतंकियों पर सख्त कार्रवाई करने के लिए भारतीय सेना को पीएम मोदी की ओर से दी गई खुली छूट पर जेडीयू नेता केसी त्यागी ने कहा कि पूरा देश भारतीय सेना के साथ खड़ा है। न्यूज एजेंसी से बातचीत के दौरान केसी त्यागी ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में जिस तरह से आतंकवादियों ने पहलगाम में पर्यटकों को निशाना बनाया। पूरा देश गुस्से में है। केंद्र सरकार से सभी कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। पीएम मोदी ने पूरे मामले पर नजर बनाई हुई है। 29 अप्रैल पहलगाम घटना को लेकर पीएम मोदी की अध्यक्षता में एक हाईलेवल बैठक हुई। इस बैठक में पीएम मोदी ने तीनों सेनाओं को खुले तौर पर छूट दी है कि वह तय करे कि उन्हें कब और कैसे दुश्मनों पर प्रहार करना है। पीएम मोदी के साथ पूरा देश है। यूपी की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के एक ट्वीट पर जेडीयू नेता केसी त्यागी ने कहा कि ऑल पार्टी मीटिंग में सभी दलों के नेता ने एकजुटता का परिचय दिया था।

मोदी ने कोलकाता में आग लगने से लोगों की मौत पर जताया शोक, अनुग्रह राशि की घोषणा की

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोलकात के एक होटल में आग लगने और लोगों की मौत पर दुख व्यक्त किया है तथा मृतकों के परिजनों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (पीएमएनआरएफ) को दो-दो लाख रुपये तथा जख्मी लोगों को 50,000-50,000 रुपये की अनुग्रह राशि देने की घोषणा की है। श्री मोदी ने सोशल मीडिया मंच

एक्स पर कहा, कोलकाता में आग लगने की दुर्घटना में लोगों की मौत से दुखी हूं। अपने प्रियजनों को खोने वालों के प्रति संवेदना। जख्मी लोगों के जल्द स्वस्थ होने की कामना करता हूं। पीएमएनआरएफ से प्रत्येक मृतक के परिजनों को 02-02 लाख रुपये की अनुग्रह राशि दी जाएगी। जख्मी लोगों को 50,000-50,000 रुपये दिए जाएंगे। गौरतब है कि मध्य कोलकाता के बड़ाबाजार में फलपट्टी मछुआ के पास स्थित ऋतुराज होटल में आग लगने से 14 लोगों की मौत हो गयी तथा कई अन्य जख्मी हुए हैं।

पहलगाम आतंकवादी हमले पर गुटेरेस ने की जयशंकर और शरीफ से बात

एजेंसी

नई दिल्ली। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने भारत के विदेश मंत्री सुब्रह्मण्यम जयशंकर और पाकिस्तान के प्रधानमंत्री मुहम्मद शहबाज शरीफ से पहलगाम आतंकवादी हमले को लेकर अलग-अलग बात की है और दोनों देशों के बीच तनाव कम करने के लिए सहयोग का प्रस्ताव किया है। महासचिव कार्यालय ने बुधवार को यहां बताया कि श्री गुटेरेस ने जम्मू-कश्मीर में 22 अप्रैल को हुए

आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की। उन्होंने इन हमलों के लिए कानूनी तरीकों से न्याय और जवाबदेही तय करने के महत्व पर जोर दिया है। महासचिव ने भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव पर भी गहरी चिंता व्यक्त की और ऐसे टकराव से बचने की आवश्यकता पर जोर दिया, जिसके परिणाम दुखद हो सकते हैं। उन्होंने तनाव कम करने के प्रयासों का समर्थन करने के लिए अपना सहयोग देने की पेशकश की। संयुक्त राष्ट्र महासचिव की यह बातचीत कल रात हुई।

संक्षिप्त समाचार

मांडर, किसान समृद्धि योजना के तहत 23 किसानों के बीच चलंत सोलर सिंचाई पंप का वितरण

दिव्य दिनकर संवाददाता

मांडर- प्रखंड मुख्यालय में बुधवार को प्रमुख फिलिप सहाय एक्का ने किसान समृद्धि योजना के तहत 23 किसानों के बीच चलंत सोलर सिंचाई पंप का वितरण किया. इस दौरान उन्होंने कहा कि 90 प्रतिशत अनुदान पर किसान समृद्धि योजना के तहत मिलने वाली चलंत सोलर सिंचाई पंप सेट से किसानों को काफी लाभ होगा. किसान बिना बिजली के भी इस चलंत सोलर सिंचाई पंप से कहीं पर भी अपने खेत में फसल की सिंचाई कर सकेंगे. प्रखंड प्रमुख ने इस योजना से चलंत सोलर पंप लेने की जानकारी भी उपलब्ध करायी. मौके पर उप प्रमुख अमानत अंसारी, अर्जुन महतो, बीटीएम गोपाल महतो, नसीम अंसारी सहित लाभुक किसान मंगरा उरांव, दीपक सिंह, सधनी देवी, दानवा उरांव, असलम अंसारी आदि उपस्थित थे!

वनांचल महाविद्यालय,टंडवा में वन नेशन वन इलेक्शन विषय पर हुई कार्यशाला आयोजन

दिव्य दिनकरः संवाददाता

टंडवाःचतरा वनांचल महाविद्यालय टंडवा में वन नेशन वन इलेक्शन विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि सिमरिया विधानसभा के विधायक कुमार उज्जवल उपस्थित हुए।इस कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ संजय नारायण दास ने एवं संचालन भारतीय जनता युवा मोर्चा चतरा के सुमन सौरभ ने की,कार्यक्रम में ईश्वर दयाल पांडेय, प्रोफेसर रामदेव पासवान राष्ट्रीय सेवा योजना के डॉक्टर प्रमोद कुमार पाठक,प्रोफेसर नवल किशोर प्रसाद आदि ने अपने विचार रखे। एन एस एस के छात्र-छात्राओं में बिजली महतो, रूपा कुमारी, स्वाति कुमारी, ने भी वन नेशन वन इलेक्शन के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम में इस विषय पर प्रकाश डालते हुए विधायक कुमार उज्ज्वल ने वन नेशन वन इलेक्शन से देश को होने वाले फायदे के विषय में बताया।सुमन सौरव ने भी इस विषय पर अपने सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। महाविद्यालय के शासी निकाय के सचिव अक्षयवट पांडेय ने भी अपने संबोधन में विस्तार से एक राष्ट्र एक चुनाव पर प्रकाश डाला। शताधिक छात्र- छात्राओं के साथ-साथ क्षेत्रीय नेताओं की आदरपूर्ण उपस्थिति रही। मौके पर प्रमोद सिंह,रामचंद्र साहू,डॉ नवल कुमार,प्रोफेसर प्रतिमा शरण,प्रोफेसर मनोहर चौबे, प्रोफेसर मनोज पांडेय,डॉ नवल कुमार,प्रोफेसर अंसार उल हक,सहायक छोटन राम,सहायक युगेश्वर रजक, बालकृष्ण कुमार, राजेंद्र राणा मौजूद रहे।

अनियमितताओं के आलोक में 11 क्रशर यूनिट को अगले आदेश तक किया गया सील

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ःपाकुड़ बुधवार को अनुमंडल पदाधिकारी, जिला खनन पदाधिकारी, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, क्षेत्रीय पदाधिकारी, प्रदूषण नियंत्रण पर्षद, दुमका के संयुक्त जाँच दल के नेतृत्व में पाकुड़ अंचल अंतर्गत विभिन्न मौजा में स्थापित क्रशर यूनिट का औचक निरीक्षण किया गया। औचक निरीक्षण के क्रम में पायी गयी अनियमितताओं के आलोक मे 11 क्रशर यूनिट को तत्काल प्रभाव से अगले आदेश तक सील कर दिया गया।

सील किए क्रशर ससंचालकों का नाम

एच अली स्टोन वर्क्स, मोरसलिम शेख, अकबर स्टोन वर्क्स, मेसर्स कयसुधीन शेख, मेसर्स टू स्टार स्टोन वर्क्स, यार मोहम्मद, मेसर्स निपुल शेख, मेसर्स नूर स्टोन वर्क्स, मेसर्स न्यू सूर्या स्टोन वर्क्स एवं मेसर्स अजहर इस्लाम के क्रशर को अगले आदेश तक सील कर दिया गया है। साथ ही बिजली का कनेक्शन भी काट दिया गया है।

तीन सेविका तथा एक सहायिका के सेवानिवृत्त पर विदाई समारोह का हुआ आयोजन

रिपोर्ट - अविनाश मंडल

पाकुड़ःहिरणपुर घाघरजानी स्थित हिरणपुर प्रखंड सभागार में आंगनबाड़ी सेविकाओं की बैठक हुई जिसमें तीन सेविका तथा एक सहायिका का सेवानिवृत्त विदाई प्रखंड विकास पदाधिकारी सह सीडीपीओ टुडू दीलिप के द्वारा बुके तथा शॉल भेंट कर की गई। सेवानिवृत्त सेविका में सालोमी हेम्ब्रम, पोखरिया, बलमदिना हेम्ब्रम, बड़ा बलरामपुर, सरला मराण्डी, गम्हरिया एवं एक सहायिका कौशल्या देवी, सीतपहाड़ी ने अपने कार्यकाल पर प्रकाश डालते हुए बतायी की 1992 में योगदान के समय 225 रूपए प्रतिमाह मानदेय मिलता था। 1987 से ये कार्य प्रारंभ किए जिसमें 5 वर्ष अवैतनिक कार्य किया। महिला पर्यवेक्षिका टुसू मुनी मुर्मू एवं बबली शर्मा ने बारी-बारी से इनके सेवानिवृत्त पर इनसे जुड़े बातों को सभी के समक्ष रखे। बीडीओ सह सीडीपीओ टुडू ने सभी सेवानिवृत्त कर्मियों को बेहतर स्वास्थ्य एवं सेवा में बहुमूल्य समय एवं कार्यालय में इनके योगदान के लिए शुभकामनाएं दी।

विद्या की देवी मां सरस्वती जी के नवनिर्मित मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह धूमधाम से संपन्न हुई

दिव्य दिनकर संवाददाता

रांची - विद्या की देवी मां सरस्वती जी का नव निर्मित मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह धूमधाम से संपन्न हुई।इस समारोह की अध्यक्षता गुरुकृपा पब्लिक स्कूल (जतरामैदान,दयालनगर,पिस्कामोड़) के निदेशक रत्नेश सिंह सोलंकी ने किया।प्रसिद्ध पुजारी रवि शास्त्री जी ने मूर्ति का अन्नाधिवास,पुष्पाधिवास,महा आरती कर सरस्वती माता जी के मूर्ति का प्राण प्रतिष्ठा कराया उसके बाद महाभंडारा का आयोजन हुआ। दो दिवसीय कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के बच्चे रंगारंग धार्मिक एवं स-ंस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस समारोह में अतिथि के रूप रांची के

सांसद सह केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, राज्यसभा सांसद महुआ मांझी, विधायक रांची सी.पी.सिंह, हटिया विधायक नवीन जायसवाल, अल्पसंख्यक आयोग(झारखंड स्टेट मैन्युरिटीज कमीशन)के उपाध्यक्ष (राज्य मंत्री दर्जा). ज्योति सिंह मथारू, विश्वकर्मा युवा सुरक्षा मंच के राष्ट्रीय मुख्य संयोजक संतोष कुमार श्रेयांश, नाक,कान,गला रोग विशेषज्ञ डॉक्टर अभिषेक कुमार रामधीन, समाजसेवी राधेश्याम सिंह,अंकशास्त्री अभिषेक पांडे, वाणिज्यकर पदाधिकारी रांची नवीन प्रसाद साहू, सेंट जेवियर्स कॉलेज रांची के व्याख्याता ईभाना चक्रवर्ती, भारतीय लोक कल्याण संस्थान के निदेशक चंदेश्वर सिंह उर्फ नंदू जी,झारखंड उच्च न्यायालय के वरीय अधिवक्ता सोनाली भट्टाचार्य,छात्र क्लब बु-द्धिजीवी मंच यूनिट,(छात्र क्लब ग्रुप) के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव किशोर शर्मा, झारखंड रत्न डॉक्टर आर.के. हाजरा(वर्ल्ड क्लास एक्यूपंक्चर स्पाईन स्पेशलिस्ट) उपस्थित थे।इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्यरूप से विद्यालय परिवार के प्रबंधक नीतू सिंह,स्वप्निल सिंह सरस,रानी किंगर,कोमल जसूजा,अनिता राय,पायल चक्रवर्ती,तराना प्रिया,निशा शहदेव,विक्की घोष,पूनम प्रसाद,अंकिता डे सरकार,सुजाता तिवारी,मधु सिंह,रामप्रवेश दुबे,रिंकी पांडे, प्रीति कुमारी,मौसमी घोष,सोनू गोप,अर्जुन गोप,दीपक कुमार,अनीता टोप्पो,पम्मी ठाकुर,उषा वर्मा,लाली उरांव,निशा उरांव,नंदन कुमार, बिरज कुमार,काव्या कुमारी,आदि।

दयानंद आर्य विद्या पब्लिक स्कूल मांडर मे एक राष्ट्र एक चुनाव से संबंधित एक सभा का आयोजन किया गया

दिव्य दिनकर संवाददाता

मांडर - आज दिन बुधवार को दयानंद आर्य विद्या पब्लिक स्कूल मांडर के प्रांगण में एक राष्ट्र एक चुनाव के विचार से संबंधित एक भव्य सभा का आयोजन हमारे आदरणीय निदेशक डॉ राजेश दत्त द्वारा किया गया। कार्यक्रम का आरंभ ज्योति प्रज्वलन की पारंपरिक प्रथा से किया गया तथा स्वागत गान से सभी अतिथि गणों का स्वागत किया गया।इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में मांडर की पूर्व विधायिका श्रीमती गंगोत्री कुजूर ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा एक राष्ट्र एक चुनाव से संबंधित अपने विचारों को हमारे समक्ष रखा और सभी का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में बीजेपी झा-

रखंड प्रदेश की प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती आरती कुजूर जी, भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती आरती सिंह जी, भाजपा महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष श्रीमती नेहा सिंह जी, भाजपा रांची जिला ग्रामीण महामंत्री श्री शशि-ाकांत सिंह जी, भाजपा महिला मोर्चा की जिला की कर्मठ कार्यकर्ता श्रीमती प्रज्ञा भारती जी, श्रीमती अर्चना दत्ता जी तथा श्री राम बालक ठाकुर जी ने अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा अपने विचारों को सभी के समक्ष प्रस्तुत कर सभी का मार्गदर्शन किया तथा एक राष्ट्र एक चुनाव से होने वाले लाभों से सभी को अवगत कराया। मुख्य वक्ता के रूप में दयानंद आर्य विद्या पब्लिक स्कूल के निदेशक डॉक्टर राजेश दत्त ने इस संबंध में अपना दृष्टिकोण रखते हुए सभी का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन सही रूप से करने में श्रीमती संगीता सिंह जी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा कार्यक्रम का संचालन रेहाना मैम के द्वारा सुचारू रूप से किया गया। अंत में कार्यक्रम में उपस्थित अभिभावक गण तथा अन्य अतिथियों ने एक राष्ट्र एक चुनाव के पक्ष में अपनी सहमति दर्ज कराई और श्रीमती प्रज्ञा भारती जी तथा डॉक्टर राजेश दत्त जी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

डीपीएस विद्यालय में प्रकृति की गोद में हरा रंग दिवस का उल्लासपूर्वक हुआ आयोजन

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ःपाकुड़ को दिल्ली पब्लिक स्कूल की बाल वाटिका एवम् प्री-प्राइमरी विभाग में बुधवार को हरा रंग दिवस का उल्लासपूर्वक आयोजन किया गया। इस विशेष दिन का उद्देश्य बच्चों को रंगों के महत्व से परिचित कराना और प्रकृति से जोड़ना था। छात्रों ने इस दौरान विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों, फूलों और पक्षियों को देखा। इस अनुभव ने न केवल उनकी जिज्ञासा को बढ़ाया बल्कि उन्हें प्रकृति के प्रति संवेदनशील भी बनाया। छोटे बच्चों ने हरे रंग की पोशाक पहनकर विद्यालय प्रांगण को हरियाली से भर दिया। कक्षा को भी हरे रंग के

गुब्बारों, पत्तियों, पौधों और अन्य सजावटों से सजाया गया। शिक्षिक-ाओं ने बच्चों को हरे रंग की वस्तुओं की पहचान कराई और उनसे जुड़ी जानकारी साझा की। बच्चों ने रंगीन गतिविधियों में भाग लिया, जैसे हरे रंग की चीजें पहचानना, पत्तियों की छपाई, ड्राइंग और क्राफ्ट वर्क। बच्चों की प्र-कृति का सानिध्य प्रदान करने और पेड़ पौधों का महत्व समझाने के लिए विद्यालय में मौजूद पुष्प वाटिका और बगीचे की भी सैर कराई गई।बच्चों ने छोटे पौधे लगाकर हरा है तो जीवन है का संदेश भी दिया। विद्यालय प्रधानाचार्य जे के शर्मा ने जानकारी दी कि विद्यालय में संचालित इको क्लब के तत्वाधान में समय-समय पर प्र-कृति से संबंधित कार्यक्रम होते रहते हैं।इस प्रकार के आयोजन बच्चों में रंगों की समझ के साथ-साथ प्रकृति के प्रति प्रेम और जागरूकता बढ़ाते हैं। इस अवसर पर विद्यालय के निदेशक अरुणेंद्र कुमार ने बताया कि यह दिन बच्चों के लिए ज्ञानवर्धक और आनंददायक अनुभव लेकर आया.

उच्च विद्यालय बेलवरना में बच्चों को मिला बैग, खुश हुए बच्चे

देवगढ़ से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

सारठ/ प्रखंड अंतर्गत उत्क्रमित उच्च विद्यालय बेलवरना में बच्चों के बीच झारखंड सरकार द्वारा उपलब्ध कराए गए निःशुल्क बैग का वितरण किया गया। मुखिया प्रतिनिधि गौतम मंडल के द्वारा बच्चों के बीच बैग वितरण किया गया। श्री मंडल ने कहा कि सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को सरकार द्वारा बैग के अलावा निःशुल्क पुस्तकें , कापी,कलम,पेंसिल, यूनिफार्म दिया जाता है। सभी बच्चों को प्रतिदिन स्कूल आने का सुझाव दिया गया। बैग पाकर बच्चे काफी खुश दिखाई दे रहे थे।पहली से आठवीं कक्षा तक के 200 से अधिक बच्चों को बैग दिया गया। मौके पर प्रभारी प्रधानाध्यापक दिलीप कुमार राय, सहायक अध्यापक विश्वनाथ पंडित, ललन प्रसाद साह, राजेश्वर प्रसाद सिंह, अनिता सहाय, अनुराग सिन्हा, अध्यक्ष पिंकू कुमार यादव मौजूद थे।

श्री श्री फुलवंती माता की वार्षिक नगर पूजा धूमधाम से मनाया गया

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवधर । स्थानीय श्यामगंज रोड अवस्थित फुलवन्ती मंदिर में श्री श्री फुलवन्ती पूजा समिति द्वारा नगर कल्याण, एवं सुख-शांति हेतू श्री श्री फुलवन्ती माता की वार्षिक नगर पूजा धूमधाम, हर्षोल्लास व पूरे विधि-विधान के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पूरे मन्दिर परिसर एवं आस-पास के क्षेत्रों को फूलों एवं रंग-बिरंगें लाईटोसे भव्य रूप से सजाया गया। स्थानीय, कबूतर धर्मशाला परिसर में नगर कुमारी भोजन कराया गया। नगरवासी एवं भक्तों की भारी भीड़ देखी गयी। मौके पर हिन्दू विकास मंच (समग्र-भारत) के जिला अध्यक्ष प्रभाष गुप्ता ने मातारानी से भक्तों व नगरवासी के सुख-समृद्धि, शान्ति व कल्याण की कामना की।

वन नेशन वन इलेक्शन पर भाजपा ने एकदिवसीय कार्यशाला का किया आयोजन

दिव्य दिनकरःसंवाददाता

टंडवाःचतरा। भारतीय जनता युवा मोर्चा चतरा जिला के द्वारा टंडवा के वनांचल कॉलेज में वन नेशन वन इलेक्शन पर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें वनांचल कॉलेज की एनएसएस के स्वयं सेवी सक्रिय छात्र छात्राओं ने भारी संख्या में भाग लिया।सेमिनार का मुख्य मकसद युवाओं के बीच में वन नेशन वन इलेक्शन के बारे में जन जागरूकता फैलाना और भारत सरकार से आग्रह करना की देश में एक टैक्स की तर्ज पर एक चुनाव हो। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष सुमन सौरभ एवं कार्यक्रम का संचालन विकाश मालाकार ने किया तथा सुमन सौरभ ने विषय प्रवेश कराते हुआ उन्होंने कहा कि स्कूल और कॉलेज सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं चुनावी प्रक्रिया से एक राष्ट्र एक चुनाव होने से शिक्षक संस्थानों को लाभ होगा।करम में मुख्य अतिथि के रुप में सिमरिया विधायक उज्जवल दास एवं कॉलेज के सचिव अक्षयवट पांडेय उपस्थित थे। सिमरिया विधायक ने संबोधन करते हुए कहा क्या चार संगीता होने के कारण काफी समय सुनाई प्रक्रिया में बर्बाद हो जाता है जिससे विकास कार्य बाधित होता है एक समय में एक बार चुनाव होने से समय की भी बचत होगी ज्यादा से ज्यादा विकास हो पाएंगे। भाजपा वरिष्ठ नेता अक्षयवट पांडेय ने कहा कि चुनाव के समय में गाड़ियों का परिचालन बंद हो जाता है एक समय में चुनाव होने से लोगों के आने-जाने की सुविधा रहेगी। छात्रों के बीच बिजली महतो,आदित्य कुमार एवं रुपा कुमारी ने अपने विचार रखा।

स्टॉक में मुख्य रुप से वनांचल कॉलेज के प्राचार्य सत्यनारायण दास, रामप्र-वेश राम,प्रो अंसार उल हक, कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ प्रमोद कुमार,ईश्वर पांडेय, प्रमोद सिंह,रामचंद्र गुप्ता, रवींद्र गुप्ता,सुखी गंझू, रामलाल महतो,संजय भोक्ता,आदर्श, रंजीत रजक व सैंकड़ों लोग मौजूद थे।

आयुष जांच शिविर में 193 लोगों का स्वास्थ्य जांच किया गया

रिपोर्ट - अविनाश मंडल

पाकुड़ःअमड़ापाड़ा प्रखंड के गोरपाड़ा आंगनबाड़ी केंद्र, पाकुड़ प्र-खंड के चंद्रपाड़ा, लिट्टीपाड़ा प्रखंड के रोडगों, पाकुड़िया प्रखंड के चौकीसाल एवं फूलझिंझारी में आयुष विभाग की ओर से बुधवार को आयुष कैंप लगाकर कुल 193 लोगों का स्वास्थ्य जांच कर आवश्यक दवा दिया गया। डॉ० मिथलेश सिंह, डॉ०अमरेश कुमार, डॉ अबूतालिब शेख, डॉ प्रेम प्रकाश, डॉ वीरेंद्र कुमार विश्वकर्मा एवं डॉ० सौरभ विश्वास ने बताया की इस कैंप में आज रक्तचाप, मधुमेह, जॉइंट पेन, गठिया, बच्चों से संबंधित आदि रोगों का जांच निःशुल्क किया गया। साथ ही सभी को मुफ्त दवा भी दी गई। वहीं शिविर में आने वाले मरीजों को शुगर, ब्लड प्रेशर का भी जांच की गई। हेल्थ कैंप के साथ साथ पोषण पखवाड़ा के अंतर्गत लोगों को पौष्टिक भोजन /संतुलित आहार /व्यायाम/ के बारे में भी बताया गया।

सरकारी चावल की कालाबाजारी से लेकर दहेज उत्पीड़न तक के मामले में हुई गिरफ्तारी

मुफस्सिल थाना पुलिस कई मामलों में अपराधियों को किया गिरफ्तार

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ःपाकुड़ मुफस्सिल थाना पुलिस ने हाल के दिनों में अपराध नियंत्रण के तहत करवाई करते हुए चार अलग-अलग संगीन मामलों में कुल आठ आरोपियों को गिरफ्तार किया है। ये गिरफ्तारियाँ हत्या की साजिश, जानलेवा हमला, सरकारी अनाज की कालाबाजारी और दहेज प्रताड़ना जैसे गंभीर अपराधों से जुड़ी हुई हैं। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर थाना प्रभारी ने लगातार छापेमारी अभियान चलाया ताकि फरार आरोपियों को भी शीघ्र पकड़ा जा सके। हत्या की साजिश और गंभीर धाराओं में तीन गिरफ्तार थाना कांड संख्या 23/2025 में वादी अली अहमद के आवेदन पर ग्राम ईलामी निवासी कौसारूल हक, सदीकुल आलम और साबीरूल शेख को गिरफ्तार किया गया है। इनके खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धारा 316(2), 318(4), 126(2), 115(2), 118(1), 117(2), 109(1), 74, 352, 351(2) व 3(5) के तहत मामला दर्ज है। पुलिस ने बताया कि अन्य नामजद अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी जारी है। कोर्ट से लौटते समय वादी पर जानलेवा हमला, दो

आरोपी गिरफ्तार थाना कांड संख्या 244/2024 के तहत वादी उसमान अली की शिकायत पर बानी इसराईल और नूर आलम, दोनों निवासी सितेशनगर, को गिरफ्तार किया गया है। दोनों पर आरोप है कि कोर्ट में गवाही देकर लौटते समय उन्होंने वादी पर चाकू से जानलेवा हमला किया। इस मामले में धारा 126(2), 115, 118(1), 109, 352 और 3(5) के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है। सरकारी चावल की कालाबाजारी का भंडाफोड़, एक गिरफ्तार, भारी मात्रा में चावल जब्त कांड संख्या 107/2025 के तहत प्रखण्ड आपूर्ति पदाधिकारी के प्रतिवेदन पर पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिला निवासी हैदर अली को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी पर आरोप है कि वह सरकारी चावल की कालाबाजारी कर उसे बंगाल ले जा रहा था। पुलिस ने मौके पर एक टोटो में लदे छह बोरे में करीब चार क्विंटल चावल बरामद किया है। इस मामले में नामजद डीलर मनीरूल हक की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है। दहेज उत्पीड़न और घरेलू हिंसा में पांच आरोपी गिरफ्तार कांड संख्या 87/2025 में एक महिला वादी की शिकायत पर हाजिकुल शेख, जहाँनारा बीवी, अब्दुल शेख, समशेदा बीवी और साफिकुल शेख,सभी' निवासी चंद्रापाड़ा को गिरफ्तार किया गया है। इस मामले में भारतीय दंड संहिता की धारा 498अ, 494, 341, 323, 313, 504, 506, 34, दहेज प्रतिषेध अधिनियम की धारा 3/4 और मुस्लिम महिला विवाह संरक्षण अधिनियम-2019 की धारा 3/4 के तहत मामला दर्ज किया गया है। पाकुड़ पुलिस ने स्पष्ट किया है कि सभी गिरफ्तार आरोपियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जा रही है और साथ ही फरार अभियुक्तों की शीघ्र गिरफ्तारी के लिए दबिश दी जा रही है।

सरकारी अनारक्षित स्वास्थ्य बीमा योजना को लेकर हुई उच्चस्तरीय बैठक, सेहिस पोर्टल प्रशिक्षण को मिली प्राथमिकता

साहिबगंजः जिले में सरकारी अनारक्षित स्वास्थ्य बीमा योजना के सुचारु क्रियान्वयन को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता विकास आयुक्त सतीश चंद्रा ने की। बैठक में राज्य स्वास्थ्य समिति, राँची द्वारा भेजे गए निदेशों के आलोक में जिले के सभी संबंधित पदाधिकारियों एवं कर्मियों के प्रशिक्षण और पंजीकरण व्यवस्था की गहन समीक्षा की गई।बैठक में निर्देश दिया गया कि जिले के सभी ड्रॉइंग एंड डिसबर्सिंग ऑफिसर (डीड-ीओ) एवं कंप्यूटर ऑपरेटरों के लिए सेहिस पोर्टल से संबंधित उन्नत ऑनलाइन प्रशिक्षण अनिवार्य होगा। यह प्रशिक्षण नामित मास्टर ट्रेनरों द्वारा ऑनलाइन माध्यम से संपन्न कराया जाएगा।मास्टर ट्रेनरों के रूप में संदीप कुमार (डीपीओ, यूआईडी), हिना गौरव बरनवाल (डीपीएम, एनएचएम), रोहित दुबे (सार्जेंट मेजर), कुमार हर्ष (जिला शिक्षा अधीक्षक) एवं अभिजीत शर्मा (मिट्टी रसायनज्ञ) को नामित किया गया है। इन प्रशिक्षकों को स्पष्ट निर्देश दिया गया है कि वे डीडीओ एवं कंप्यूटर ऑपरेटरों को पूरी दक्षता के साथ प्रशिक्षण प्रदान करें ताकि पोर्टल संचालन में कोई तकनीकी बाधा उत्पन्न न हो।उप विकास आयुक्त ने कहा कि इस पहल से जिले में स्वास्थ्य बीमा योजना के कार्यान्वयन में पारदर्शिता और कार्यकुशलता बढ़ेगी तथा पात्र लाभुकों को योजनाओं का लाभ समय पर मिल सकेगा।बैठक में जिला योजना पदाधिकारी अनुप कुमार, भू-अर्जन पदाधिकारी छुटेश्वर कुमार दास, जिला आपूर्ति पदाधिकारी झुनू कुमार मिश्रा, श्रम अधीक्षक धीरेंद्र नाथ महतो, सभी प्रखंडों के प्रखंड विकास पदाधिकारी समेत कई अन्य उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

लंबे समय से मामले में फरार चल रहे वारंटी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

रिपोर्ट - अविनाश मंडल

पाकुड़। महेशपुर थाना कांड संख्या- 68/2016 तथा माननीय न्यायालय के जी. आर. संख्या 366/2016 के अंतर्गत वांछित गैर-जमानती वारंटी बाबूल मंडल, पिता स्वर्गीय साधीन मंडल, निवासी बाहिरग्राम, थाना मालपहाड़ी ओ.पी., जिला पाकुड़ को पुलिस ने बुधवार को गिरफ्तार किया है। पुलिस सूत्रों के अनुसार बाबूल मंडल लंबे समय से मामले में फरार चल रहे थे। विशेष छापेमारी अभियान के तहत उन्हें उनके गांव से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी के बाद उन्हें स्थानीय न्यायालय में प्रस्तुत किया गया, जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। थाना प्रभारी ने बताया कि अभियुक्त के विरुद्ध दर्ज मामले की कानूनी प्रक्रिया पूर्व से लंबित थी और लगातार प्रयास के बाद आज गिरफ्तारी संभव हो सकी है।

प्रखंड कांग्रेस कार्यालय में कांग्रेस जिला महासचिव ने प्रखंड कमेटी के पदाधिकारी एवं कार्यकताओं के साथ बैठक की

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़िया प्रखंड कांग्रेस कार्यालय में बुधवार को कांग्रेस जिला महासचिव सह प्रखंड पर्यवेक्षक अर्धेंदु शेखर गांगुली ने प्रखंड कमेटी के पदाधिकारी एवं कार्यकताओं के साथ बैठक की। जिसमें खासतौर पर आगामी 6 मई को झारखंड कांग्रेस द्वारा रांची में आयोजित संविधान बचाओ कार्यक्रम पर चर्चा एवं प्रखंड कमेटी का चुनाव किया गया।साथ ही संगठन की मजबूती को लेकर चर्चा करते हुए जरुरी दिशा निर्देश दिया।जिला महासचिव श्री गांगुली ने कार्यकताओं से कहा कि प्रदेश स्तर से लेकर विधानसभा और जिला स्तर पर भी संविधान बचाओ रैली करना है।जिसमें अधिक से अधिक संख्या में पार्टी के पदाधिकारी और कार्यकताओं को शामिल होना है।प्रखंड अध्यक्ष इस्लाम मियां ने कहा कि इस बैठक में रैली को सफल बनाने पर विशेष रूप से जोर दिया गया। साथ ही प्रखंड कांग्रेस कमेटी में ओबीसी, एसटी, एससी सहित अन्य से महासचिव एवं उपाध्यक्ष का चुनाव वे संपन्न किया गया है उन्होंने कहा कि रैली के दौरान ही कार्यकर्ता घर-घर जाएंगे और लोगों को संविधान के बारे में बताएंगे। देश के लिए देश की जनता के लिए संविधान क्यों जरूरी है, इसके बारे में जानकारी देंगे। मौके पर प्रखंड अध्यक्ष इस्लाम मियां,उपाध्यक्ष नकुल राय, स्टीफन मरांडी, मुस्तकीम अंसारी, मैनुद्दीन अंसारी, कमाल अंसारी, अली अहमद सहित अन्य कांग्रेसी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मारवाड़ी युवा मंच ने शीतल जल प्याऊ का उद्घाटन किया

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

आज अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर मारवाड़ी युवा मंच देवघर शाखा के द्वारा शहर के विभिन्न मुख्य स्थान पर अस्थाई प्याऊ का उद्घाटन किया और रहा चलते हुए व्यक्ति को ठंडा पानी पिलाया गया !यह अमृतधारा गरमी भर चलेगी कार्यक्रम को सफल बनाने मे रोहित सुल्तानिया अमरदीप शर्मा आलोक अग्रवाल सर्वेश मोदी केशव चोखानी अभिषेक सिंघानिया गौरव अग्रवाल प्रत्यूष सुल्तानिया आनंद झुनझुनवाला ऋषभ केडिया ध्रुव सिंघानिया निहित तमकोरिया रितेश पेचरीवाल विवेक अग्रवाल एवं साकेत छावछारिया निम्नलिखित सदस्यों की उपस्थिति रही

हनुमान जी प्रतिमा का प्राण प्रतिष्ठा विधिवत किया गया

मंडरो:झारखंड बिहार के सीमा के एन एच 80 स्थित हाजीपुर फौजदारी में पंचमुखी हनुमान जी की प्रतिमा का प्राण प्रतिष्ठा को लेकर तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें हाजीपुर फौजदारी निवासी स्व. विष्णुदेव ओझा के स्मृति में उनके दत्तक पुत्र उमाशंकर मिश्रा उर्फ बुटुल मिश्रा एवं उनकी धर्मपत्नी कुमकुम देवी द्वारा आयोजित पंचमुखी हनुमान जी की प्रतिमा का प्राण प्रतिष्ठा विधिवत बनारस से आए आचार्य त्रिलोकी नाथ झा एवं रौशन पांडेय व सात पंडितों द्वारा देवी-देवताओं को मंत्रोच्चार कर आवाह्न कर विधि विधान के साथ पंचमुखी वीर बजरंगबली जी की प्राण-प्रतिष्ठा किया गया। इसके पूर्व सोलह पहर अखंड संकीर्तन आयोजित कर बुधवार को समापन किया गया वहीं देर संध्या तक भंडारा के तौर पर महाप्रसाद का वितरण किया गया जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालु भंडारा में भोजन ग्रहण किया।इस संबंध में बाटुल मिश्रा ने बताया कि यह समारोह तीन दिवसीय था कलियुग में हनुमान जी साक्षात दर्शनीय प्रभु है जो हर दुख पीड़ा को क्षण भर में हरण करते हैं सच्ची भक्ति से प्रभु हनुमान जी खुश होते हैं एवं मनोवांछित फल प्राप्त होता है।उनकी मनोकामना पूर्ण हुई जिससे प्राण-प्रतिष्ठा कराया वही समाज व दूर्गा पूजा समिति के सदस्य व गणमान्य बुद्धिजीवी व्यक्तियों को आभार व्यक्त किया मोके पर डब्लू ओझा, शिवनंदन ओझा, विनोद पाण्डेय, लक्ष्मण पांडेय हाजीपुर फौजदारी दूर्गा मंदिर समिति के अध्यक्ष बंटी यादव, सचिव चंद्रशेखर यादव, कोषाध्यक्ष दीपक यादव, उपकोषाध्यक्ष रंजीत कुशवाहा,सिकंदर वर्णवाल,संजय पासवान,मुकेश यादव,पिंका शर्मा,विनोद बिहारी यादव मुखिया प्रतिनिधि घनश्याम दास,सहित दर्जनों कार्यकर्ता एवं सैकड़ों ग्रामीण इस कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे थे।

6 मई को रांची में संविधान बचाओ रैली को ऐतिहासिक बनाने की तैयारी में जुटी कांग्रेस

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

कांग्रेस का संगठन सृजन तथा संविधान बचाओ अभियान अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे तथा संगठन महासचिव के.सी. बैणु गोपाल के निर्देश पर पूरे देश में चलाया जा रहा है। हर राज्यों में प्रदेश स्तरीय रैलियां की जा रही है। झारखंड में भी आगामी 6 मई को रांची के पुरानी विधानसभा मैदान धुर्वा में संविधान बचाओ रैली आयोजित की गई है,जिसे हमें सफल बनाना है। उक्त बातें झारखंड सरकार के ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका पांडेय सिंह ने प्रेस को देवघर जिला कांग्रेस कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता में बताई। आगे उन्होंने बताई कि राष्ट्रीय नेतृत्व के निर्देश पर आयोजित इस रैली को ऐतिहासिक बनाने के लिए हर जिले में तैयारीयां चल रही है। इस बाबत प्रदेश कांग्रेस के निर्देश पर ही यह प्रेस वार्ता आयोजित की गई है। प्रदेश स्तरीय इस अभियान कार्यक्रम में प्रदेश के बड़े नेताओं के साथ प्रदेश अध्यक्ष,विधायक दल के नेता, सभी मंत्री,सभी विधायकगण , तथा पार्टी संगठन के प्रखंड स्तर के सभी पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता भाग लेंगें। इस आयोजन के बारे में जैसे ही पता चला है तो कई सामाजिक संगठन भी निकल कर आगे आए हैं,जो इस रैली में बढ़ चढ़कर शामिल होगें। आप सभी अवगत है कि केंद्र सरकार की जो नीति है,वह सभी संवैधानिक एजेंसियों को ध्वस्त करने की है,यहां तक सुप्रीम कोर्ट पर भी ये लोग टिप्पणी कर रहे हैं। कायास लग रहा है कि सभी संवैधानिक एजेंसियों को ध्वस्त किया जाए और देश में तानाशाह कायम करें, इसका पुर जोर विरोध कांग्रेस के लोग करते हैं और जनता के सुख-दुख में खड़े रहते हैं। हमारा देश सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। इस लोकतंत्र को और जो हमारे देश का संविधान है उसे सुरक्षित रखने का प्रयास हमारे द्वारा किया जाता रहा है

और करते रहेंगें। प्रदेश प्रवक्ता शमशेर आलम ने कहा कि आज देश में मोदी सरकार हिटलर शाही से शासन कर रहे हैं। संविधान के साथ छेड़छाड़ किया जा रहा है। संवैधानिक संस्थाओं का गलत दुरुपयोग करके विपक्ष के नेताओं को डराया धमकाया जा रहा है। ईडी,सीबीआई,आईटी जैसे केंद्रीय एजेंसियों के माध्यम से उन्हें परेशान करते हुए जेल में भी डालने का काम कर रही है। आज संविधान खतरे में है,देश की एकता एवं अखंडता पर प्रहार किया जा रहा है। ऐसे में संविधान को बचाने के लिए 6 में को रांची में आयोजित रैली को सफल बनाने के लिए आज हम लोग यहां आए हैं। संविधान की रक्षा के लिए हमारा संघर्ष जारी रहेगा और इस महा रैली को हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे,संगठन महासचिव के.सी. वेणुगोपाल झारखंड प्रदेश के प्रभारी के. राजू एवं प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश संबोधित करेंगें। वही प्रदेश प्रवक्ता श्यामल किशोर सिंह ने कहा कि090 दिवसी संगठन सृजन तथा 40 दिवसीय संविधान बचाओ अभियान कार्यक्रम राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा तय किया गया है। जिनका समय सीमा तय करते हुए कैलेंडर जारी कर दिया गया है। प्रारंभिक में प्रदेश स्तर पर 6 मई को रांची की रैली को ऐतिहासिक बनाया जाएगा। इसके लिए हर प्रखंड एवं मंडल स्तर पर बैठकें कर रणनीति बनाई जा रही है। 10 मई तक जिला स्तर पर,17 मई तक विधान स्तर पर रैलियां निकाली जाएगी।उसके बाद 30 मई तक हर घर तक संदेश पहुंचाने का काम किया जाएगा। केंद्र में भाजपा कु मोदी सरकार द्वारा लगातार संवैधानिक मूल्यों को नष्ट किया जा रहा है, उनमें प्रदत्त हक एवं अधिकारों की हक मारी की जा रही है। हम कांग्रेस के एक-एक कार्यकर्ता अपने संविधान की सुरक्षा के लिए आंदोलनरत रहेंगें। जिला अध्यक्ष प्रो उदय प्रकाश ने कार्यक्रम के मूल बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जिस प्रकार नरेंद्र मोदी जनहित के कार्यों को छोड़कर देश को अपने गलत नीतियों से देश को नफरत की आग में डाल दिया है। देश की एकता एवं अखंडता पर सीधा प्रहार किया जा रहा है। ऐसे फिरका परस्त सरकार से देश को बचाना होगा। महंगाई,बेरोजगारी,मजदूर और किसानों की जनसमस्याओं से सरकार को कोई लेना देना नहीं है। हमारा आंदोलन जारी रहेगा। इस दौरान जिला बीस सूत्री उपाध्यक्ष डॉ मुन्नम संजय, प्रदेश प्रवक्ता राजेन्द्र दास, अवधेश प्रजापति,अमित कुमार पांडेय,रवि गुप्ता आदि दर्जनों मौजूद थे।

नेताजी सुभाष जागृति मंच ने अक्षय तृतीया के अवसर पर लोगों को ठंडा शरबत पिलाया

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

नेताजी सुभाष जागृति मंच के द्वारा हर साल की तरह इस साल भी दो जगह दुमका रोड एवं बंमपास टाउन देवसंघ रोड अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर शरबत वितरण किया गया शरबत वितरण के पहले विधिवत उद्घाटन फीता काट किया नेताजी सुभाष जागृति मंच के केंद्रीय अध्यक्ष उदय चक्रवर्ती पूर्व वार्ड पार्षद नंबर 24 दिनेश कुमार यादव ,भाजपा नेता बम शंकर दुबे ,बिंदु पाठक ,केंद्रीय सचिव कृष्ण कुमार गुप्ता, केंद्रीय संरक्षक दीपू झा ने संयुक्त रूप से किया उसके पश्चात सभी राहगीरों को गुड़ ,चना ,तरबूज, खीरा रसनायुक्त शरबत वितरण किया गया और गर्मी भर के लिए प्याऊ का व्यवस्था नेताजी सुभाष जागृति मंच दुमका रोड स्थित प्रधान कार्यालय के पास की गई इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक करने में सहयोग किया जिला अध्यक्ष ध्रुव प्रसाद साह ,महिला अध्यक्ष ट्रिणा दत्ता, जिला उपाध्यक्ष आशीष गुप्ता, जिला कोषाध्यक्ष अभिजीत दे , सदस्य शिव शंकर दास ,कल्पना कुमारी, सोनाली घोष ,कुमकुम बर्मन ,शुक्ला राय ,भवानी सिंह, संजय जयसवाल ,राकेश जयसवाल, सुनील गुप्ता ,राजेंद्र तुरी ,चंदन जी इत्यादि महजुद थें

कब्रिस्तान की घेराबंदी के विवाद पर आक्रोशित लोगों से मिलने पहुंचे लोजपा प्रदेश महासचिव - प्रमोद कुमार सिंह

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद । कब्रिस्तान की घेराबंदी के विवाद पर आक्रोशित लोगों से मिलने पहुंचे लोजपा प्रदेश महासचिव - प्रमोद कुमार सिंह, जिले के रफीगंज प्रखंड के कजपा पंचायत के ग्राम जाखिम में आम गैरमजनुआ स्थान पर कब्रिस्तान की घेराबंदी की जा रही थी। इस बात की जानकारी जैसे ही जिले के सुपर से समाज सेवी सह रफीगंज विधानसभा क्षेत्र निर्दलीय प्रत्याशी रहे प्रमोद कुमार सिंह ने घटना स्थल पर जाकर लोगों से विस्तृत जानकारी ली और पुलिस प्रशासन से बात किया। बताते चलें कि यह स्थान वर्षों से गाँव के सभी समुदायों के लिए साझा और सार्वजनिक उपयोग की भूमि रही है। जब इस भूमि को एकपक्षीय रूप से कब्रिस्तान घोषित कर घेराव शुरू किया गया तो गाँव के तमाम लोगों ने एकजुट होकर इसका विरोध किया। ग्रामीणों के सूचना पर लोजपा प्रदेश महासचिव सह रफीगंज विधानसभा प्रत्याशी प्रमोद कुमार सिंह गाँव पहुंचे और वहाँ मौजूद

सभी ग्रामीणों से संवाद किया। लोगों की भावनाओं को समझते हुए और शांति बनाए रखते हुए उन्होंने सभी पक्षों को यह स्पष्ट किया कि गरमनजुरवा आमजमीन है जिस पर हर वर्ग का समान अधिकार है। ऐसे में बिना समुचित विचार-विमर्श और कानूनी प्रक्रिया के इस पर किसी एक पक्ष का कब्जा न्यायसंगत नहीं है। उन्होंने कहा कि हमारा प्रयास है कि इस विषय पर सर्वसम्मति बने और किसी भी प्रकार का विवाद या विभाजन गाँव में न हो। इसलिए मैंने सभी से निवेदन किया कि प्रशासन से विचार-विमर्श कर दस्तावेज्जों की पुष्टि के बाद ही आगे की कोई कार्यवाही हो। और दलित महिला पुरुष से बातचित कर पूरी घटना से जानकारी ली तत्पश्चात प्रभारी अंचलाधिकारी रामकुमार रमन से टेलीफोनिक माध्यम से बात कर एन ओ सी को जल्द से जल्द रद करने की बात कही और काम रोकवाने का की मांग की। ठेकेदार से भी बातचीत कर काम बंद करने की बात कहा तो ठेकेदार ने काम बंद रखने का आश्वाशन दिया। उन्होंने ने कहा कि विधायक नेहालुद्दीन सिर्फ एक समुदाय को बढावा दे रहे हैं सिर्फ और सिर्फ कब्रिस्तान घेराबंदी पर विशेष कार्य कर रहे हैं। उन्होंने ने कहा कि बटोगे तो कटोगे सभी हिन्दू समाज एकजुट रहे। महादलित लोगों ने कहा कि हम लोगों के लिए सिर्फ एक ही चापकल है जिसमें एक समुदाय के द्वारा बालू छड़ी एवं चापकल के मुंडा को र दिया गया है और बोलता है कि कब्रिस्तान का घेराबंदी हो जाएगा तुम लोगों को दौड़ा दौड़ा कर मारेंगे। इस मौके पर अनिल मिश्रा, सरपंच समदर्शी सिंह, शशिभूषण मिश्रा, संजय सिंह सुनीता देवी, नदिया देवी, द्वितीया देवी, बसंती देवी, कौशल्या देवी, जवाहर यादव, रविंद्र मेहता, हसन पासवान, शमशेर महतो, राहुल कुमार, राकेश कुमार, राकेश रिकियासन, दीप नारायण पासवान, गुड्डू साव, श्रुति देवी झांती देवी, रामरती देवी, मुनर्वा कुंवर के साथ सैकड़ों महादलित महिला पुरुष मौजूद रहे।

विष्णु धाम का स्थापना दिवस एवं अक्षय तृतीया धूमधाम से मनाया गया

रिपोर्ट- प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- सदर प्रखंड स्थित जम्होर थानांतर्गत मोक्षदायिनी पुनपुन एवं पुण्यदायिनी बटाने के पावन संगम तट पर अवस्थित सनातनी परंपरा का विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थल विष्णु धाम का स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया ।आज ही के दिन अक्षय तृतीया को महान संत एवं परमहंस खाकी बाबा द्वारा विष्णु धाम का स्थापना किया गया था।सैकड़ो वर्ष पूर्व जब खाकी बाबा इस संगम तट पर आए थे उन्होंने यहां विश्राम किया था विश्राम के दरम्यान रात्रि में उन्हें स्वपन आया कि अनादि ब्रह्म परम परम पिता परमेश्वर इस संगम तट पर युगों युगों से सूक्ष्म रूप में विराजमान हैं।इसे साक्षी मानकर खाकी बाबा ने यहां पर भव्य एवं दिव्य भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित कराई। भगवान विष्णु की इतनी अद्भुत एवं सुंदर प्रतिमा है जिसे देखकर किसी भी भक्त के मन

में भक्ति की अविरल धारा बहने लगती है दर्शन मात्र से ही हृदय में हर्षित विचारधारा पल्लवित एवं पुष्पित होने लगती है।न्यास समिति के सचिव उपेंद्र सिंह, कोषाध्यक्ष पूर्व मुखिया सुरेंद्र प्रसाद गुप्ता एवं अन्य सदस्यों ने स्थापना दिवस में विशेष सहभागिता निभाई तो वर्तमान महंत बाल्कानंद ब्रह्मचारी ने बताया कि अक्षय तृतीया को जो भी कार्य संपादित किए जाते हैं उसके अक्षय पुण्य प्राप्त होते हैं विष्णु धाम में इस दिन किए गए पूजा पाठ विशेष फलदाई होती हैं।सुबह सवेरे से ही सैकड़ो भक्तों ने संगम तट में आस्था की डुबकी लगाई और भगवान विष्णु की विशेष पूजा अर्चना की विष्णु धाम के अन्य मंदिरों में भी विशेष पूजा पाठ की गई। जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी एवं समाजसेवी मधुसूदन कुमार त्रिवेदी ने विष्णु धाम का अवलोकन किया और बताया कि प्राकृतिक सुषमा से आच्छादित विष्णुधाम वैष्णवी परंपरा का महान तीर्थ स्थल है।पुनपुन तीर्थ के रूप में विख्यात है मगध प्रमंडल के चार धामों में से एक है।गया तीर्थ का प्रथम द्वार है इस स्थल को पर्यटन स्थल का दर्जा दिए जाने की आवश्यकता है।साथ ही साथ रामायण सर्किट में जोड़ने की भी मांग की गई।

15 साल से फरार हार्डकोर नक्सली विकास यादव गिरफ्तार

बंदेया पुलिस की बड़ी कार्रवाई, कई संगीन मामलों में था वांछित

रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह(औरंगाबाद)बंदेया पुलिस को मंगलवार को एक बड़ी सफलता मिली जब बंदेया थाना क्षेत्र से 15 वर्षों से फरार चल रहे हार्डकोर नक्सली विकास यादव उर्फ जनार्दन यादव उर्फ रामचंद्र यादव उर्फ सिद्धनाथ यादव को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि वह दरार देवी स्थान के पास छुपा हुआ है। त्वरित कार्रवाई करते हुए पुलिस की टीम ने उसे मौके से धर दबोचा। अभियुक्त बंदेया थाना क्षेत्र के नारायणपुर गांव का रहने वाला है और उसके खिलाफ औरंगाबाद, गया समेत विभिन्न जिलों में करीब 20 से अधिक संगीन मामले दर्ज हैं। इनमें हत्या, रंगदारी, हथियार कानून उल्लंघन व उछअ एक्ट जैसे गंभीर

आरोप शामिल हैं। गिरफ्तारी के बाद विकास यादव को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है और पुलिस उससे आगे की पूछताछ में जुट गई है। छापेमारी टीम में बंदेया थाना प्रभारी सूरज कुमार, अपर थानाध्यक्ष कृष्णा राय, मोहित कुमार तथा अन्य सशस्त्र बल शामिल थे।

जनप्रतिनिधियों की फाइलेरिया उन्मूलन अभियान में होगी सीधी भागीदारी

आमजनों को बीमारियों के प्रति जागरूक करने में पीएसपी का होगा अहम योगदान

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद। जिले से फाइलेरिया बीमारी को जड़ से मिटाने और इसके उन्मूलन को लेकर स्वास्थ्य विभाग लगातार दृढ़संकल्पित है। इस अभियान का बेहतर क्रियान्वयन को लेकर सोमवार को औरंगाबाद जिले के बारुण प्रखंड के हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर, धनौती पर रोगी हितधारक मंच (पीएसपी) का गठन किया गया। सबसे पहले उप मुखिया मान्ती कुमारी की अध्यक्षता में पीएसपी सदस्यों की बैठक हुई। बैठक का संचालन सामुदायिक हेल्थ ऑफिसर (सीएचओ) कुमारी निति ने किया।

जागरूकता से ही फाइलेरिया उन्मूलन अभियान होगा सफल

इस मौके पर उप मुखिया मान्ती कुमारी ने कहा कि जन-जागरूकता से ही कोई भी अभियान को सफल बनाया जा

सकता है। इसलिए फाइलेरिया बीमारी के उन्मूलन के लिए जो रोगी हितधारक मंच (पीएसपी) का गठन किया गया है। इससे जुड़े सभी सदस्य काफी तत्परता के साथ अपने-अपने कार्य क्षेत्र में प्रचार-प्रसार कर फाइलेरिया के साथ-साथ अन्य बीमारियों के प्रति आमजनों को जागरूक करें। ताकि अपने प्रखंड और जिले से फाइलेरिया बीमारी के साथ-साथ अन्य कम्युनिकेबल बीमारी का उन्मूलन हो सके। सीएचओ कुमारी निति ने कहा कि सभी पीएसपी सदस्यों से फाइलेरिया बीमारी के साथ-साथ मलेरिया, टीबी और कालाजार के प्रति लोगों को जागरूक होना होगा। साथ ही फाइलेरिया मरीजों के अधिकारों तथा बचाव के उपायों के बारे में लोगों को जागरूक करेंगे।

पेशेंट स्टेकहोल्डर प्लेटफॉर्म में सीएचओ व जनप्रतिनिधियों की भूमिका होगी अहम

औरंगाबाद के बारुण प्रखंड के हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर, धनौती पर गठित पेशेंट स्टेकहोल्डर प्लेटफॉर्म में सामुदायिक हेल्थ अधिकारी (सीएचओ) के साथ-साथ उप मुखिया, वार्ड सदस्य के साथ स्थानीय जनप्रतिनिधियों की भूमिका काफी अहम होगी। इस मुहिम को सफल बनाने में सीफार संस्था के द्वारा टेक्निकल सपोर्ट किया जा रहा है। इस अवसर पर वार्ड सचिव रामनाथ साव, एएनएम प्रभा कुमारी, सरिता कुमारी, आशा सुमित्रा देवी, ललिता देवी, आशा देवी पूनम कुमारी, सीएनआरपी रीना कुमारी, सीएम प्रतिमा देवी तथा सिफार के जिला समन्वयक अमित कुमार व प्रोजेक्ट एसोसिएट अनिल कुमार सिंह मौजूद मौजूद रहे।

गोह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में उर्मिला कुमारी को दी गई भावभीनी विदाई

रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह(औरंगाबाद)गोह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में कार्यरत रही ए ए न एम उर्मिला कुमारी को मंगलवार को एक सादे समारोह में भावभीनी विदाई दी गई। विदाई समारोह की अध्यक्षता चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. अभिनव चंद्र ने की, जबकि मंच संचालन लिपिक सुभाष सिंह ने किया। इस अवसर पर धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अर्जुन कुमार (आयुष चिकित्सक) ने प्रस्तुत किया। समारोह में स्वास्थ्य केंद्र के सभी कर्मियों ने उर्मिला कुमारी के कार्यकाल की सराहना करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उल्लेखनीय है कि उर्मिला कुमारी अब प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, दरधा में पदस्थापित की गई हैं। कार्यक्रम में मनीष कुमार, प्रदीप कुमार, शंभु शंकर, मनोज कुमार, एएनएम गुड़िया कुमारी, मधुबाला, अर्चना सहित अन्य चिकित्सा कर्मी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा बन गई है टीवी पत्रकारिता

>> विचार

जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने राज्य की कानून-व्यवस्था को लेकर अपने पास कोई अधिकार न होने के बावजूद विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर आतंकवादी हमले के लिए पूरे देश से माफी मांगी। इस सबके बावजूद टीवी चैनलों का रवैया कतई सकारात्मक नहीं है। उनका पूरा जोर आतंकवादियों के बहाने कश्मीरियों और पूरे देश के मुसलमानों को अपमानित करने और उनके खिलाफ नफ़रत का वातावरण तैयार करने और युद्धोन्माद पैदा करने पर है। टीवी चैनलों का यह रवैया छह साल पुराने उस दौर की याद ताजा कर रहा है जब केंद्र सरकार ने संविधान के अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू-कश्मीर को प्राप्त विशेष राज्य का दर्जा खत्म कर दिया था।

अनिल जैन

इस समय पहलगाम में आतंकवादियों के हाथों हुए भीषण नरसंहार का मामला पूरे देश में चर्चा का विषय बना हुआ है। हमले के दौरान कई पर्यटकों की जान बचाने में कश्मीर के स्थानीय बांशिदों ने अहम भूमिका निभाई। हमले में मारे गए लोगों के शोक स्वरूप और आतंकवादियों के खिलाफ अपने गुस्से का इजहार करने के लिए समूचे कश्मीर के लोगों ने ऐतिहासिक रूप से एक दिन के लिए 'कश्मीर बंद' रखा। भारतीय मीडिया, खास कर टेलीविजन के राष्ट्रीय न्यूज़ चैनल इस वक्त अपने अल्प इतिहास में सार्वकालिक पतन के दौर से गुजर रहे हैं। ताजा मामला है कश्मीर में हुए आतंकवादी हमले को लेकर उसका रवैया। कश्मीर घाटी के बाशिंदों को पिछले एक दशक में जितना बदनाम और भावनात्मक रूप से जितना आहत भाजपा की प्रोपेगेंडा मशीनरी ने नहीं किया है, उससे ज्यादा उन्हें बदनाम करने और उनके जख्मों को कुरेदने का काम देश के इन राष्ट्रीय टीवी चैनलों ने किया है। इसीलिए आम तौर पर इन टीवी चैनलों को भी अब भाजपा के प्रचार तंत्र का हिस्सा ही माना जाने लगा है। इस समय पहलगाम में आतंकवादियों के हाथों हुए भीषण नरसंहार का मामला पूरे देश में चर्चा का विषय बना हुआ है। हमले के दौरान कई पर्यटकों की जान बचाने में कश्मीर के स्थानीय बांशिदों ने अहम भूमिका निभाई। हमले में मारे गए लोगों के शोक स्वरूप और आतंकवादियों के खिलाफ अपने गुस्से का इजहार करने के लिए समूचे कश्मीर के लोगों ने ऐतिहासिक रूप से एक दिन के लिए 'कश्मीर बंद' रखा। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने राज्य की कानून-व्यवस्था को लेकर अपने पास कोई अधिकार न होने के बावजूद विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर आतंकवादी हमले के लिए पूरे देश से माफी मांगी। इस सबके बावजूद टीवी चैनलों का रवैया कतई सकारात्मक नहीं है। उनका पूरा जोर आतंकवादियों के बहाने कश्मीरियों और पूरे देश के मुसलमानों को अपमानित करने और उनके खिलाफ नफ़रत का वातावरण तैयार करने और युद्धोन्माद पैदा करने पर है। टीवी चैनलों का यह रवैया छह साल पुराने उस दौर की याद ताजा कर रहा है जब केंद्र सरकार ने संविधान के अनुच्छेद 370 के तहत जम्मू-कश्मीर को प्राप्त विशेष राज्य का दर्जा खत्म कर दिया था और उसका विभाजन कर उसे केंद्र शासित प्रदेश बनाया था। तब भी इन टीवी चैनलों ने अपने संवाददाताओं को कश्मीर भेजे बगैर ही कश्मीर के बारे में खूब मनगढ़ंत और बेसिर-पैर की खबरें अपने दर्शकों को परोसी थीं। उस समय विशेष दर्जा खत्म करने के केंद्र सरकार के फैसले से कश्मीर घाटी के लोग बेहद क्षुब्ध और निराश थे। अपना विरोध जताने के लिए उन्होंने कई दिनों तक अपना काम-काज बंद रखा था। समूची कश्मीर घाटी में लॉकडाउन जैसे हालात थे। उसी दौरान इन पंक्तियों के लेखक ने अपने साथी पत्रकार महेंद्र मिश्र के साथ हालात का जायजा लेने के लिए कश्मीर घाटी की यात्रा की थी। हम लोग वहां एक सप्ताह तक रहे थे। उस समय तमाम टीवी चैनल कश्मीर को लेकर ऐसी तस्वीर पेश कर रहे थे मानो वह किसी दूसरे देश का हिस्सा था, जिसे भारत सरकार ने हमला कर जीत लिया हो और अपना हिस्सा बना लिया है। यह बात बार-बार जोर देकर बताई जा रही थी कि अब कोई भी भारतीय वहां आसानी से जमीन खरीद सकेगा, वहां बस सकेगा। यही नहीं, भाजपा के कुछ नेताओं, केंद्रीय मंत्रियों और मुख्यमंत्रियों ने तो ऐसे भी बयान दिए थे कि अब भारत के दूसरे प्रदेशों के नौजवान कश्मीर से अपने लिए दुल्हन भी ला सकेंगे। ऐसे बेहूदा बयानों को तमाम टीवी चैनल बढ़-चढ़कर दिखा रहे थे। इसी बात को सोशल मीडिया पर भाजपा का समर्थक वर्ग और भी ज्यादा भद्दे तरीके से प्रचारित कर रहा था, जिससे हर कश्मीरी बुरी तरह आहत और दुखी था, वह अपने को अपमानित महसूस कर रहा था। ऐसा महसूस करते हुए उसका दुखी होना स्वाभाविक भी था। उस समय तमाम बेखबरी टीवी चैनल रोजाना पुराने फुटेज और सरकारी दावों के आधार पर बता रहे थे कि कश्मीर घाटी में जनजीवन लगातार सामान्य हो रहा है, लेकिन श्रीनगर पहुंचकर हवाई अड्डे से बाहर निकलते ही हमने पाया था कि कहीं कुछ सामान्य नहीं है। उस दिन कश्मीर में जनता द्वारा लागू लॉकडाउन का 32वां दिन था। डिजिटल इंडिया में उस 'नए कश्मीर' का जनजीवन बगैर मोबाइल फोन और इंटरनेट के पूरे 33 दिन से अपाहिज बना हुआ था। हमने एक हफ्ते वहां रहते हुए देखा था कि सरकारी स्कूल-कॉलेज खुल रहे हैं लेकिन वहां पढ़ने वाले बच्चे नदारद हैं। सरकारी परिवहन के साधन बंद थे। सरकारी दफ्तर, बैंक आदि भी खुलते थे लेकिन उनमें सन्नाटा पसरा रहता था। होटलें, रेस्टोरेंट, दुकानें पूरी तरह बंद थे। देशी-विदेशी पर्यटकों का आना पूरी तरह बंद था। डल झील में तमाम शिकारे खामोश और उदास खड़े थे। पूरे श्रीनगर में हर दस कदम पर पैरामिलिट्री फोर्स के जवान तैनात थे। हमने देखा था कि सुबह के वक्त दो घंटे के लिए खाने-पीने के सामानों की दुकानें खुलती थीं, ताकि लोग अपनी रोजमर्रा की जरुरतों का सामान खरीद सकें। बस उन्हीं दो घंटों की लड़खड़ाती और उदास चहल-पहल के बाद पूरे दिन घाटी में सन्नाटा पसरा रहता था। यही माहौल बाद में दो महीने तक और रहा था। फिर भी टीवी चैनलों की खबरों में इन सब बातों का कोई ज़िक्रनहीं हो रहा था। जो कुछ बताया जा रहा था, वह हकीकत से एकदम उलट यानी सरासर बकवास था। इसी वजह से घाटी के बाशिंदों में जबरदस्त गुस्सा था। उनका कहना था कि ये सारे चैनल कश्मीर के मौजूदा हालात की लगातार गलत तस्वीरें पेश कर रहे हैं। बहरहाल, इस समय पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले को लेकर भी टीवी चैनलों का रोल बेहद आपत्तिजनक और गंदा है। उनकी खबरों के प्रस्तुतिकरण में वस्तुनिष्ठता सिरे से नदारद है। हमले के दौरान और हमले के बाद श्रीनगर, पहलगाम और आसपास के इलाकों के बांशिदों ने पीड़ित पर्यटकों की जिस तरह मदद की, उसे सिरे से नजरअंदाज किया जा रहा है। बताया जा रहा है कि आतंकवादियों ने पर्यटकों से उनका धर्म पूछा और फिर उन्हें मारा। अगर यह बात सही है तो जाहिर है कि उनका मकसद इस नरसंहार के जरिये देश के हिंदुओं और मुसलमानों के बीच अलगाव व नफ़रत की खाई को और ज्यादा गहरा व चौड़ा करना था। तमाम टीवी चैनल आतंकवादियों के इसी मकसद को पूरा करने की दिशा में काम कर रहे हैं। किसी भी टीवी चैनल की ओर से सरकार से यह सवाल नहीं पूछा जा रहा है कि जब पूरे जम्मू-कश्मीर में विभिन्न सुरक्षा बलों के ढाई लाख से ज्यादा जवान तैनात हैं तो जिस जगह हमला हुआ वहां सुरक्षा बल का एक भी जवान क्यों नहीं तैनात था? प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के एक बार नहीं, कई मर्तबा किए गए इस दावे पर कोई सवाल नहीं उठा रहा है कि नोटबंदी और जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा खत्म करने के बाद आतंकवाद की कमर टूट गई है। सबसे खतरनाक बात तो यह है कि देश में युद्धोन्माद फैलाने के मकसद से कुछ चैनलों पर भारतीय सेना की संभावित रणनीतियों और पाकिस्तान की संभावित चालों पर भी खुली बहस हो रही है। जिस जानकारी तक दुश्मन देश को पहुंचने में समय लगता है, उसे टीवी चैनलों के स्टूडियो से मुफ्त में परोसा जा रहा है। सवाल है कि ऐसे चैनलों को राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े पहलुओं को सार्वजनिक चर्चा का हिस्सा बनाने की इजाजत किसने दी है? राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम और ऑफिशियल सीक्रेट एक्ट भी इस सिद्धांत को मजबूती से स्थापित करते हैं कि किसी भी परिस्थिति में संवेदनशील सूचनाएं सार्वजनिक नहीं की जा सकतीं। हालांकि केंद्र सरकार की ओर से मीडिया के लिए एक एडवाइज़री जारी की गई है, लेकिन लगता नहीं है कि सरकार में बैठे राष्ट्रवाद और देशभक्ति के झंडाबरदार भी उस एडवाइज़री को लेकर गंभीर हैं। कुछ टीवी चैनल तो टीआरपी बटोरने की अंधी दौड़ में इस कदर बदहवास हो चुके हैं कि देश के पूर्व सैन्य अधिकारियों को नाटकीय तौर पर भारतीय और पाकिस्तानी खेमों में बांटकर काल्पनिक युद्ध में भिड़ाने का तमाशा भी करवा रहे हैं। यह सिर्फ पत्रकारिता का ही पतन नहीं है बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा के बुनियादी सिद्धांत की भी आपराधिक अनदेखी है। कोई भी सेवानिवृत्त सैन्य अधिकारी इस तरह टीवी कैमरों के सामने बैठकर ऐसे आपराधिक तमाशे का हिस्सा कैसे बन सकता है? कहने की आवश्यकता नहीं कि इन टीवी चैनलों ने राष्ट्र की सुरक्षा को लोगों के मनोरंजन और अपने धंधे का साधन बना लिया है।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं)

संपादकीय

सड़कों पर क्यों लहूलुहान हो रही जिंदगी?

सोमवार को एक मामले की सुनवाई करते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि अगर सड़क हादसों में इतने लोगों की जान जा रही है, तो बड़े-बड़े राजमार्गों के निर्माण का क्या उद्देश्य है। अदालत ने केंद्र सरकार से सड़क हादसों में नकदीरहित इलाज की योजना के अब तक लागू न होने को लेकर भी सवाल पूछे। अव्वल तो सड़क सुरक्षा सरकार की जिम्मेदारी है, चाहे उसके लिए नियम-कायदे बनाना हो या फिर लोगों के भीतर जिम्मेदारी से वाहन चलाने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए जागरूकता अभियान चलाना। दूसरे, अगर किन्हीं हालात में हादसे होते हैं तो उसके बाद हताहतों के जीवन को बचाना सबसे पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। यह तथ्य है कि सड़क दुर्घटना में अगर कोई घायल हो जाता है तो उसके बाद के एक घंटे का वक्त यानी 'गोल्डन आवर' उसके जीवन के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण होता है। इस अवधि में अगर उसे उचित इलाज मिल जाए तो उसकी जान बच सकती है। मगर हकीकत यह है कि लंबी दूरी के राजमार्गों या एक्सप्रेस-वे तो बना दिए गए हैं, लेकिन हादसे की स्थिति में घायलों को समय पर इलाज मुहैया कराने के लिए अस्पताल की व्यवस्था से लेकर वहां पहुंचाए जाने के जरूरी इंतजामों की अनदेखी की जाती है। सवाल है कि अगर सरकार ने हादसे के बाद एक घंटे की बेशकीमती अवधि में नकदीरहित इलाज का भरोसा दिया है, तो व्यवहार में उसे लागू करने में उसे क्या दिक्कत है। सड़क हादसों में अनेक ऐसे लोगों की भी मौत हो जाती है, जिन्हें समय पर इलाज मुहैया करा कर बचाया जा सकता था।

मजदूरों के महत्व को दर्शाता मजदूर दिवस

रमेश सर्राफ धमोरा

मजदूर दिवस मजदूरों के महत्व को दर्शाने का एक महत्वपूर्ण उत्सव है। भारत सहित दुनिया के बहुत से देशों में एक मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है। जिसका मुख्य उद्देश्य उस दिन मजदूरों की भलाई के लिए काम करने व मजदूरों में उनके अधिकारों के प्रति जागृति लाना होता है। मगर ऐसा हो नहीं पाया है। भारत में 90 फीसदी मजदूर असंगठित क्षेत्र में काम करते हैं जिनको सभी सामाजिक सुरक्षा सुविधाएं प्राप्त नहीं हैं। देश में श्रमिक वर्ग की संख्या संगठित व असंगठित क्षेत्र में 50 करोड़ से ज्यादा है। भारत में एक मई का दिवस सबसे पहले चेन्नई में एक मई 1923 को मद्रास दिवस के तौर पर मनाना शुरू किया गया था। इस की शुरुआत भारती मजदूर किसान पार्टी के नेता कामरेड सिंगरावेलू चेट्यार ने शुरू की थी। भारत में मद्रास के हाईकोर्ट सामने एक बड़ा प्रदर्शन किया और एक संकल्प के पास करके यह सहमति बनाई गई कि इस दिवस को भारत में भी कामगार दिवस के तौर पर मनाया जाये और इस दिन छुट्टी का ऐलान किया जाये। वर्तमान में भारत समेत लगभग 80 देशों में एक मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है। मजदूर दिवस दुनिया के सभी कामगारों, श्रमिकों को समर्पित होता है। इस बार की अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस 2025 में वर्ल्ड डे फॉर सेफ्टी एंड हेल्थ एट वर्क की थीम है। स्वास्थ्य और सुरक्षा में क्रांति, कार्यस्थल पर एआई और डिजिटलाइजेशन की भूमिका। इसका मतलब है कि आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, वर्चुअल रियलिटी और इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसी नई तकनीकों का इस्तेमाल कार्यस्थल को और ज्यादा सुरक्षित और सेहतमंद बनाने में किया जाएगा। स्मार्ट हेलमेट्स, सेफ्टी सेंसर, ऑटोमेटेड मॉनिटरिंग सिस्टम ये सब भविष्य की सुरक्षा के अहम हिस्से बनेंगे। यह थीम हमें इस बात के लिए तैयार करती है कि हम तकनीक का सही इस्तेमाल करते हुए कर्मचारियों की भलाई सुनिश्चित कर सकें। किसी भी राष्ट्र की प्रगति करने का प्रमुख भार मजदूर वर्ग के कंधों पर ही होता है। मजदूर वर्ग की कड़ी मेहनत के बल पर ही राष्ट्र तरक्की करता है। लेकिन भारत का श्रमिक वर्ग श्रम कल्याण सुविधाओं के लिए आज भी तरस रहा है। मजदूर दिवस को लेकर श्रमिक तबके में अब कोई खास उत्साह नहीं रह गया है। बढ़ती महंगाई और पारिवारिक जिम्मेदारियों ने भी मजदूरों के उत्साह का कम कर दिया है। अब मजदूर दिवस इनके लिए सिर्फ कागजी रस्म बनकर रह गया है। महात्मा गांधी ने कहा था कि किसी देश की तरक्की उस देश के कामगारों और किसानों पर निर्भर करती है। उद्योगपति खुद को मालिक समझने की बजाय अपने-आप को ट्रस्टी समझे। मगर ऐसा होता नहीं है। मालिक आज भी मालिक बने हुये हैं। मजदूर सिर्फ मजबूर होकर रह गया है। इसी कारण भारत में मजदूरों की स्थिति बेहतर नहीं है। गुरु नानक देव जी ने भी अपने समय में किसानों, मजदूरों और कामगारों के हक में आवाज उठाई थी। गुरु नानक देव जी ने 'काम करना, नाम जपना, बांट छकना और दसवंध निकालना का संदेश दिया था। गरीब मजदूर और कामगार का विनम्रता का राज स्थापित करने के लिए मनमुख से गुरमुख तक की यात्रा करने का संदेश दिया था। मजदूर एक ऐसा शब्द है जिसके बोलने में ही मजबूरी झलकती है। सबसे अधिक मेहनत करने वाला मजदूर आज भी सबसे अधिक बदहाल स्थिति में है। दुनिया में एक भी ऐसा देश नहीं है जहां मजदूरों की स्थिति में सुधार हो पाया है। दुनिया के सभी देशों की सरकार मजदूरों के हित के लिए बातें तो बहुत बड़ी-बड़ी करती हैं मगर जब उनकी भलाई के लिए कुछ करने का समय आता है तो सभी पीछे हट जाती है। इसीलिए मजदूरों की स्थिति में सुधार नहीं हो पाता है। हमारे देश के मजदूरों को न तो मालिकों द्वारा किए गए कार्य की पूरी मजदूरी दी जाती है और ना ही अन्य वांछित सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाती है। गांव में खेती के प्रति लोगों का रुझान कम हो रहा है। इस कारण बड़ी संख्या में लोग मजदूरी करने के लिए शहरों की तरफ पलायन कर जाते हैं। जहां ना उनके रहने की कोई सही व्यवस्था होती है ही उनको कोई ढ़ग का काम मिल पाता है। मगर आर्थिक कमजोरी के चलते शहरों में रहने वाले मजदूर वर्ग जैसे तैसे कर वहां अपना गुजर-बसर करते हैं। बड़े शहरों में झोंपड़ पट्टी बस्तियों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है। जहां रहने वाले लोगों को कैसी विषम परिस्थितियों का सामना करता है। इसको देखने की न तो सरकार को फुर्सत है ना ही किसी राजनीतिक दलों के नेताओं को। झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले मजदूरों को शौचालय जाने के लिए भी घंटों लाइनों में खड़ा रहना पड़ता है। झोपड़ पट्टी बस्तियों में ना रोशनी की सुविधा रहती है। ना पीने को साफ पानी मिलता है और ना ही स्वच्छ वातावरण। शहर के किसी गंदे नाले के आसपास बसने वाली झोपड़ पट्टियों में रहने वाले गरीब तबके के मजदूर कैसा नारकीय जीवन गुजारते हैं। उसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है। मगर इसको अपनी नियति मान कर पूरी मेहनत से अपने मालिकों के यहां काम करने वाले मजदूरों के प्रति मालिकों के मन में जरा भी सहानुभूति के भाव नहीं रहते हैं। उनसे 12-12 घंटे लगातार काम करवाया जाता है। घंटो धूप में खडे रहकर बड़ी बड़ी कोठियां बनाने वाले मजदूरों को एक छप्पर तक नसीब नही हो पाता है। देश के कारखानो में काम करने वाले मजदूरो पर हर वक्त इस बात की तलवार लटकती रहती है कि ना जाने कब मालिक उनकी छटनी कर काम से हटा दे। कारखानो में कार्यरत मजदूरों से निर्धारित समय से अधिक काम लिया जाता है। विरोध करने पर काम से हटाने की धमकी दी जाती है। मजबूरी में मजदूर कारखाने के मालिक की शर्तों पर काम करने को मजबूर होता है। कारखानो में श्रम विभाग के मापदण्डो के अनुसार किसी भी तरह की कोई सुविधायें नहीं दी जाती है। कई कारखानों में तो मजदूरों से खतरनाक काम करवाया जाता है जिस कारण उनको कई प्रकार की बिमारियां लग जाती है। कारखानों में मजदूरो को पर्याप्त चिकित्सा सुविधा, पीने का साफ पानी, विश्राम की सुविधा तक उपलब्ध नहीं करवायी जाती है। मालिको द्वारा निरंतर मजदूरों का शोषण किया जाता है। मगर मजदूरों के हितों की रक्षा के लिये बनी मजदूर यूनियनो को मजदूरो की बजाय मालिको की ज्यादा चिंता रहती है। हालांकि कुछ मजदूर यूनियने अपना फर्ज भी निभाती है मगर उनकी संख्या कम है। हर बार मजदूर दिवस के अवसर पर सरकारे मजदूरो के हित की योजनाओं के बड़े-बड़े विज्ञापन जारी करती है। जिनमें मजदूरों के हितों की बहुत सी बाते लिखी होती हैं। किन्तु उनमें से अमल किसी बात पर नहीं हो पाता है। देश में सभी राजनीतिक दलों ने अपने यहां मजदूर संगठन बना रखे हैं। सभी दल दावा करते हैं कि उनका दल मजदूरो के भले के लिये काम करता है। मगर ये सिर्फ कहने सुनने में ही अच्छा लगता है हकीकत इससे कहीं उलटी हैं। मजदूर दिवस सिर्फ एक अवकाश का दिन न होकर श्रमिकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने और उनके अधिकारों की रक्षा करने का दिन है। हमारे देश का मजदूर दिन प्रतिदिन और अधिक गरीब होता जा रहा है। दिन रात रोजी-रोटी के जुगाड़ में जद्दोजहद करने वाले मजदूर को तो दो जून की रोटी मिल जाए तो मानों सब कुछ मिल गया। आजादी के इतने सालो में भले ही देश में बहुत कुछ बदल गया होगा। लेकिन मजदूरों के हालात तो आज भी नहीं बदले हैं तो फिर श्रमिक वर्ग किस लिये मजदूर दिवस मनायेगा।

'उन्हें' नहीं पता कि गुस्सा किस पर करें!

राजेंद्र शर्मा

व्यंग्य

भाई ये गजब देश है। पहलगाम में आतंकवादी हमला हो गया। अट्ठाईस लोग मारे गए और डेढ़ दर्जन से ज्यादा गंभीर रूप से घायल। नाम पूछकर और धर्म देखकर, गोली मारी। फिर भी पब्लिक है कि ठीक से गुस्सा तक नहीं है। लोग गुस्सा भी हो रहे हैं तो बच-बचकर। और तो और, जिन्होंने अपने परिजन खोए हैं, वह भी एक ही सांस में आतंकवादियों को गाली भी दे रहे हैं और कश्मीरियों के गुन भी गा रहे हैं। और कश्मीरी नेताओं के नहीं, मामूली कश्मीरियों के गुन गा रहे हैं। टट्टू वालों का, टूर गाइडों का, छोटे-मोटे सामान की दुकान चलाने वालों का, टैक्सी ड्राइवरों का, होटल वालों का शुक्रिया अदा कर रहे हैं कि उन्होंने संकट के वक्त में बड़ा साथ दिया। जो बच गए, उन्हीं ने तो मौत के मुंह से बचा के निकाला। अपनी जान की परवाह नहीं की, अपरिचित सैलानियों को, घायलों को, औरतों को, बच्चों को बचाकर निकाला। जब गोलियां चल रही थीं, तब भी खुद बचकर भागने के बजाए, पीठ पर उठाकर घायलों को बचाया। अजब देश है, जहां आंसुओं के बीच से भी मौका निकालकर भुक्तभोगी, स्थानीय कारोबारियों, दुकानदारों, व्यापारियों तक की तारीफ कर रहे हैं, जिन्होंने अपना नफा-नुकसान नहीं देखा, दर्द से तड़पते सैलानियों को इस कदर अपना लिया कि उनकी हमदर्दी में, कई दिन सब काम-काज बंद ही रखा। मारने वाले कश्मीरी थे कि नहीं, यह तो पता नहीं, पर खुद को मुसलमान जरूर कहते थे। पर मदद करने वाले पक्के कश्मीरी भी थे और मुसलमान भी। मारने वाले अगर चार या छह थे, हालांकि उनके पास बंदूक की राक्षसी ताकत थी, लेकिन जो मदद को बढ़े हाथ हजारों थे, जिनके पीछे इंसानियत का जज्बा था। फिर मारने वालों की वजह से, बचाने वालों पर गुस्सा कैसे करें? और वह भी तब, जबकि मरने वालों में टट्टू चलाने वाला सैयद आदिल हुसैन शाह भी था, जो सैलानियों को बचाने के लिए आतंकवादियों से ही भिड़ गया और मरते-मरते आतंकवादियों का मुसलमान का नकाब फाड़कर, उनकी पहचान फकत आतंकवादी की कर गया। तब सिर्फ गुस्सा करें, तो कैसे? गुस्से के साथ ही जो प्यार आ रहा है, उसका क्या करें? फिर भी देश गजब सही, पर देश में बहुत से अजब लोग भी हैं। ये परेशान हैं कि गुस्सा करें, तो किस पर? सिर्फ नकाबपोश आतंकवादी पर गुस्सा करें, तो गुस्सा निकालें किस पर? आस-पड़ोस का कोई तो होना चाहिए, जिस पर गुस्सा कर सकें! अफसोस कि हिंदुओं का खून, उतना नहीं खौला, जितना खौलना चाहिए था और सारे नफरती कड़ाह चढ़ाने के बाद भी हिंदुओं का खून उतना नहीं खौला। फिर भी उनकी मेहनत भी पूरी तरह अकारथ नहीं हुई और कुछ गर्मी तो हिंदुओं के खून ने दिखाई ही। भुक्तभोगी अपीलें करते रह गए कि आम कश्मीरी मुसलमानों को दोषी बनाकर, गुस्से के नाम पर आतंकवादियों के मंसूबों को उनकी गोलियों से आगे बढ़ाने का काम कोई नहीं करे, पर खून की गर्मी जोर मारे बिना नहीं रही। नाराजगी थी आतंकवादियों से और निकाल दी पंजाब, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा वगैरह में जगह-जगह कश्मीरी छात्रों पर; छोटा-मोटा काम करने वाले आम कश्मीरियों पर। जहां-जहां राज में भगवाधारी, वहां-वहां उतनी ही मति गयी मारी! देश अजब-गजब है, तो राज करने वाले और भी गजब हैं। पहलगाम के हमले की खबर मिली, तो मोदी जी अपनी विदेश यात्रा अधूरी छोड़कर बीच में से ही वापस लौट आए। पर कश्मीर नहीं आए। शाह साहब को पहले ही कश्मीर भेज चुके थे, वह भी सब को बताकर। शाह साहब भी बिना वक्त गंवाए मरने वालों को सरकारी श्रद्धांजलि देने पहुंचे, लाल कालीन पर चलकर। शाह साहब मीटिंग-मीटिंग खेलकर दिल्ली लौट भी आए, पर मोदी जी कश्मीर नहीं आए। कश्मीर तो कश्मीर, मोदी जी तो पहलगाम पर अपनी सरकार की बुलायी सर्वदलीय बैठक तक में नहीं आए। मोदी जी आए बिहार में मधुबनी में। बिहार में जल्द ही चुनाव भी तो होना है। सोचा, पब्लिक का दिमाग गर्म है, बेनिफिट ले सकते हैं। फिर क्या था, आंतकवाद पर जमकर बरसे। मधुबनी में हिंदी में तो हिंदी में, अंगरेजी में भी बरसे, ताकि इंग्लैंड-अमरीका तक सुनाई दे। आतंकवादियों को और उनके मददगारों को मिट्टी में मिला देने का एलान कर दिया। ऐसी सजा देने की धमकी दे डाली, जिसकी किसी ने कल्पना तक नहीं की होगी। फिर बिहार के लिए तोहफों की एक और किस्त का एलान किया। दो रेलगाड़ियों को हरी झंडी दिखाई। मंच पर नीतीश कुमार के साथ खी-खी की और दिल्ली आ गए। राहुल गांधी कश्मीर हो आए, पर मोदी जी कश्मीर नहीं आए। वैसे, मणिपुर तो उनका दो साल से इंतजार कर रहा है, कश्मीर का नंबर तो अभी चार-छह रोज पहले ही लगा है! गजब देश है, तो मोदी जी के विरोधी भी कम अजब नहीं हैं। पहलगाम की खबर आने के बाद से, एक ही बात का शोर मचा रहे हैं कि यह तो सुरक्षा चूक हुई। फिर खुद ही सवाल करने लग जाते हैं कि इस सुरक्षा चूक के लिए जिम्मेदार कौन है? बेचारी सरकार कह रही है कि दुःख है, गहरा दुःख है, पर ये चूक और उसकी जिम्मेदारी पर ही अड़े हुए हैं। विपक्ष वालों ने चूक का इतना शोर मचाया, इतना शोर मचाया कि बेचारे छोटे वाले मंत्री, किरण रीजिजू से एक चूक तो करवा ही ली। अगले के मुंह से निकल ही गया कि चूक हुई थी, सब कुछ अच्छा चलने के बावजूद, कुछ चूक हुई थी! क्या फायदा हुआ? बेचारे को बाद में वीडियो का चूक वाला हिस्सा काटकर बाहर करना पड़ा। पर तब तक जुबान से निकले हुए शब्द, वह भी वीडियो में दर्ज शब्द, दूर-दूर तक फैल चुके थे। खैर! जैसे चूक की बात मानकर भी सरकार को वापस लेनी पड़ी है, वैसे ही कहीं जिम्मेदार कौन, का अपना जवाब भी सरकार को वापस नहीं लेना पड़ जाए। सर्वदलीय बैठक में सरकार ने कहा कि बैसारण घाटी में कोई सुरक्षा नहीं थी, क्योंकि सरकार को किसी ने बताया ही नहीं था कि वहां सैलानी जा रहे थे। सारी गलती मारने वालों के बाद अगर मरने वालों की नहीं भी मानी जाए, तब भी होटलवालों और टूर ऑपरेटरों की जरूर थी; सरकार की इजाजत के बिना ही घाटी को सैलानियों के लिए खोल दिया! पर पता नहीं क्यों पहलगाम वाले और जम्मू-कश्मीर की सरकार वाले इस पर अड़े हुए हैं कि बैसारण की घाटी तो हमेशा से, ज्यादा बर्फ के टैम को छोड़कर, पूरे साल ही खुली रहती है। ना किसी से इजाजत ली जाती है, ना किसी को जानकारी दी जाती है। सरकार तो इतना बताए कि वहां से सीआरपीएफ किस के कहने पर हटाई गयी थी। दिल्ली की सरकार को अगर यह बहाना भी वापस लेना पड़ गया, तो सर्वदलीय बैठक में से बचेगा क्या; बाबा जी का ठुल्लू। पर ठुल्लू बचा कैसे कहूं!

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक सरोज चौधरी द्वारा न्यू लोक भारती प्रेस, वार्ड 10 कोकर औद्योगिक क्षेत्र कोकर रांची से मुद्रित तथा ई -37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित, संस्थापक संपादक :स्व. राधाकृष्ण चौधरी
प्रबंध संपादक : अरूण कुमार चौधरी, फोन: 9471170557/08084674042, ई-मेल : Divyadinkarranchi @ gmail.com,RNI Regd. No. : JHAHIN/2013/54373Postal Registration No. : RN-11/2012)

संक्षिप्त समाचार

लावारिश मृत गौ माता का किया गया अंतिम संस्कार

सुस्मित तिवारी ब्यूरो पाकुड़

पाकुड़ : बुधवार को राष्ट्रीय संगठन रामभक्त सेवा दल के झारखंड प्रदेश महामंत्री राम ठाकुर के नेतृत्व में शहर के छोटी अलीगंज के पीछे मैदान में एक मृत गौ माता का हिंदू रीति रिवाज से अंतिम संस्कार किया गया। इस संबंध में राम ठाकुर ने बताया कि मंगलवार को शाम से एक गौ माता मैदान में मृत पड़ा हुआ था।जिसकी सूचना स्थानीय मोहल्ले के लोगों के द्वारा दिया गया था। इसी के तहत बुधवार को उसी जगह पर मृत गौ माता का अंतिम संस्कार किया गया। उन्होंने कहा कि गौ हमारी माता है और हम सभी सनातनी गौ माता की पूजा करते है। उन्होंने जिले वासियों से निवेदन किया कि गौ माता की मृत हो जाने के बाद इधर उधर न फेंके। उनके प्रति हम सनातनियों में गहरी शहानुभूति- आस्था है। इसलिए जिनसे अगर गौसेवा कर पाना संभव ना हो वह तुरंत संगठन को सूचित करें। बाकी सबों को अपनी जिम्मेवारी समझ कर सेवाभाव का कार्य करना चाहिए। बाकी ना कर पाने की स्थिति में संगठन गौ सेवा के लिए हर संभव प्रतिबद्ध है। वही मौके पर इस कार्य में जिला गौ सेवा प्रमुख अंकित भगत, विष्णु ठाकुर, माणिक राणा , दुलाल सिंह सहित दर्जनों सदस्य एवं मोहल्ले के लोग मौजूद थे।

कटाव रोधी कार्य पास हो जाने पर ग्रामीणों मे खुशी का माहौल

सोनपुर , ।सबलपुर गाँव का जल संसधान विभाग से कटाव रोधी कार्य पास हो जाने पर ग्रामीणों मे खुशी का माहौल है आज टेंडर होने पर ग्रामीणों ने भाजपा नेता प्रदेश कार्य समिति सदस्य सह सांसद प्रतिनिधि राकेश सिंह का फुल माला और अंग वस्त्र से जोरदार किया यह रोड करीब छः करोड़ कि लागत से यह कटाव रोधी कार्य होगा यह बांध बन जाने से कई गाँव के लोगो को काफी लाभ होगा इस बांध को बनवाने के लिए ग्रामीणों ने सांसद राजीव प्रताप रूडी से बहुत दिन से मांग कर रहे थे जिसको लेकर सांसद रूडी ने जल संसाधन मंत्री विजय चौधरी से बात कर कार्य करवाने की बात कही थी जिसके बाद आज उनके प्रयास से कटाव कार्य का टेंडर होने पर ग्रामीणों मे खुशी का माहौल है इस अवसर पर ' बीजेपी नेता पवन शर्मा ललित शर्मा सनी राय चंदन मिश्रा भाजपा नेता बिरजू पासवान बाबुल सिंह सहित अनेक लोग उपस्थित थे इस कार्य के लिए मंडल अध्यक्ष दीपक शर्मा और सरपंच दिलीप शर्मा ने और सभी लोगो ने इस कार्य के लिए सांसद राजीव प्रताप रूडी जी को और माननीय मंत्री विजय चौधरी को धन्यवाद दिया।

डालसा सचिव ने वृद्धाश्रम एवं बाल सुधार गृह का किया निरीक्षण

साहिबगंजः माननीय झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकार, रांची के निदेर्शानुसार तथा प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश-सह-अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकार, साहेबगंज श्री अखिल कुमार के मार्गदर्शन में आज जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव विश्वनाथ भगत ने गंगा विहार पार्क के समीप स्थित स्नेह स्पर्श वृद्धाश्रम एवं बाल सुधार गृह का निरीक्षण किया।

निरीक्षण के दौरान सचिव ने वृद्धाश्रम की समग्र स्थिति का जायजा लिया, जिसमें पेयजल सुविधा, स्वच्छता, नियमित चिकित्सीय जांच एवं भोजन व्यवस्था शामिल थी। उन्होंने वहाँ निवासरत वृद्ध महिलाओं एवं पुरुषों से संवाद कर उनकी समस्याओं और आवश्यकताओं की जानकारी ली तथा वृद्धाश्रम संचालक को सुधार हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।बाल सुधार गृह के निरीक्षण के क्रम में श्री भगत ने वहाँ रह रहे बच्चों से मुलाकात की और उनकी सुविधाओं की स्थिति से अवगत हुए।इस अवसर पर बाल संरक्षण पदाधिकारी पूनम कुमारी, लीगल एड डिफेंस काउंसिल के अमरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, पारा विधिक स्वयंसेवक (पीएलभी) समेत अन्य संबंधित पदाधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

सरकारी कार्य में बाधा डालने के आरोप में श्याम सूंदर पर केस दर्ज

रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह(औरंगाबाद) अवर प्रमंडल पदाधिकारी के बयान के आधार पर उपहारा थाना में एक प्राथमिकी दर्ज की गई है। इस प्राथमिकी में परासी गांव के स्व. राजाराम सिंह के पुत्र श्याम सूंदर सहित अन्य ग्रामीणों पर आरोप है कि उन्होंने सरकारी कार्य में बाधा उत्पन्न की और कार्य को जबरन बंद करा दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार, संबंधित सरकारी कार्य चल रहा था, लेकिन कुछ व्यक्तियों साथ जिला परिषद प्रतिनिधि श्याम सुंदर द्वारा विरोध करते हुए काम को रुकवा दिया गया। इस मामले को लेकर प्रशासन ने सख्त रुख अपनाते हुए संबंधित लोगों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है और दोषियों पर उचित कार्रवाई की बात कही गई है। प्रशासन का कहना है कि किसी भी प्रकार से सरकारी विकास कार्यों में बाधा पहुंचाना कानूनन अपराध है और ऐसी घटनाओं को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

बच्चे के हौसले को सलाम! डॉक्टर कर रहे थे सर्जरी...10 साल का अनमोल मोबाइल पर देखता रहा गणित क्लास का वीडियो

मुजफ्फरपुरः कुछ लोगों को ऑपरेशन शब्द सुनकर ही घबराहट होने लगती है, लेकिन बिहार के मुजफ्फरपुर जिले से एक अनोखा मामला सामने आया है। दरअसल, यहां एक 10 साल के बच्चे का एस–ाकेएमसीएच में ऑपरेशन चल रहा था, लेकिन बिना डरे और सहमे बच्चा इस दौरान मैथ्स क्लास का ऑनलाइन वीडियो देखता रहा। वहीं, अब इसका वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है। हालांकि, इस वायरल वीडियो की पुष्टि पंजाब केसरी नहीं करता। जानकारी के मुताबिक, मुजफ्फरपुर के एसकेएमसीएच के पीडियाट्रिक सर्जरी विभाग में मंगलवार को शिवहर जिला के रहने वाले प्रमोद कुमार के 10 वर्षीय बेटे अनमोल कुमार तरियानी का हर्निया का ऑपरेशन हुआ है। हैरानी की बात यह है कि अनमोल का लेफ्ट इनगुइनल हर्निया का ऑपरेशन चल रहा था और वह मोबाइल पर गणित की पढ़ाई का वीडियो देख रहा था। वहीं अब इसका वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है।

डॉक्टरों ने बच्चे के हौसले की तारीफ की

इधर, पीडियाट्रिक सर्जरी विभागाध्यक्ष डॉ. आशुतोष कुमार ने बच्चे के हौसले की तारीफ की है और कहा कि इस तरह का मामला कम ही देखने को मिलता है। उन्होंने कहा कि जब ऑपरेशन शुरू हुआ तो बच्चा मोबाइल स्क्रीन पर आंख गड़ाए रखा। इस दौरान डॉक्टर ने उससे पूछा कि बड़े होकर क्या बनना है तो आगे से बच्चा बोला-इंजीनियर, जिसके बाद सभी हंसने लगे।

आनंद विहार से मुजफ्फरपुर एवं बरौनी के मध्य तथा,दिल्ली से रक्सौल, श्रीमाता वैष्णो देवी कटड़ा से गुवाहाटी तथा कोयम्बत्तूर से धनबाद के मध्य 01-01 जोड़ी स्पेशल ट्रेन का परिचालन

हाजीपुरः ग्रीष्मकालीन अवकाश के अवसर पर यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ के मद्देनजर रेलवे द्वारा कई स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है ।इसी कड़ी में और 05 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है जिनका विवरण निम्नानुसार है - 1. गाड़ी संख्या 04018/04017 आनंद विहार-मुजफ्फरपुर-आनंद विहार स्पेशल (हाजीपुर-छपरा-बलिया-गाजीपुर सिटी-जौनपुर के रास्ते): गाड़ी संख्या 04018 आनंद विहार-मुजफ्फरपुर स्पेशल 01 से 29 मई, 2025 तक प्रत्येक गुरूवार को आनंद विहार से 09.00 बजे खुलकर शुक्रवार को 04.30 बजे मुजफ्फरपुर पहुंचेगी ।वापसी में गाड़ी संख्या 04017 मुजफ्फरपुर-आनंद विहार स्पेशल 02 से 30 मई, 2025 तक प्रत्येक शुक्रवार को मुजफ्फरपुर से 06.15 बजे खुलकर शनिवार को 03.10 बजे आनंद विहार पहुंचेगी । 2. गाड़ी संख्या 04020/04019 आनंद विहार-बरौनी-आनंद विहार स्पेशल (हाजीपुर-छपरा-बलिया-गाजीपुर सिटी-वाराणसी के रास्ते): गाड़ी संख्या 04020 आनंद विहार-बरौनी स्पेशल 04 मई से 06 जुलाई, 2025 तक प्रत्येक रविवार को आनंद विहार से 19.30 बजे खुलकर सोमवार को 18.00 बजे बरौनी पहुंचेगी । वापसी में गाड़ी संख्या 04019 बरौनी-आनंद विहार स्पेशल 05 मई से 07 जुलाई, 2025 तक प्रत्येक सोमवार को बरौनी से 20.00 बजे खुलकर मंगलवार को 19.00 बजे आनंद विहार पहुंचेगी । 3. गाड़ी संख्या 04026/04025 दिल्ली-रक्सौल-दिल्ली स्पेशल (नरकटियागंज-गोरखपुर-सीतापुर-बरेली के रास्ते): गाड़ी संख्या 04026 दिल्ली-रक्सौल स्पेशल 08 मई से 10 जुलाई, 2025 तक प्रत्येक गुरूवार को दिल्ली से 23.05 बजे खुलकर शुक्रवार को 19.00 बजे रक्सौल पहुंचेगी । वापसी में गाड़ी संख्या 04025 रक्सौल-दिल्ली स्पेशल 09 मई से 11 जुलाई, 2025 तक प्रत्येक शुक्रवार को रक्सौल से 22.00 बजे खुलकर शनिवार को 17.45 बजे दिल्ली पहुंचेगी । 4. गाड़ी संख्या 04606/04605 श्रीमाता वैष्णो देवी कटड़ा-गुवाहाटी-श्रीमाता वैष्णो देवी कटड़ा स्पेशल (कटिहार-बरौनी-हाजीपुर-छपरा-बलिया-गाजीपुर सिटी-लखनऊ-यमुनानगर जगाधरी के रास्ते): गाड़ी संख्या 04606 श्रीमता वैष्णो देवी कटड़ा-गुवाहाटी स्पेशल 02 मई से 30 मई, 2025 तक प्रत्येक शुक्रवार को श्रीमता वैष्णो देवी कटड़ा से 21.30 बजे खुलकर रविवार को 01.40 बजे हाजीपुर एवं 03.25 बजे बरौनी रूकते हुए 20.20 बजे गुवाहाटी पहुंचेगी । वापसी में गाड़ी संख्या 04605 गुवाहाटी-श्रीमता वैष्णो देवी कटड़ा स्पेशल 05 मई से 02 जून, 2025 तक प्रत्येक सोमवार को गुवाहाटी से 23.00 बजे खुलकर मंगलवार को 13.30 बजे बरौनी एवं 15.40 बजे हाजीपुर सहित अन्य स्टेशनों पर रूकते हुए बुधवार को 20.45 बजे श्रीमता वैष्णो देवी कटड़ा पहुंचेगी । 5. गाड़ी संख्या 06063/06064 कोयम्बत्तूर-धनबाद-कोयम्बत्तूर स्पेशल (बोकारो-रांची-राउरकेला-सम्बलपुर-पेरम्बूर-काटापाडी के रास्ते): गाड़ी संख्या 06063 कोयम्बत्तूर-धनबाद स्पेशल 02 मई से 23 मई, 2025 तक प्रत्येक शुक्रवार को कोयम्बत्तूर से 11.50 बजे खुलकर रविवार को 08.30 बजे धनबाद पहुंचेगी । वापसी में गाड़ी संख्या 06064 धनबाद-कोयम्बत्तूर स्पेशल 05 मई से 26 मई, 2025 तक प्रत्येक सोमवार को धनबाद से 06.00 बजे खुलकर बुधवार को 03.45 बजे कोयम्बत्तूर पहुंचेगी । गाड़ी सं. 09623/09624 उदयपुर सिटी-फारबिसगंज-उदयपुर सिटी स्पेशल का परिचालन अवधि में विस्तार - इसके साथ ही पूर्णिया-कटिहार-बरौनी-हाजीपुर-पाटलिपुत्र-डीडीयू के रास्ते उदयपुर और फरबिसगंज के मध्य चलायी जा रही गाड़ी सं. 09623/09624 उदयपुर सिटी-फारबिसगंज- उदयपुर सिटी स्पेशल का परिचालन अवधि में 04 फेरे का विस्तार किया गया है । गाड़ी सं. 09623 उदयपुर सिटी-फारबिसगंज स्पेशल 06.05.2025 से 27.05.2025 तक प्रत्येक मंगलवार को तथा गाड़ी सं. 09624 फारबिसगंज-उदयपुर सिटी स्पेशल 08.05.2025 से 29.05.2025 तक प्रत्येक गुरूवार को परिचालित की जायेगी ।

भागलपुर और मुंगेर में प्रशांत किशोर की जन उद्घोष यात्रा आज

नवगछिया और हवेली खड़गपुर में पीके करेंगे जनसभा को संबोधित

जन सुराज पार्टी की ओर से पीके के कार्यक्रम को लेकर तैयारी जोरों पर

पवन कुमार चौधरी

भागलपुर/मुंगेर। जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर गुरुवार को मुंगेर जिला अंतर्गत हवेली खड़गपुर स्थित आरएसके उच्च विद्यालय के खेल मैदान में पहुंच रहे हैं। प्रशांत किशोर इन दिनों जन उद्घोष यात्रा के तहत बिहार के सभी जिलों में विधानसभा स्तर पर तथा प्रखंड स्तर पर लोगों के बीच पहुंचकर उनसे संवाद स्थापित कर रहे हैं। इसी कड़ी में प्रशांत किशोर हवेली खड़गपुर के आरएसके ग्राउंड से मुंगेर जिला के तारापुर विधानसभा क्षेत्र, मुंगेर विधानसभा क्षेत्र तथा जमालपुर विधानसभा क्षेत्र की आम जनता से सीधा संवाद करेंगे। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए जन सुराज पार्टी के प्रदेश कोर कमेटी सदस्य निरंजन निषाद एवं प्रणव कुमार ने बताया कि जन उद्घोष यात्रा के तहत प्रशांत किशोर 1 मई को भागलपुर और मुंगेर जिला में पार्टी की ओर से आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर चुनावी तैयारी का शंखनाद करेंगे। जन सुराज पार्टी के हवेली खड़गपुर प्रखंड अध्यक्ष गौरव कुमार, राजा राम पासवान, महिला अध्यक्ष सरोजनी देवी ने बताया कि विगत 11 अप्रैल को पटना के गांधी मैदान में बिहार बदलाव रैली की सफलता को बिहार के सभी 38 जिले में विधानसभा तक तथा प्रखंड स्तर पर दोहराने की तैयारी चल रही है। प्रशांत किशोर की विचारधारा से आज बिहार की आम जनता जुड़ना चाहती है। इसी के तहत प्रशांत किशोर की जन उद्घोष यात्रा भागलपुर के नवगछिया प्रखंड अंतर्गत साहू परबत्ता स्थित साहू उच्च विद्यालय खेल मैदान में पहुंचेगी। जहां से जनसभा को संबोधित करने के बाद प्रशांत किशोर की जन उद्घोष यात्रा भागलपुर से असरगंज और तारापुर होते हुए हवेली खड़गपुर के आरएसके उच्च विद्यालय खेल मैदान पहुंचेगी। आरएसके खेल मैदान में प्रशांत किशोर की ऐतिहासिक जनसभा होगी। इस कार्यक्रम को लेकर पार्टी की ओर से तैयारी जोर-शोर से की जा रही है।

पीएम श्री अनुग्रह मध्य विद्यालय के बच्चे अब पियेंगे शीतल जल

डॉ प्रभात एवं डॉ शशि ने पेश किया सामुदायिक भागीदारी का अनुपम मिशाल

रिपोर्ट- प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिला मुख्यालय स्थित पीएम श्री अनुग्रह मध्य विद्यालय में बढ़ते गर्मी से बेहाल बच्चे अब 40/80 लीटर क्षमता की अत्याधुनिक टाटा कंपनी के वाटर कूलर से ठंडा पानी प्राप्त कर सकेंगे। विद्यालय के प्राचार्य उदय कुमार सिंह की सहज पहल पर शहर के प्रतिष्ठित डॉक्टर दंपति डॉ शशि एवं डॉ प्रभात ने तत्काल विद्यालय को अस्सी लीटर क्षमता वाला वोल्टास कंपनी का वाटर कूलर,स्टेबलाइजर आदि मुहैया करा दिए। प्राचार्य ने विद्यालय के बच्चों के लिए इनकी मदद को सामुदायिक भागीदारी का एक बेजोड़ नजीर बताया ।सरकारी विद्यालय के आस पास के लोग अनेक प्रकार से अपनी यथोचित भागीदारी कर विद्यालय को समृद्ध बना सकते है जिसके लिए एसीएस शिक्षा विभाग डॉ सिद्धार्थ भी प्रायः अपील किया करते हैं। प्राचार्य उदय कुमार सिंह ने जानकारी देते हुए कहा कि डॉ प्रभात मिश्रा के पिताजी श्री दिनेश मिश्रा जी लंबी अवधि तक अनुग्रह मध्य विद्यालय में एक आदर्श अध्यापक के रूप में ख्यातिलब्ध रहे हैं। इस कारण डॉ प्रभात प्रायः अपनी डॉक्टर पत्नी शशि मिश्रा के साथ विद्यालय आते रहते हैं और बच्चों के बीच बैठ बेहतर स्वास्थ के लिए सेशन करते रहते हैं। पिता की कर्मस्थली पर बच्चों के लिए हेडमास्टर के अनुरोध पर कुछ कर सकते का उन्हें बहुत संतोष है। प्राचार्य उदय कुमार सिंह ने कहा कि अनुग्रह स्कूल लगभग नब्बे साल पुराना विद्यालय है और इसे आजादी के पूर्व जन भागीदारी के द्वारा ही भारतीय संस्कृति के अनुरूप शिक्षा देने के लिए बनवाया गया था।आज विद्यालय में समाज से संपोषित कई अच्छी व्यवस्थाएं है जिससे विद्यालय तेजी से मुख्य धारा में लौटा है। प्राचार्य उदय कुमार सिंह सहित विद्यालय परिवार ने डॉक्टर दंपति के प्रति कृतज्ञता जताया है।

गोह पुलिस की छापेमारी में बहुरिया बर्मा गांव से शराब धंधेबाज गिरफ्तार

रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह (औरंगाबाद)। गोह पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए बहुरिया बर्मा गांव में छापेमारी कर एक शराब धंधेबाज को रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। थानाध्यक्ष मो. इरसाद ने बताया कि गिरफ्तार व्यक्ति की पहचान गांव निवासी बिजय यादव के पुत्र एडवानी यादव के रूप में की गई है। पुलिस को सूचना मिली थी कि आरोपी झखड़िया बाबा स्थान के समीप शराब बेच रहा है। तत्काल एक टीम गठित कर मौके पर छापेमारी की गई, जिसमें आरोपी को डेढ़ लीटर अंग्रेजी शराब के साथ धर दबोचा गया। पुलिस ने मौके से शराब जब्त कर आरोपी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करते हुए उसे जेल भेज दिया है। थानाध्यक्ष ने बताया कि अवैध शराब बिक्री के खिलाफ अभियान आगे भी जारी रहेगा।

प्रशांत ने जमुई में भरी हुंकार, बोले

नीतीश चचा को हटाना है इस बार

भूमि सर्वे और दाखिल खारिज में जमकर हो रहा भ्रष्टाचार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर प्रशांत किशोर का हमला, बोले - बिहार के लोगों ने गुजरात के विकास की कहानी सुनकर मोदी जी को वोट दिया,

गुजरात में फैक्ट्रियां लग रही है और बिहार के बच्चे वहां जाकर मजदूरी कर रहे हैं

दिव्य दिनकर बिहार उप-प्रभारी पवन कुमार चौधरी

जमुई। जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर जन सुराज उद्घोष यात्रा के तहत आज जमुई और बांका के एक दिवसीय दौरे पर पहुंचे। उन्होंने जमुई के श्री कृष्ण सिंह मेमोरियल स्टेडियम में उपस्थित हजारों लोगों की जनसभा को संबोधित किया। जनसभा को संबोधित करते हुए प्रशांत किशोर ने नीतीश कुमार पर बड़ा राजनीतिक हमला बोला और कहा कि नीतीश कुमार भ्रष्टाचार के मुखिया हैं। उन्होंने कहा कि बिहार में अधिकारी और नेता राशन कार्ड बनाने के लिए दो हजार और जमीन की रसीद कटाने के लिए दस हजार रुपये रिश्वत ले रहे हैं, जिससे आम लोग परेशान हैं। इसके साथ ही प्रशांत किशोर ने प्रधानमंत्री मोदी पर हमला करते हुए कहा कि मोदी जी बिहार की जनता से वोट लेकर गुजरात में फैक्ट्री लगा रहे हैं। पूरे देश का पैसा लेकर गुजरात के गांव-गांव में फैक्ट्री लगाई जा रही हैं और जमुई के बच्चे वहां जाकर मजदूरी करने को मजबूर हैं। उन्होंने जनता से पूछा कि जब वोट आपका है तो फैक्ट्री कहां लगनी चाहिए, गुजरात में या बिहार में? इसके साथ ही प्रशांत किशोर ने जनता से अपील की कि इस बार उन्हें अपने बच्चों के लिए वोट देना है। इस बार वोट नेता का चेहरा देखकर नहीं, अपने बच्चों का चेहरा देखकर देना है। इस बार वोट जाति धर्म पर नहीं, अपने बच्चों की शिक्षा और रोजगार के लिए देना है। इस बार लालू, नीतीश, मोदी नहीं बल्कि जनता का राज लाना है।

टेबल क्विज प्रतियोगिता में बच्चों ने दिखाई गणनात्मक प्रतिभा जेनिथ क्रैश एकेडमी औरंगाबाद

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :जिला मुख्यालय स्थित जेनिथ क्रैश एकेडमी में दिनांक 30 अप्रैल 2025 को ह्यटेबल क्विज प्रतियोगिताह्न का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य बच्चों में गणनात्मक कौशल, स्मरण शक्ति और मंच पर आत्मविश्वास को बढ़ावा देना था। प्रतियोगिता दो वर्गों में आयोजित की गई – जूनियर वर्ग (नर्सरी से यूकेजी) और सीनियर वर्ग (कक्षा 1 से 5 तक)। बच्चों ने 2 से 20 तक पहाड़े संबंधित राउंड्स में भाग लिया, जिनमें तेजी, सटीकता और समझ को परखा गया। इस आयोजन में कुल 76 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। जूनियर वर्ग से रौशनी कुमारी और सीनियर वर्ग के अंतिम राउंड में वंश परमार, आयुष कुमार एवं साहिल सिद्दीकी विजेता घोषित किए गए। प्रतियोगिता का समापन पुरस्कार वितरण एवं सहभागिता प्रमाण पत्र के साथ हुआ। बच्चों के प्रदर्शन को देखते हुए यह स्पष्ट हुआ कि प्रारंभिक कक्षाओं में ही यदि तार्किक दक्षता को प्रोत्साहित किया जाए, तो बालमन बड़े कौशल के साथ सीख सकता है। विद्यालय द्वारा दी गई पूर्व सूचना के कारण अभिभावकों की भागीदारी भी सराहनीय रही। यह गतिविधि न केवल शैक्षिक थी बल्कि विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और सहयोग भावना को बढ़ाने वाली रही। गणित को खेल और प्रतियोगिता के रूप में प्रस्तुत करने का यह प्रयास बच्चों और शिक्षकों – दोनों के लिए उत्साहवर्धक सिद्ध हुआ। इस अवसर पर शिक्षिका आस्था प्रिया, रानी शर्मा, खुशबू शर्मा, रागनी कुमारी , अंजलि सिंह तथा हर्षित पाठक मौजूद रहें।

चिराग पासवान से मिलीं दिल्ली पैरा ओलंपिक कमेटी की अध्यक्ष पारुल सिंह

अंतरराष्ट्रीय पैरा गेम्स में किया आमंत्रित

नई दिल्ली, ।दिल्ली स्टेट पैरा ओलंपिक कमेटी की अध्यक्ष पारुल सिंह ने मंगलवार को खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री चिराग पासवान से उनके कार्यालय में मुलाकात कर उन्हें आगामी अंतरराष्ट्रीय पैरा गेम्स में शामिल होने का निमंत्रण दिया। इस बार पैरा गेम्स 26 सितंबर से 7 अक्टूबर 2025 तक नई दिल्ली में आयोजित की जाएगी। यह आयोजन भारत की राजधानी में होने वाला अब तक का सबसे बड़ा पैरा खेल आयोजन होगा, जिसमें 115 से अधिक देश भाग लेंगे।इस मुलाकात के दौरान पारुल सिंह के साथ पैरा ओलंपिक कमेटी के राष्ट्रीय महासचिव सत्य बाबू, दिल्ली सचिव राहुल कसाना, कमेटी सदस्य ललित, और वरिष्ठ पत्रकार राकेश कुमार भी मौजूद रहे।बैठक में खास तौर पर पैरा खिलाड़ियों के

पोषण और सहयोग को लेकर मंत्रालय और कमेटी के बीच संभावित सहयोग पर चर्चा हुई। पारुल सिंह ने मंत्री को बताया कि कमेटी किस तरह से खिलाड़ियों के लिए बेहतर संसाधन और सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए लगातार काम कर रही है।बिहार से आने वाले श्री चिराग पासवान ने कमेटी के विजन और प्रयासों की सराहना की और कहा कि इस तरह की पहलें दिल्ली के साथ-साथ बिहार और अन्य राज्यों के पैरा खिलाड़ियों को भी लाभ पहुंचा सकती हैं।पारुल सिंह ने कहा, ह्यहम एक ऐसा माहौल तैयार करना चाहते हैं जहां पैरा खिलाड़ियों को सही पोषण, बेहतर ट्रेनिंग और जरूरी सुविधाएं मिलें। मैं श्री चिराग पासवान जी का धन्यवाद करती हूं कि उन्होंने समय निकालकर हमसे मुलाकात की और हमारे प्रयासों में रुचि दिखाई।

बिहारः फोटो स्कैन कर स्कूल में लगाई जा रही थी फर्जी उपस्थिति, शिक्षक पर FIR की तैयारी

पटनाःबिहार के शिक्षा विभाग ने ई-शिक्षाकोष एप पर फर्जी उपस्थिति दर्ज कराने की गंभीर शिकायत के बाद एक अहम निर्देश जारी किया है। यह मामला मुंगेर जिले के हवेली खड़गपुर प्रखंड के मिस्त्री टोला दुलारपुर प्राथमिक विद्यालय से जुड़ा है, जहां शिक्षक राजेश कुमार पर आरोप है कि वे विद्यालय आए बिना उपस्थिति दर्ज करा रहे थे। जानकारी के अनुसार, राजेश कुमार की हाजिरी विद्यालय से सम्बद्ध टोला सेवक द्वारा की जाती थी। ई-शिक्षाकोष एप पर जांच में सामने आया कि फरवरी, मार्च और अप्रैल 2025 में उनकी उपस्थिति के साथ कोई वास्तविक फोटो अपलोड नहीं हुआ। तकनीकी जांच में यह भी पाया गया कि उनका पासपोर्ट साइज फोटो स्कूल में रखा गया था, जिसे स्कैन कर अन्य शिक्षक उनकी अनुपस्थिति में अपलोड कर देते थे। शिक्षा विभाग ने इसे संज्ञेय अपराध मानते हुए कहा है

आनंदीबेन पटेल की पुस्तक 'चुनौतियां मुझे पसंद हैं' का विमोचन 1 मई को करेंगे उपराष्ट्रपति

एजेंसी

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ अपने एक दिवसीय दौरे पर 1 मई को लखनऊ आ रहे हैं। उपराष्ट्रपति धनखड़ यहां एक समारोह में उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल की लिखित पुस्तक 'चुनौतियाँ मुझे पसंद हैं' का विमोचन करेंगे इस संबंध में उपराष्ट्रपति सचिवालय की ओर से उत्तर प्रदेश राजभवन को यह सूचना दी गई है। कार्यक्रम के लिए स्वीकृति मिलते ही राजभवन में तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। उपराष्ट्रपति के स्वागत में शहर के प्रमुख भवनों को सजाया जा रहा है।

रिजिजू ने दी हज यात्रा के लिए शुभकामनाएं

नई दिल्ली। केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने पवित्र हज यात्रा पर जाने वाले सभी 1,22,518 तीर्थयात्रियों को हार्दिक शुभकामनाएं दीं हैं। पहली उड़ान लखनऊ से 288 और हैदराबाद से 262 तीर्थयात्रियों के साथ रवाना हुई। अपने एक्स पोस्ट में केंद्रीय मंत्री ने ट्वीट किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार एक सुचारू और निर्बाध हज यात्रा सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने एक सुरक्षित और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध तीर्थयात्रा के लिए भी प्रार्थना की।

एटीएम कार्ड बदलकर ठगी करने वाले आरोपी 39 कार्ड के साथ गिरफ्तार

नई दिल्ली। मानसरोवर पार्क थाना पुलिस ने एटीएम कार्ड बदलकर ठगी करने वाले एक बदमाश को गिरफ्तार किया है। आरोपित फिरोज उर्फ मोनू के पास से 39 लोगों के एटीएम कार्ड बरामद किए गए हैं। आरोपित पर इसी तरह के दर्जनों केस दर्ज हैं। शाहदरा जिले के डीसीपी प्रशांत गौतम ने बताया कि 13 अप्रैल को मानसरोवर पार्क थाने में बाबू राम ने अपने साथ एटीएम कार्ड बदलकर 60 हजार रुपए की ठगी की शिकायत दी। एसआई अमित बेनीवाल, एसआई संदीप बिश्नोई की टीम ने केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू की। पीड़ित ने बताया कि वह चंद्रलोक कॉलोनी में स्थित पीएनबी बैंक के एटीएम में गया था। जहां उसक कार्ड एक शख्स ने कार्ड बदल दिया। टीम ने घटनास्थल से सीसीटीवी फुटेज की समीक्षा करके आरोपी की पहचान की। आरोपित की पहचान होने के बाद पुलिस टीम ने उसे 21 अप्रैल को नश बंदी कॉलोनी, लोनी, गाजियाबाद से गिरफ्तार कर लिया। आरोपित ने बताया कि वह अपने साथी फरमान और ओन्नू कार्ड बदलता है और ठगी करता है। फिलहाल पुलिस बाकि आरोपितों की तलाश में छापेमारी कर ही है।

महिला संबंधी विषयों पर अभाविप के प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय मंत्री को सौंपा ज्ञापन

नई दिल्ली। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के एक प्रतिनिधि मंडल ने केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी से मुलाकात कर महिलाओं एवं छात्राओं से जुड़े विभिन्न विषयों पर एक 13 सूत्रीय ज्ञापन सौंपा। यह ज्ञापन 10 मार्च 2025 को नई दिल्ली में आयोजित छात्रा संसद में देशभर से आए 300 से अधिक छात्रा प्रतिनिधियों द्वारा विस्तृत की गई विस्तृत चर्चा एवून संवाद के आधार पर तैयार किया गया है इस संसद में शिक्षा, सुरक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, आत्मरक्षा, आर्थिक सहायता, लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण जैसे प्रमुख विषयों पर व्यापक चर्चा हुई। उसी चर्चा के निष्कर्षस्वरूप यह ज्ञापन तैयार कर भारत सरकार को प्रस्तुत किया गया है, ताकि महिलाओं और छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए नीतिगत स्तर पर प्रभावी पहल की जा सके। अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. वीरेंद्र सिंह सोलंकी ने कहा, देश की छात्राएं और महिलाएं न केवल वर्तमान भारत की रीढ़ हैं, बल्कि भविष्य के भारत की दिशा भी निर्धारित करती हैं। शिक्षा परिसरों से लेकर समाज के हर क्षेत्र में उनकी सुरक्षा, सम्मान और सशक्तिकरण सुनिश्चित करना हमारी प्राथमिक ज़िम्मेदारी है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का यह 13 सूत्रीय ज्ञापन केवल मांगों की सूची नहीं, बल्कि छात्राओं की ज़मीनी चुनौतियों का प्रतिबिंब और उनके समाधान का ठोस खाका है। हम अपेक्षा करते हैं कि केंद्र सरकार इन सुझावों पर गंभीरता से विचार कर शीघ्र अति शीघ्र प्रभावी कदम उठाएगी।

गाजियाबाद नगर निगम ने देश के पहले प्रमाणित ग्रीन म्युनिसिपल बॉन्ड के जरिए जल प्रबंधन में अग्रणी भूमिका निभाई

एजेंसी

नई दिल्ली। स्वच्छ भारत मिशन-शहरी के तहत गाजियाबाद (उप्र) ने देश के पहले प्रमाणित ग्रीन म्युनिसिपल बॉन्ड को सफलतापूर्वक जारी करके संधारणीय बुनियादी ढांचे और शहरी लचीलेपन को बढ़ावा देने में एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। इससे अत्याधुनिक तृतीयक सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (टीएसटीपी) के विकास के लिए 150 करोड़ जुटाए गए हैं। आवास एवं शहरी मामलों का मंत्रालय ने एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी। मंत्रालय ने कहा कि यह सिर्फ़ एक और बुनियादी ढांचा परियोजना नहीं बल्कि एक गेम-चेंजर है, जो गाजियाबाद की अपने नागरिकों के लिए एक संधारणीय भविष्य बनाने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। निधियों को एक उन्नत टीएसटीपी के विकास की दिशा में निर्देशित किया गया है, जो एक अत्याधुनिक सुविधा है। इसे अभूतपूर्व पैमाने पर अपशिष्ट जल का उपचार और पुनः उपयोग करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। ग्रीन म्युनिसिपल बॉन्ड ने भारत के वित्तीय परिदृश्य में एक नया अध्याय लिखा, जो शहरी बुनियादी ढांचे के वित्तपोषण के लिए एक संधारणीय

मॉडल प्रदान करता है। केंद्र सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार के समर्थन से यह परियोजना सिर्फ़ एक जल उपचार सुविधा से कहीं अधिक है। यह भारत भर के भविष्य के शहरों के लिए वित्तीय अनुशासन को पर्यावरणीय जिम्मेदारी के साथ जोड़ने का खाका है। इस पहल के केंद्र में तृतीयक सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (टीएसटीपी) है, जो एक तकनीकी चमत्कार है, जो माइक्रोफिल्ट्रेशन, अल्ट्राफिल्ट्रेशन, नैनोफिल्ट्रेशन और रिवर्स ऑस्मोसिस (आरओ) सहित उन्नत मेम्ब्रेन फिल्ट्रेशन तकनीकों का उपयोग करता है। ये अत्याधुनिक तकनीकें यह सुनिश्चित करने के लिए एक साथ काम करती हैं कि उपचारित पानी उच्चतम मानकों को पूरा करता है, जिससे यह औद्योगिक प्रक्रियाओं में पुनः उपयोग के लिए उपयुक्त हो जाता है। 40 एमएलडी की उपचार क्षमता के साथ टीएसटीपी एक विशाल 95 किलोमीटर पाइपलाइन नेटवर्क से जुड़ा हुआ है, जो गाजियाबाद में 1,400 से अधिक औद्योगिक इकाइयों को उपचारित पानी पहुंचाता है। यह प्लांट सुनिश्चित करता है कि अपशिष्ट जल अब बर्बाद न हो, बल्कि इसके बजाय एक मूल्यवान संसाधन में बदल जाए, जो शहर के औद्योगिक क्षेत्र का समर्थन करता है। इससे मीठे पानी के स्रोतों पर निर्भरता कम होती है। टीएसटीपी को पब्लिक-प्राइवेट हाइब्रिड एन्युइटी मॉडल के तहत विकसित किया गया था, जिसमें 40व नगरपालिका निधि थी। इस सार्वजनिक-निजी भागीदारी दृष्टिकोण ने वित्तीय अनुशासन सुनिश्चित करते हुए परियोजना के कार्यान्वयन को सुव्यवस्थित करने में मदद की। ग्रीन बॉन्ड जारी करने के माध्यम से 150 करोड़ रुपये जुटाने में गाजियाबाद नगर निगम की सफलता ने शहर के सतत दृष्टिकोण में निवेशकों के विश्वास को प्रदर्शित किया और शहरी स्थानीय निकाय में वित्तीय पारदर्शिता और अनुशासन का एक नया स्तर लाया है।

पद्म पुरस्कार विजेताओं ने राष्ट्रीय समर स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित की

एजेंसी

नई दिल्ली। वर्ष 2025 के 71 पद्म पुरस्कार विजेताओं ने राष्ट्रीय समर स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित की। राष्ट्रीय समर स्मारक पर निर्देशित दौरे पर पहुंचे 2025 के प्रतिष्ठित पद्म पुरस्कार विजेता वहां वीरता चक्र में भित्ति चित्रों पर दर्शाए गए युद्धों में बहादुरों की वीरता की कहानियों से अचंभित रह गए। उन्होंने स्मारक की भव्यता और वैचारिक डिजाइन की भी सराहना की। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने सोमवार को राष्ट्रपति भवन के गणतंत्र मंडप में आयोजित नागरिक अलंकरण समारोह-1 में वर्ष 2025 के लिए 4 पद्म विभूषण, 10 पद्म भूषण और 57 पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किए।

इनमें बिहार के दिवंगत पूर्व उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी, गायक पंकज उधास, सुजुकी मोटर के पूर्व प्रमुख ओसामु सुजुकी और शेखर कपूर आदि प्रमुख थे। इस साल 139 व्यक्तियों का चयन पद्म पुरस्कारों के लिए किया गया था। प्रथम चरण में 71 विभूतियों को सम्मानित किया गया।

कांग्रेस के विवादित पोस्ट पर भाजपा हमलावर, कहा- आतंकी हमले में पाकिस्तान का साथ दे रही कांग्रेस

एजेंसी

नई दिल्ली। भाजपा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को निशाना बनाने वाले कांग्रेस के एक्स पर विवादित पोस्ट को लेकर उस पर निशाना साधा है। भाजपा ने कांग्रेस पर पाकिस्तान का साथ देने का आरोप लगाया है। भाजपा प्रवक्ता गौरव भाटिया ने पार्टी मुख्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि कांग्रेस पाकिस्तान को संकेत दे रही है कि इस आतंकी हमले में वह पाकिस्तान के साथ खड़ी है, न कि अपने देश के साथ। यह कांग्रेस द्वारा किया गया कोई मासूम पोस्ट नहीं है। यह हमारे देश की अखंडता को कमजोर करने और प्रधानमंत्री मोदी को निशाना बनाने की एक भयावह, जहरीली साजिश है। उन्होंने कहा कि हम सब जानते हैं कि पहलगाम में आतंकी हमला हुआ। भाटिया ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने बड़ी स्पष्टता से कहा कि आतंकियों को नेस्तनाबूद कर दिया जाएगा और उनके आकाओं को ऐसा सबक सिखाया जाएगा कि वो जीवन भर याद रखेंगे। उन्होंने कहा कि भारत की पूरी शक्ति जिसमें प्रधानमंत्री मोदी का नेतृत्व, हमारी वीर सेना की ताकत और 140 करोड़ भारतीयों की शक्ति, दुआएं और प्रार्थना शामिल है, वो आज एक लक्ष्य के साथ कार्य कर रहे हैं। भाजपा प्रवक्ता भाटिया ने कहा कि एक ऐसा भारतीय राजनीतिक दल भी है, जो हमारे बीच रहता है, लेकिन अगर उसे लश्कर-ए-पाकिस्तान कांग्रेस कहा जाए, तो गलत नहीं होगा। प्रधानमंत्री मोदी ने दृढ़ता से कहा है कि आतंकियों का सफाया किया जाएगा और उन्हें समर्थन देने वाले देश को उसकी कल्पना से परे सजा दी जाएगी। इस मुद्दे पर पूरा देश एकजुट है। हालांकि, एक तथाकथित राष्ट्रीय पार्टी दुश्मन ताकतों के साथ गठबंधन करती दिख रही है। इसे लश्कर-ए-पाकिस्तान कांग्रेस कहना पूरी तरह से अनुचित नहीं होगा। प्रधानमंत्री मोदी जो भारत के हर नागरिक के लिए सुरक्षा की चट्टान हैं, उस चट्टान को तोड़ने की आज कांग्रेस कोशिश कर रही है। कांग्रेस में बिना राहुल गांधी की सहमति के पत्ता तक नहीं हिलता। राहुल गांधी के कहने पर ही ऐसे पोस्ट किए जाते हैं। भाटिया ने कहा कि पाकिस्तान और कांग्रेस की जुगलबंदी को लगता है कि वो भारतीय सरकार को कमजोर कर सकते हैं और हमारी सेना का मनोबल तोड़ सकते हैं। उन्होंने कहा कि हमारी सेना का मनोबल हिमालय से भी ऊंचा है। हमारी सरकार और हमारे देश का मनोबल चट्टान की तरह मजबूत है और किसी में भी इस समय इतना दम नहीं है कि वह देश का मनोबल तोड़ना तो दूर, कम भी कर सके।

दिल्ली में नहीं चलेगी प्राइवेट स्कूलों की मनमानी, कैबिनेट ने दी फीस बिल को मंजूरी

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली की रेखा गुप्ता सरकार ने स्कूल फीस बिल को मंजूरी दी। सीएम रेखा गुप्ता ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए खुद यह जानकारी दी। इस बिल के लागू होने के बाद दिल्ली में प्राइवेट स्कूलों की फीस बढ़ाने की मनमानी पर रोक लग जाएगी। पिछले कुछ दिनों से मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता से अभिभावक मिलकर इस बात की शिकायत कर रहे थे। अब जल्द ही विधानसभा में इसे कानून की शक्ल दी जाएगी। एक अर्जेंट सत्र बुलाकर इस बिल को प्रस्तुत किया जाएगा। सीएम रेखा गुप्ता ने प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा कि जिन अभिभावकों ने बताया है कि हमारे बच्चों के साथ दुर्व्यवहार किया जा रहा है और फीस के लिए अनावश्यक दबाव डाला जा रहा है, उनकी जांच के लिए हमने अपने जिला अधिकारियों को स्कूलों में भेजा। सीएम ने कहा कि 1973 के दिल्ली स्कूल एक्ट में फीस को लेकर एक सेक्शन 17(3) है, जिसमें ऐसी कोई गाइडलाइन नहीं थी कि प्राइवेट स्कूलों की फीस न बढ़े और जिसके लिए सरकार के पास क्या ताकत है और क्या प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए। 1973 से लेकर आज तक इस पर कोई प्रावधान नहीं हुआ कि स्कूलों पर लगाम कैसे लगाई जाए। लेकिन आज मुझे आप सभी को यह बताते हुए खुशी हो रही है कि दिल्ली सरकार ने एक ऐतिहासिक और साहसिक फैसला लिया है। आज हमने कैबिनेट में ड्राफ्ट बिल पास किया है, जिसमें सभी प्राइवेट स्कूलों में फीस को लेकर पूरी गाइडलाइन तय की जाएगी और इतिहास में पहली बार दिल्ली

सरकार द्वारा ऐसा बिल तैयार किया जा रहा है, जो अपने आप में फुल प्रूफ है। सीएम ने कहा कि अब माता-पिता को अपनी शिकायतों के लिए किसी के दरवाजे पर जाने या आंसू बहाने की जरूरत नहीं होगी। एक अर्जेंट सत्र बुलाकर इस बिल को प्रस्तुत किया जाएगा।

विशाखापत्तनम मंदिर हादसे में 8 श्रद्धालुओं की मौत, पीएम मोदी ने जताया दुख, मृतकों और घायलों के लिए मुआवजे का ऐलान

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आंध्र प्रदेश के लक्ष्मी नरसिंह स्वामी मंदिर में हुए हादसे पर दुख जताया। उन्होंने हादसे में मारे गए लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त की। साथ ही मृतक और घायलों के लिए मुआवजे की भी घोषणा की। प्रधानमंत्री कार्यालय ने पीएम मोदी के बयान के हवाले से एक्स पर एक पोस्ट शेयर कर लिखा, 'आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में दीवार गिरने से हुई मौतों से बहुत दुखी हूं। जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है, उनके प्रति संवेदना। घायलों के जल्द स्वस्थ होने की कामना करता हूं। प्रत्येक मृतक के परिजनों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष (पीएमएनआरएफ) से 2 लाख रुपए की अनुग्रह राशि दी जाएगी। इसके अलावा घायलों को 50 हजार रुपए दिए जाएंगे। इससे पहले आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने लक्ष्मी नरसिंह स्वामी मंदिर में हुए हादसे पर दुख जताया था। साथ ही उन्होंने इस घटना में मारे गए लोगों के परिवारों के प्रति संवेदनाएं व्यक्त की। मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने एक्स पर लिखा, श्री वराह लक्ष्मी नरसिंह स्वामी के चंदनोत्सव के दौरान दीवार गिरने से श्रद्धालुओं की मौत से मैं बहुत दुखी हूं। भारी बारिश के कारण

नरसिंह स्वामी मंदिर में दीवार गिरने से तीन महिलाओं समेत 8 श्रद्धालुओं की मौत पर दुख जताया था। साथ ही उन्होंने इस घटना में मारे गए लोगों के परिवारों के प्रति संवेदनाएं व्यक्त की। मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने एक्स पर दीवार गिरने से हुई इस घटना में मारे गए लोगों के परिवारों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं। मैंने वहां के हालात के बारे में जिला कलेक्टर और एसपी से बात की है। मैंने घायलों को इलाज मुहैया कराने के आदेश दिए हैं। मैं समय-समय पर स्थिति की समीक्षा कर रहा हूं। शुरू होने वाले वार्षिक उत्सव चंदनोत्सवम के दौरान दर्शन के लिए टिकट खरीदने के लिए कतार में खड़े श्रद्धालुओं पर दीवार गिर गई। राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ) के जवान मौके पर पहुंचे और पुलिस तथा अन्य विभागों की मदद से बचाव अभियान शुरू किया। अधिकारियों ने बताया कि मलबे से आठ शवों को निकाला गया और किंग जॉर्ज अस्पताल ले जाया गया। मृतकों में पांच पुरुष और तीन महिलाएं शामिल हैं। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है।इसके अलावा, पूर्व मुख्यमंत्री और वाईएसआर कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष वाईएस जगन मोहन रेड्डी ने श्रद्धालुओं की दुखद मौत पर गहरा दुख और शोक व्यक्त किया।

पहलगाम हमले के खिलाफ एकजुटता दिखाने के लिए सभी विधानसभा क्षेत्र में आआपा ने निकाला कैंडल मार्च

एजेंसी

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के खिलाफ एकजुटता दिखाने के उद्देश्य से आम आदमी पार्टी (आआपा) ने दिल्ली के सभी विधानसभा क्षेत्रों में कैंडल मार्च निकाला। इस कैंडल मार्च में पार्टी के विधायक, विधायक प्रत्याशी, पार्षद, विधानसभा अध्यक्ष समेत सभी नेता अपनी-अपनी विधानसभा में शामिल शामिल हुए। साथ ही, आआपा की अपील पर बड़ी तादात में स्थानीय लोगों ने भी कैंडल मार्च में शामिल होकर भारत माता की एकता और अखंडता का प्रण लिया और मृतकों को अपनी श्रद्धांजलि दी।आआपा के दिल्ली प्रदेश संयोजक सौरभ भारद्वाज ने कहा कि आज पूरा देश केंद्र सरकार के फैसले के साथ खड़ा है और चाहता है कि केंद्र सरकार आतंकवादियों को उन्हीं की भाषा में करारा जवाब दे।आआपा के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस मार्केट, मेन मंडावली रोड, वेस्ट विनोद नगर, पटपड़गंज कैंडल मार्च निकाला और देश के साथ अपनी एकजुटता दिखाई। इसी तरह, पूर्व कैबिनेट मंत्री रघुविंदर शोकीन और वार्ड 45 से पार्षद संतोष पप्पू चिलवाल ने नांगलोई के ज्वालापुरी में पहलगाम आतंकी हमले के खिलाफ कैंडल मार्च निकाल कर मृतकों को श्रद्धांजलि दी और देश की एकता और अखंडता का प्रण लिया। इसके अलावा, वजीरपुर विधानसभा में बाबा रामदेव मंदिर, नियर गुरुद्वारा से डी व सी-ब्लॉक होते हुए बी-ब्लॉक सब्जी मंडी व बाल्मिकी मंदिर ए से एल ब्लॉक जेजे कॉलोनी तक कैंडल मार्च किया गया।

भोपाल दुष्कर्म मामले में राष्ट्रीय महिला आयोग ने गठित की जांच समिति

एजेंसी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय महिला आयोग ने भोपाल के एक कॉलेज में छात्राओं के साथ दुष्कर्म मामले का स्वतः संज्ञान लेते हुए जांच के लिए तीन सदस्यीय समिति का गठन किया है। यह समिति 03 से 05 मई तक भोपाल का दौरा करेगी और मामले की विस्तृत रिपोर्ट तैयार कर आयोग को सौंपेगी। राष्ट्रीय महिला आयोग की राष्ट्रीय अध्यक्ष विजया रहाटकर ने पत्रकारों को बताया कि घटना का स्वतः संज्ञान लेकर संबंधित अधिकारियों को त्वरित कारवाई के निर्देश दिए गए हैं। इस मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच के लिए तीन सदस्यीय समिति का गठन किया गया है। जांच समिति की अध्यक्षता सेवानिवृत आईपीएस अधिकारी निर्मल कौर करेंगी। समिति के अन्य सदस्यों में जबलपुर हाई कोर्ट की अधिवक्ता निर्मला नायक और आयोग के अवर सचिव आशुतोष पांडेय शामिल हैं। रहाटकर ने बताया कि जांच समिति घटना से जुड़ी कार्रवाई की जानकारी लेने के लिए संबंधित अधिकारियों, पीड़ित छात्राओं, उनके परिजनों और अन्य संबन्धित लोगों से मुलाकात करेगी।

सभी पक्षों से बातचीत के आधार पर समिति अपनी रिपोर्ट में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए जरूरी सुझाव देगी। आयोग यह सुनिश्चित करेगा कि पीड़िताओं को न्याय मिले और दोषियों के खिलाफ उचित कानूनी कार्रवाई की जाए। उल्लेखनीय है कि भोपाल के एक कॉलेज में कुछ छात्रों ने अपनी पहचान छिपाकर कई छात्राओं को अपने झूठे प्रेम में फंसाया। इसके बाद दुष्कर्म का मामला सामने आया। आरोपितों ने दुष्कर्म का वीडियो बनाकर पीड़ित छात्राओं को ब्लैकमेल किया। आरोपितों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है। कुछ आरोपित गिरफ्तार भी किए गए हैं।

दिल्ली की सीएम ने 'वन नेशन, वन इलेक्शन' के गिनाए फायदे, बोलीं- पैसा बचेगा, विकास को मिलेगी गति

एजेंसी

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों की तरफ से आयोजित 'वन नेशन, वन इलेक्शन मेगा रन' को हरी झंडी दिखाई। इस मेगा रन में बड़ी संख्या में छात्रों ने हिस्सा लेकर 'एक देश, एक चुनाव' की अहमियत बताने का प्रयास किया। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने छात्रों को संबोधित करते हुए 'एक देश, एक चुनाव' के फायदे बताए। साथ ही, इस मेगा रन में हिस्सा लेने वाले छात्रों के प्रति अपना आभार भी प्रकट किया। मुख्यमंत्री ने कहा, बार-बार चुनाव होने से देश के संसाधनों की क्षति होती है। समय जाया होता है, लोगों की ऊर्जा जाती है। अगर हम एक ही बार में सभी चुनाव करा लेंगे, तो निश्चित तौर पर इस ऊर्जा को बचाकर इसका उपयोग किसी और काम में कर सकेंगे, जिससे देश के विकास की नई गति मिलेगी। उन्होंने आगे कहा, देश में बार-बार चुनाव होने से लाखों करोड़ों रुपये खर्च होते हैं, जिससे देश और राज्य का विकास रुक जाता है। आप कल्पना कीजिए, अगर हम एक ही बार में सभी चुनाव संपन्न कराने की प्रक्रिया स्थापित कर लेंगे, तो कितना पैसा बचा लेंगे। इससे हमें अपने देश के विकास की गति तेज करने में मदद मिलेगी, जो न सिर्फ हमारे लिए बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए भी फायदेमंद साबित होगा। मुख्यमंत्री ने कहा, चुनाव के समय में आचार संहिता लग जाती है, जिससे विकास की गति थम जाती है। पूरी शासन व्यवस्था चुनाव संपन्न कराने में लग जाती है। सभी का ध्यान सिर्फ चुनाव पर ही होता है। इससे विकास कार्यों की अनदेखी होती है। जनता पर भी हम बार-बार मतदान करने की जिम्मेदारी छोड़ देते हैं। उन्होंने कहा, आमतौर पर चुनाव के दौरान शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोग चुनाव से संबंधित कार्यों को संपन्न कराने में लग जाते हैं। इससे दूसरे काम प्रभावित होते हैं। वहीं, नेता चुनाव लड़ने में लग जाते हैं। मैं बार-बार यही कहती हूं कि अगर जनता को जमीन पर होना चाहिए।

महाराष्ट्र के लोनावाला में आयोजित होगा राष्ट्रीय आयुष मिशन कॉन्क्लेव का दूसरा संस्करण

एजेंसी

नई दिल्ली। पारंपरिक स्वास्थ्य सेवा वितरण को मजबूत करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय आयुष मिशन कॉन्क्लेव का दूसरा संस्करण महाराष्ट्र के लोनावाला में आयोजित किया जाएगा। इस सम्मेलन में समग्र, सुलभ और समावेशी स्वास्थ्य सेवा के लिए एक रोडमैपतैयार किया जाएगा। आयुष मंत्रालय द्वारा लोनावाला के कैवल्यधाम में 1-2 मई को राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) कॉन्क्लेव का आयोजन किया जाएगा। दो दिवसीय कार्यक्रम भारत में आयुष-आधारित स्वास्थ्य सेवा के भविष्य को आकार देने के लिए एक राष्ट्रीय मंच के रूप में काम करेगा। आयुष मंत्रालय ने जारी एक विज्ञप्ति में बताया कि इस सम्मेलन के माध्यम से आयुष विशेषज्ञों, नीति निर्माताओं, स्वास्थ्य पेशेवरों, शोधकर्ताओं और नवप्रवर्तकों को एक साथ लाकर पारंपरिक भारतीय चिकित्सा प्रणालियों को मुख्यधारा की स्वास्थ्य सेवा में एकीकृत करने का काम किया जाएगा। सम्मेलन का उद्घाटन आयुष मंत्रालय के केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रतापराव जाधव करेंगे जबकि राजस्थान सरकार के उपमुख्यमंत्री और भारत के नौ राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों के स्वास्थ्य मंत्री के भी सम्मेलन में भाग लेने की उम्मीद है। आयुष

मंत्रालय के सचिव वैद्य राजेश कोटेचा सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति भी कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहेंगे। इस आयोजन में पूर्ण सत्र, नीति गोलमेज बैठकें, तकनीकी सेशन के अलावा आयुष क्षेत्र में सर्वोत्तम प्रथाओं, राज्य की सफलता की कहानियों और तकनीक-आधारित नवाचारों को प्रदर्शित किया जाएगा। इस कॉन्क्लेव के बारे में आयुष मंत्री प्रतापराव जाधन ने कहा कि राष्ट्रीय आयुष मिशन कॉन्क्लेव देश भर में स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए एक सहयोगी पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसका उद्देश्य एक मजबूत और एकीकृत आयुष ढांचे के माध्यम से सभी के लिए समग्र स्वास्थ्य के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाना है। राष्ट्रीय आयुष मिशन कॉन्क्लेव भारत के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा-रिग्पा और होम्योपैथी में नवीनतम विकास, अनुसंधान नवाचारों और क्षेत्रीय सहयोग पर चर्चा करने के लिए एक जीवंत मंच के रूप में काम कर रहा है।

समाज कल्याण मंत्री ने आशा होम्स में समर एक्शन प्लान को लेकर की समीक्षा बैठक

एजेंसी

नई दिल्ली। । समाज कल्याण मंत्री रविन्द्र इंद्राज सिंह ने आशा होम्स में समर एक्शन प्लान को लेकर समाज कल्याण और पीडब्ल्यूडी अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। रविन्द्र इंद्राज सिंह ने मानसिक दिव्यांगों के लिए बने दिल्ली के सभी आशा होम्स में समर एक्शन प्लान के तहत गर्मी से बचाव, भोजन व्यवस्था, स्वास्थ्य सुविधाओं और बुनियादी सुविधाओं के किये गये इंतजामों पर चर्चा की। उन्होंने रोहिणी, नरेला, हरि नगर और तिमारपुर में बने होम्स में रह रहे मानसिक दिव्यांगों के लिए एसी, डेजर्ट कूलर, रूम कूलर, पँखों की उपलब्धता, ठंडे और शुद्ध पेयजल के लिए वाटर कूलर और आरओ की स्थिति जानी। साथ ही

टॉयलेट्स और स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर आवश्यक निर्देश दिये। रविन्द्र इंद्राज ने कहा कि मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के आदेश हैं कि आशा होम्स में सुविधाओं में कोई लापरवाही न हो। उनके गर्मी से बचाव, भोजन व्यवस्था, बुनियादी सुविधाओं और स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर अधिकारी लगातार मॉनिटरिंग करें। समाज कल्याण मंत्री ने दिव्यांगों को हीट एक्सपोजर से बचाने के लिए सभी आवश्यक इंतजामों के निर्देश दिए। तेज धूप से बचाने के साथ उन्होंने गर्मियों के हिसाब से भोजन में फ्रेश सलाद, दही, लेमन वाटर शामिल करने की बात कही। अधिकारियों ने गर्मी से राहत के लिए बिल्डिंग मेंटेनेंस, शेड निर्माण और वाटर स्प्रिंगक्लिंग की जानकारी दी।

मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ के 4.5लाख नए मोबाइल ग्राहक जियो से जुड़े-ट्राई

एजेंसी

भोपाल। जियो मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ टेलीकॉम बाजार में अपनी मजबूत पकड़ बनाए हुए है। टेलीकॉम रेगुलेट्री अथॉरिटी ऑफ इंडिया (ट्राई) की ताजा रिपोर्ट में जियो के साथ सबसे ज्यादा ग्राहक जुड़े है। फरवरी 2025 में जियो पर मप्र-छग के 4.5 लाख नए मोबाइल ग्राहकों ने भरोसा जताया है। ट्राई के आंकड़ों के अनुसार मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ सर्किल में सभी टेलीकॉम कंपनियों के 8 करोड़ से ज्यादा मोबाइल ग्राहक है। इन आंकड़ों में जियो के मोबाइल ग्राहकों की संख्या 4.5 करोड़ हो चुकी है।वहीं, वायरलाइन ब्राडबैंड इंटरनेट उपयोग करने वाले ग्राहकों की संख्या 23.2 लाख है। इनमें जियो फाइबर और जियो एयर-फाइबर इंटरनेट उपयोग करने वाले उपभोक्ता 12.4 लाख से ज्यादा है। ग्राहकों में जियो अनलिमिटेड ऑफर खासा पसंद किया जा रहा है। इस ऑफर के तहत 299 रुपये या अधिक के प्लान वाला नया जियो सिम कनेक्शन लेने पर या फिर कम से कम 299 रुपये का रिचार्ज कराने पर जियो ग्राहक, जियोहॉटस्टार पर मुफ्त में पूरे आईपीएल क्रिकेट सीजन का मजा ले सकते हैं। इसके साथ ही जियो घरों के लिए जियोफाइबर या जियोएयरफाइबर का मुफ्त ट्रायल कनेक्शन भी दे रहा। अल्ट्रा-फ़ास्ट इंटरनेट का मुफ़्त ट्रायल कनेक्शन 50 दिनो तक फ्री रहेगा। ग्राहक 4K में क्रिकेट देखने के बेहतरीन अनुभव के साथ शानदार होम एंटरटेनमेंट का लाभ भी उठा सकेंगे। जियोफाइबर या जियोएयरफाइबर के मुफ्त ट्रायल कनेक्शन में 800+ TV चैनल, 11+ OTT ऐप, अनलिमिटेड WIFI की सुविधा भी मिलेगी।

फिलिप्स ने लाँच की नई प्रीमियम शेवर रेंज

नई दिल्ली। हेल्थ टेक्नोलॉजी और नए-नए प्रयोग करने वाली प्रमुख कंपनी फिलिप्स ने भारतीय बाजार में अपनी नई प्रीमियम इलेक्ट्रिक शेवर रेंज लॉन्च करने की घोषणा की, जिसकी कीमत 34999 रुपये तक है। कंपनी ने यहां जारी बयान में कहा कि ये प्रीमियम इलेक्ट्रिक शेवर्स फिलिप्स सीरीज 7000, आई9000 और आई9000 प्रेस्टीज अल्ट्रा अत्याधुनिक एआई-पावर्ड स्किनआईक्यू टेक्नोलॉजी के साथ डिज़ाइन किए गए हैं। ये शेवर्स सटीकता, आराम और उपयोग में आसानी का अनूठा मेल प्रस्तुत करते हैं, जो हर बार एक सहज और जलन-रहित शेव का अनुभव देते हैं। जैसे-जैसे पुरुषों का ग्रूमिंग सेगमेंट लगातार विकसित हो रहा है, फिलिप्स तकनीक को आम दिनचर्या का हिस्सा बनाकर ग्रूमिंग को नए आयाम दे रहा है। ये प्रीमियम शेवर्स सटीकता, आराम और टिकाऊपन के साथ नया मानदंड स्थापित करते हैं, जिससे हर शेव आसान और सुरक्षित हो जाती है। उसने कहा कि भारत में ग्रूमिंग सेगमेंट में यह अपनी तरह की पहली पेशकश है।

पेट्रोल और डीजल की कीमतें यथावत

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट जारी रहने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम आज यथावत रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा। वैश्विक स्तर पर सप्ताहांत पर अमेरिकी क्रूड 0.76 प्रतिशत लुढ़ककर 61.58 डॉलर प्रति बैरल पर आ गया। इसी तरह लंदन ब्रेंट क्रूड 0.85 प्रतिशत की गिरावट के साथ 65.30 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

नथिंग ने लाँच किया सीएमएफ फोन 2 प्रो

नयी दिल्ली। प्रौद्योगिकी कंपनी नथिंग ने भारतीय बाजार में अपने सीएमएफ ब्रांड के तहत एक नया स्मार्टफोन सीएमएफ फोन 2 प्रो लाँच करने की घोषणा की, जिसकी कीमत 16999 रुपये है। कंपनी ने यहां जारी बयान में कहा कि इस श्रेणी में यह पहला स्मार्टफोन है जिसमें तीन-कैमरा सिस्टम, ब्राइट डिस्प्ले और प्रीमियम डिज़ाइन दिया गया है। नथिंग के लिए यह सबसे पहला स्मार्टफोन है जिसकी मोटाई 7.8 मिलीमीटर और वजन 185 ग्राम है। यह एल्युमिनियम कैमरा सराउंड के साथ एक बॉडी में आता है। सबसे बड़े सेंसर वाले 50 एमपी का मुख्य कैमरा है। इसके साथ ही 50 एमपी का टेलीफ़ोटो लेंस 2एक्स ऑप्टिकल ज़ूम और 20 एक्स अल्ट्रा ज़ूम तक प्रदान करता है। इसमें 8 एमपी अल्ट्रा-वाइड कैमरा भी है जबकि 16 एमपी का फ्रंट कैमरा आपकी सबसे शानदार सेल्फी लेने के लिए तैयार है। नए अपग्रेड किए गए मीडियाटेक डायमेंस्टी 7300 प्रो 5 जी प्रोसेसर में 8-कोर सीपीय है। इसमें 5000 एमएएच की बैटरी है।इसमें 6.77 इंच का एफएचडी प्लस एमोलेड डिस्प्ले है।

जावेद अख्तर ने रचनात्मक स्वतंत्रता को बाजारवाद से बचाने के लिए मजबूत तंत्र बनाने का किया आग्रह

एजेंसी

नई दिल्ली। फिक्की ने नई दिल्ली में 'आईपी एंड म्यूजिकः फील द बीट ऑफ आईपी' सम्मेलन का आयोजन किया। इसमें प्रसिद्ध गीतकार एवं भारतीय फॉर्मिंग राइट सोसाइटी (आईपीआरएस) के अध्यक्ष जावेद अख्तर ने रचनात्मक स्वतंत्रता को बाजारवाद से बचाने के लिए मजबूत तंत्र बनाने का आग्रह किया। अख्तर ने चेतावनी दी कि कॉरपोरेटाइजेशन ने एक ऐसी व्यवस्था बनाई है, जहां रचनात्मकता के लिए जगह कम होती जा रही है क्योंकि मार्केटिंग विभाग कलात्मक विकल्पों को निर्धारित करते हैं। अख्तर ने कहा कि रचनात्मकता और बाजार के बीच संतुलन होना चाहिए। उन्होंने कहा, आप बाजार के आदेश का पालन कर रहे हैं, तो आप किस तरह के मार्केटिंग व्यक्ति हैं? कोई रचनात्मकता नहीं है, कोई प्रयोग नहीं है, कोई साहस नहीं है। अख्तर ने बताया कि 2017 में कानून संशोधन

के बाद आईपीआरएस ने लोगों को एक नया मार्ग प्रशस्त करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि 2017 में आईपीआरएस की आय 42 करोड़ रुपये थी, जो इस साल 730 करोड़ रुपये पार कर गई और जल्द ही एक हजार करोड़ तक पहुंच जाएगी। संस्कृति मंत्रालय के सचिव विवेक अग्रवाल ने कई नए पहलों की घोषणा की, जिनमें स्पोटिफाई और यू-ट्यूब जैसे डिजिटल मंचों से एकाग्र कर पारंपरिक संगीत को बढ़ावा देना शामिल है। साथ ही पारंपरिक वाद्ययंत्रों को भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग योजना भी साझा की गई। इसमें आईपीआर पंजीकरण में क्षेत्रीय कलाकारों को सहायता देना, सांस्कृतिक उद्योगों में विशेष सेल बनाना शामिल है। फिक्की-आईपीआर समिति के अध्यक्ष अनिल राजपूत ने बताया कि एक दशक की मेहनत के बाद विश्व शेयर बाजार संपदा संगठन (डब्ल्यूआईपीओ) के साथ आईपी फॉर बिजनेस सेंटर की स्थापना के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर हुआ है। सम्मेलन में डिजिटल युग में आईपी लागू करने का अनावरण भी किया गया और पुलिस अधिकारियों के लिए एक नया आईपी प्रवर्तन टूलकिट पेश किया गया।

रायपुर के आईआईएम और एनआईटी को 178 करोड़ रुपये देने की घोषणा

एजेंसी

रायपुर। भारत के टॉप फाइव स्टॉक एक्सचेंज ब्रोकर कंपनी मोतीलाल ओसवाल फाइनेंसियल लिमिटेड के मालिक रामदेव अग्रवाल ने रायपुर के आईआईएम और एनआईटी को 178 करोड़ रुपये देने की घोषणा की है। वित्त मंत्री ओपी चौधरी और रायपुर नगर निगम के तत्कालीन कमिश्नर रह चुके अबिनाश मिश्रा ने उन्हें इन दोनों संस्थाओं को दान देने के लिए प्रेरित किया। । ओपी चौधरी ने सोशल मीडिया पर इसके लिए रामदेव अग्रवाल को आभार जताया है। रामदेव अग्रवाल रायपुर जिले के आरंग के रहने वाले हैं। उनका बचपन आरंग में गुजरा, स्कूली शिक्षा भी आरंग में हुई। इसके बाद वे मुंबई चले गए। वे देश की शीर्षस्थ फाइनेंसियल कंपनी मोतीलाल ओसवाल लिमिटेड के मालिक हैं। उन्होंने गरीब बच्चों और एजुकेशनल संस्थाओं की मदद के लिए मोतीलाल ओसवाल फाउंडेशन बनाया है। उनकी संपत्ति 107 बिलियन डॉलर है। इस संबंध में मोतीलाल ओसवाल

फायनेंसियल लिमिटेड रायपुर के आईआईएम और एनआईटी के प्रबंधन को एक मेल भेजा है।

डाक विभाग और एसबीआई म्यूचुअल फंड के बीच करार, निवेशकों को घर बैठे केवाईसी सुविधा का लाभ

एजेंसी

नई दिल्ली। ग्राहक ऑनबोर्डिंग प्रक्रिया को आसान बनाने के उद्देश्य से डाक विभाग और एसबीआई फंड्स मैनेजमेंट लिमिटेड ने एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। इस करार से अब एसबीआई म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले ग्राहकों को केवाईसी के लिए डाकघर जाने की आवश्यकता नहीं होगी, उन्हें घर बैठे यह सुविधा प्राप्त होगी। यह समझौता डाक भवन, नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान संपन्न हुआ। इसमें डाक विभाग की व्यवसाय विकास निदेशालय की महाप्रबंधक मनीषा बंसल बादल और एसबीआई फंड्स मैनेजमेंट लिमिटेड के वरिष्ठ उपाध्यक्ष मुनिश सभरवाल ने एमओयू पर हस्ताक्षर किए।

डाक विभाग के पास देशभर में 1.64 लाख से अधिक डाकघरों का व्यापक नेटवर्क है, जो सबसे दूरदराज़ क्षेत्रों तक फैला हुआ है। यह साझेदारी वित्तीय समावेशन को

बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। समझौते के अनुसार, डाक विभाग के प्रशिक्षित कर्मचारी निवेशकों से उनके जरूरी दस्तावेज और फॉर्म घर जाकर एकत्र करेंगे। इससे दस्तावेज़ी प्रक्रिया अधिक सुरक्षित, सटीक और गोपनीय होगी। इस पहल से न केवल निवेशकों को सुविधा मिलेगी, बल्कि इससे ग्रामीण और दूरदराज़ इलाकों में रहने वाले लोगों को भी निवेश से जुड़ने का बेहतर अवसर प्राप्त होगा। यह कदम डिजिटल और वित्तीय समावेशन की दिशा में सरकार के प्रयासों को मजबूती प्रदान करेगा।

भारत-अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर वार्ता प्रगति की ओर

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय और अमेरिकी अधिकारियों की वाशिंगटन में बैठक हुई है। इसमें द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर जारी वार्ता पर चर्चा हुई है जिसमें सकारात्मक प्रगति है। टीम ने 2025 की शरद ऋतु तक पारस्परिक रूप से लाभकारी, बहु-क्षेत्रीय द्विपक्षीय व्यापार समझौते के पहले चरण को पूरा करने के उपायों पर चर्चा की, जिसमें शुरुआती पारस्परिक लाभप्रद अवसर भी शामिल हैं।

वाणिज्य मंत्रालय ने आज इसकी जानकारी दी है। मंत्रालय के अनुसार भारत-अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर चल रही चर्चाओं के हिस्से के रूप में भारत के वाणिज्य विभाग और अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि कार्यालय के प्रतिनिधियों ने 23 से 25 अप्रैल तक वाशिंगटन, डी.सी. में मुलाकात की। नई दिल्ली में मार्च, 2025 में आयोजित द्विपक्षीय चर्चाओं के बाद यह बैठक हुई थी। वाशिंगटन, डी.सी.

में बैठकों के दौरान, टीम ने टैरिफ और गैर-टैरिफ मामलों को कवर करने वाले व्यापक विषयों पर लाभदायक चर्चा की। यह ध्यान देने योग्य बात है कि वर्चुअल तौर पर क्षेत्रवार विशेषज्ञ स्तर की बैठकें लाभदायक रही हैं और मई के अंत से व्यक्तिगत क्षेत्रवार बैठकों की योजना है।ये लाभदायक चर्चाएं द्विपक्षीय व्यापार समझौते के माध्यम से भारत-अमेरिका के बीच आर्थिक संबंधों और आपूर्ति श्रृंखला के एकीकरण को आगे बढ़ाने और विस्तारित करने के लिए फरवरी 2025 में नेताओं के वक्तव्य के अनुरूप द्विपक्षीय प्रयासों का हिस्सा हैं।

रोजगार को लेकर श्रम एवं रोजगार मंत्रालय और रैपिडो के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर

एजेंसी

नई दिल्ली। देश में रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए श्रम एवं रोजगार मंत्रालय और रैपिडो के बीच आज एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। यह करार नेशनल करियर सर्विस (एनसीएस) पोर्टल के माध्यम से लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में रोजगार के अवसरों को सशक्त करने के उद्देश्य से किया गया है।

केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री डॉ मनसुख मांडविया और राज्य मंत्री शोभा करंदलाजे की उपस्थिति में आज एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर डॉ मांडविया ने कहा, ÷एनसीएस पोर्टल देशभर में नौकरी चाहने वालों और नियोक्ताओं को जोड़ने वाला एक सशक्त मंच बन

चुका है। इस पोर्टल पर 1.75 करोड़ से अधिक सक्रिय नौकरी खोजने वाले और 40 लाख से अधिक पंजीकृत नियोक्ता हैं। रैपिडो के अगले 1-2 वर्षों में 50 लाख आजीविका अवसर प्रदान करने के लक्ष्य की सराहना करते हुए उन्होंने बताया कि एनसीएस पोर्टल माय भारत, ई-श्रम, सिद्ध और एमईए-ई मायग्रेट जैसे प्लेटफॉर्म्स से जुड़ चुका है। राज्य मंत्री शोभा करंदलाजे ने रैपिडो के महिला-केंद्रित रोजगार प्रयासों की सराहना की, जिसमें 5 लाख महिलाओं को रोजगार देने का लक्ष्य रखा गया है।

रैपिडो के सह-संस्थापक पवन गुन्टुपल्ली ने 'पिंक रैपिडो' पहल की चर्चा करते हुए कहा कि यह सहयोग रोजगार को नए स्तर पर ले जाएगा। एमओयू के अंतर्गत रैपिडो एनसीएस पोर्टल पर नियमित रूप से दोपहिया टैक्सी, ऑटो और कैब के लिए वैरिफाइड नौकरियों की जानकारी साझा करेगा और एपीआई इंटीग्रेशन के माध्यम से रियल टाइम भर्ती प्रक्रिया सुनिश्चित की जाएगी। यह कदम रोजगार, समावेशन और डिजिटल सशक्तिकरण की दिशा में सरकार और निजी क्षेत्र की साझेदारी का उत्कृष्ट उदाहरण है।

बजाज फाइनेंस का शुद्ध मुनाफा 18.9 प्रतिशत बढ़ा

एजेंसी

मुंबई। देश की प्रमुख गैर बैंकिंग वित्तीय सेवा कंपनी बजाज फाइनेंस लिमिटेड (बीएफएल) का 31 मार्च को समाप्त वित्त वर्ष की जनवरी-मार्च तिमाही में सकल शुद्ध मुनाफा इसके पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही के 3,824.53 करोड़ रुपये के मुकाबले 18.9 प्रतिशत की बढ़ोतरी लेकर 4,545.57 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। कंपनी ने शेयर बाजार को बताया कि वित्त वर्ष 2024-25 की अंतिम तिमाही में उसे 4,545.57 करोड़ रुपये का सकल शुद्ध मुनाफा हुआ, जो वित्त वर्ष 2023-24 की इसी तिमाही के 3,824.53 करोड़ रुपये से 18.9 प्रतिशत अधिक है। इस अवधि में उसकी कुल आय 14,931.84 करोड़ रुपये से 23.7 प्रतिशत की बढ़ोतरी लेकर 18,468.74 करोड़ रुपये हो गया। इसी तरह उसका कुल व्यय भी 9,829.77 करोड़ रुपए से 30.5 प्रतिशत बढ़कर 12,830.18 करोड़ रुपये रहा। बीएफएल ने बताया कि 31 मार्च 2025 को समाप्त वित्त वर्ष 2024-25 में उसे 16,779.48 करोड़ रुपये का सकल शुद्ध मुनाफा हुआ, जो वित्त वर्ष 2023-24 के 14,451.17 करोड़ रुपये से 16.1 प्रतिशत अधिक है। इस अवधि में उसकी कुल आय 54,982.51 करोड़ रुपये से 26.8 प्रतिशत बढ़कर 69,724.78 करोड़ रुपये पर पहुंच गई। इसी तरह उसका कुल व्यय 35,680.58 करोड़ रुपये के मुकाबले 33.6 प्रतिशत की बढ़ोतरी लेकर 47 ,662.96 करोड़ रुपये हो गया।

अक्षय तृतीया 2025: सोने-चांदी की रिकॉर्ड कीमतों के बीच 16 हजार करोड़ के व्यापार की संभावना

एजेंसी

नई दिल्ली। अक्षय तृतीया को सौभाग्य और समृद्धि से जोड़ा जाता है। इस दिन सोने-चांदी की खरीद को अत्यंत शुभ माना जाता है। हालांकि इस बार त्योहार से पहले सोने और चांदी की कीमतों में ऐतिहासिक वृद्धि देखने को मिली है। इससे बाजार में खरीदारी का रुझान प्रभावित हो सकता है।

इसके बावजूद भी अनुमान है कि कल 16 हजार करोड़ के सोना-चांदी के व्यापार होने की संभावना है। कॉन्फ़ेडरेशन ऑफ़ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के अनुसार इस वर्ष 10 ग्राम सोने का दाम 1 लाख रुपये और चांदी 1 लाख रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गई है। पिछले वर्ष ये दरें क्रमशः 73,500 और 86 हजार थीं। कैट के अनुसार 2023 में अक्षय तृतीया पर करीब 14,500

करोड़ का व्यापार हुआ था, जबकि 2024 में लोकसभा चुनाव के चलते इसमें गिरावट देखी गई। ऑल इंडिया ज्वेलर्स एंड गोल्डस्मिथ फेडरेशन के अध्यक्ष पंकज अरोड़ा ने बताया कि इस वर्ष अक्षय तृतीया पर करीब 12 टन सोना (12 हजार करोड़) और 400 टन चांदी (4 हजार करोड़) की बिक्री संभावित है, जिससे कुल व्यापार 16 हजार करोड़ तक पहुंच सकता है। अरोड़ा ने सोने-चांदी के दाम बढ़ने के पीछे अंतरराष्ट्रीय आर्थिक अनिश्चितता, डॉलर के मुकाबले रुपये की कमजोरी, भू-राजनीतिक तनाव और निवेशकों की बढ़ती रुचि को प्रमुख कारण बताया। विवाह सीजन के चलते बाजार में कुछ मांग बनी हुई है। कैट अध्यक्ष बी. सी. भरतिया के अनुसार, शादी-ब्याह में सोने की खरीद परंपरागत है, जिससे ग्राहक कम मात्रा में ही सही, लेकिन खरीदारी कर रहे हैं। व्यापार संगठनों ने ग्राहकों से अपील की है कि वे केवल हॉलमार्क ज्वैलरी खरीदें और विश्वसनीय ज्वैलर्स से ही लेन-देन करें।

मुथूट फिनकॉर्प ने लॉन्च की नई एनसीडी सीरीज, 350 करोड़ रुपये जुटाने का लक्ष्य

एजेंसी

मुंबई। गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनी (एनबीएफसी) मुथूट फिनकॉर्प लिमिटेड ने सुरक्षित और प्रतिदेय गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर (एनसीडी) की नई श्रृंखला लॉन्च की है, जिसके जरिए उसने इस वर्ष 29 अप्रैल से 13 मई तक 350 करोड़ रुपये तक जुटाने का लक्ष्य रखा है। कंपनी ने बयान जारी कर बताया कि इस इश्यू के माध्यम से उसने 350 करोड़ रुपये तक जुटाने का लक्ष्य रखा है, जिसमें 100 करोड़ रुपये का बेस साइज और 250 करोड़ रुपये का ग्रीन शू विकल्प शामिल है। 29 अप्रैल से 13 मई, 2025 तक खुली रहने वाली यह पेशकश 1,000 रुपये अंकित मूल्य वाले सुरक्षित एनसीडी के रूप में है, जिसे कंपनी की ऋण-वित्तपोषण गतिविधियों, मौजूदा ऋण की अदायगी और सामान्य कॉर्पोरेट

जरूरतों को पूरा करने के लिए उपयोग किया जाएगा।यह एनसीडी श्रृंखला 24, 36, 60 और 72 महीनों के कार्यकाल में नौ प्रतिशत से 10 प्रतिशत तक के प्रभावी वार्षिक प्रतिफल की पेशकश करती है। इस इश्यू को क्रिसिल रेटिंग्स लिमिटेड ने 'क्रिसिल एए-/स्टेबल' रेटिंग दी है, जो समय पर वित्तीय दायित्वों के भुगतान के लिए उच्च सुरक्षा को दर्शाती है। इन एनसीडी को बीएसई के ऋण बाजार खंड में सूचीबद्ध किया जाएगा। निवेशक पांच लाख रुपये तक के आवेदन यूपीआई के माध्यम से किया जा सकता है जबकि एससीएसबी, स्टॉक एक्सचेंज प्लेटफ़ॉर्म और डिपॉजिटरी प्रतिभागी जैसे माध्यम भी उपलब्ध हैं। मुथूट फिनकॉर्प वन मोबाइल ऐप के माध्यम से निवेश को सरल और सहज बनाया गया है, जो कंपनी के 3,700 से अधिक शाखाओं के मजबूत ऑफलाइन नेटवर्क का डिजिटल पूरक है। कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) शाजी वर्गीस ने कहा, हमें अपनी नई एनसीडी सीरीज के लॉन्च की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है।

योगी सरकार ने गुलाबी मीनाकारी को दिलाया जीआई टैग, ओडीओपी में शामिल कर दिलाया इंटरनेशनल मार्केट

वाराणसी। योगी सरकार द्वारा बनारस की गुलाबी मीनाकारी को जीआई पहचान दिलाकर और ओडीओपी में शामिल करके इसे इंटरनेशनल मार्केट दिला दिया है। जिससे गुलाबी मीनाकारी को अक्षय तृतीया में नया बाजार मिल गया है। सोने के दामों में उछाल ने अक्षय तृतीया पर कुंदन गुलाबी मीनाकारी (गहने) के उत्पादों की मांग बढ़ा दी है। देश और विदेशों दोनों ही जगहों से अक्षय तृतीया पर गुलाबी मीनाकारी के आर्डर में वृद्धि हुई है। हस्त शिल्पियों को अक्षय तृतीया पर लगभग एक करोड़ से अधिक का आर्डर मिला है। योगी सरकार ने गुलाबी मीनाकारी को दिलाया जीआई टैग, ओडीओपी में शामिल कर दिलाया इंटरनेशनल मार्केट पीएम नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जीआई और ओडीओपी उत्पादों के ब्रांड एम्बेस्डर बनकर उत्तर प्रदेश के हैंडीक्राफ्ट को विश्व के बाजार में पंहुचा दिया है। बदलते ट्रेंड में अब कुंदन गुलाबी मीनाकारी की ज्वेलरी लोगों को खूब भा रही है। जीआई विशेषज्ञ पद्मश्री रजनीकांत ने बताया कि बनारस गुलाबी मीनाकारी को बनाने में सोने और चांदी का इस्तमाल होता है, इसलिए लोग शुभ मानकर इस प्राचीन हस्तकला को अक्षय तृतीया में खूब पसंद कर रहे है। योगी सरकार ने गुलाबी मीनाकारी को दिलाया जीआई टैग, ओडीओपी में शामिल कर दिलाया इंटरनेशनल मार्केट लगभग 12 से 15 करोड़ से अधीक का है।

राजधानी के पांच रेस्त्रां को सेवा शुल्क वापस करने के निर्देश

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) ने राजधानी के पांच रेस्तरां के खिलाफ़ स्वतः संज्ञान लेते हुए उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019 के तहत नोटिस जारी किए गए हैं और उन्हें सेवा शुल्क राशि वापस करने के निर्देश दिए हैं। जारी एक आधिकारिक रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली उच्च न्यायालय के निर्णय के विपरीत सेवा शुल्क वापस न करने के मामले में मखना डेली, ज़ीरो कोर्टयार्ड, कैसल बारबेक्यू, चायोस और फिएस्टा बाय बारबेक्यू नेशन के खिलाफ यह कार्रवाई की गयी है। विज्ञप्ति में कहा गया है कि यह कार्रवाई इस उद्देश्य से की गयी है कि उपभोक्ताओं पर किसी रेस्तरां में सेवा शुल्क के अतिरिक्त राशि का भुगतान करने के लिए का दबाव न पड़े। बयान में कहा गया है

कि कोई होटल या रेस्तरां उपभोक्ताओं को सेवा शुल्क का भुगतान करने के लिए बाध्य नहीं कर सकता अथवा किसी अन्य नाम से उपभोक्ताओं से सेवा शुल्क की वसूली नहीं की जा सकती । उल्लेखनीय है कि केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (सीसीपीए) ने चार जुलाई 2022 को होटलों और रेस्तराओं में सेवा शुल्क के संबंध में अनुचित व्यापार प्रथाओं पर अंकुश लगाने और उपभोक्ता हितों की रक्षा के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं, जिनमें यह स्पष्ट निर्देश है कि कोई भी होटल या रेस्तरां भोजन बिल में स्वचालित रूप से सेवा शुल्क (सर्विस चार्ज) नहीं जोड़ेगा और न ही किसी अन्य नाम से सेवा शुल्क की वसूली करेगा।इसी तरह निर्देश है कि सेवा शुल्क के संग्रह के आधार पर उपभोक्ताओं पर प्रवेश या सेवाओं के प्रावधान पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जाएगा। साथ ही यह भी स्पष्ट निर्देश है कि सेवा शुल्क को भोजन बिल के साथ जोड़कर कुल राशि पर वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) की वसूली नहीं नहीं की जा सकती। दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस वर्ष 28 मार्च सेवा शुल्क पर सीसीपीए के दिशा-निर्देशों को बरकरार रखा है।

'उनका बुरा हाल हो...', पहलगाम हमले पर छलका

दीपिका कक्कड़

का दर्द, कहा - 'जितना मैंने इस्लाम को समझा....'

पहलगाम हमले के बाद लोगों का गुस्सा शांत होने का नाम नहीं ले रहा है. आतंकी हमले से पहले टीवी एक्ट्रेस दीपिका कक्कड़ और शोएब इब्राहिम पहली बार कश्मीर घूमने पहुंचे थे. अपने इस ट्रीप के दौरान दीपिका -शोएब ने कई व्लॉग बनाए, वीडियोज और रील्स भी बनाईं. लेकिन पहलगाम हमले के बाद भी जब दोनों लगातार व्लॉगिंगस के जरिए कश्मीर पर बात करते रहे थे, तो लोगों ने इन्हें जमकर ट्रोल करना शुरू कर दिया. अब दीपिका ने अपने नए व्लॉग में अपना दुखा जाहिर किया है.

दीपिका की मानें तो जब वो दिल्ली वापस लौट रहे थे, तो उन्हें उसी दौरान इस आंतकी हमले के बारे में पता चला. दीपिका कक्कड़ ने व्लॉग में कहा, 'जब हम ट्रिप पर थे तो मैंने ऐसे ही ऑन एंड ऑफ व्लॉग बनाए हैं क्योंकि मैं ज्यादातर रूहान को अटेंड कर रही थी. उसके बाद पिछले दो-तीन दिनों से तो एक अलग सी मायूसी कह लो या सोचने समझने की कपैसिटी नहीं होती, वैसी सिचुएशन थी. क्योंकि जो कुछ भी हुआज हमारे साथ तो ऐसा हुआ कि जिस दिन हम दिल्ली

में लैंड किए हैं, धीरे-धीरे पता चलने लगा पहलगाम में ऐसा अटैक हुआ है.

दिल दहलाने वाला हादसा -दीपिका कक्कड़

दीपिका ने आगे कहा, शुरुआत में मुझे ऐसा लहा कि छोटा-सा कुछ हुआ है, ऐसा लग रहा था. लेकिन जिस तरह से इस सिचुएशन की गंभीरता पता चली है. मतलब इतना भयानक कहूं या दर्दनाक, जो हादसा हुआ है पूरी तरह से हिला कर रख दिया है. दीपिका ने महिलाओं और बच्चों की हालत पर दुख जाहिर किया. एक्ट्रेस ने इस हादसे को दिल दहलाने वाला बताया.

सबका बुरा हाल हो, सबके सामने हो - दीपिका कक्कड़

अपने व्लॉग में दीपिका ने ये भी कहा, मैं तो दिल से दुआ करती हूं कि जिस किसी ने भी ये किया है, एक तो जिन चार लोगों का स्केच सामने आया था वो, और इसके पीछे जो भी लोग हैं उन सबका बुरा हाल हो, इतना बुरा हाल हो, सबके सामने हो. जैसे आज ये बेचारी फैमिली तड़प रही हैं, वैसे ही वो तड़पें. हर एक दर्द को महसूस करें. जितना मैं इस्लाम को समझी हूं, मैं ये चीज पूरे यकीन के साथ कह सकती हूं कि ये कोई ईमान वाला मुसलमान ये काम कर ही नहीं सकता.

मैं मर जाऊं तो मुझे जला देना, किसी को बताना मत... राजकुमार की आखिरी इच्छा ऐसी क्यों थी?

दिवंगत एक्टर राजकुमार काफी मुंहफट स्वभाव के व्यक्ति थे. अमिताभ बच्चन, सलमान खान से लेकर गोविंदा जैसे सुपरस्टार्स तक की उन्होंने मुंह पर बेइज्जती की थी. उनसे जुड़े कई किस्से काफी मशहूर हैं. लेकिन आपको ये बात हैरान कर सकती है कि एक्टर की इच्छा अपने अंतिम संस्कार में किसी को भी बुलाने की नहीं थी. उन्होंने इसकी वजह भी बताई थी जो आपको भी कफी हैरान कर सकती है या सोचने पर भी मजबूर कर सकती है.

राजकुमार का जन्म 8 अक्टूबर 1926 को पाकिस्तान के लोरलाई में हुआ था. राजकुमार ने अपने करियर में काफी नाम कमाया था. फैंस उनके अभिनय के साथ ही उनकी डायलॉग डिलीवरी के भी दीवाने रहे. लेकिन इस दिग्गज एक्टर के असामयिक निधन से फैंस को बड़ा झटका लगा था. दरअसल राजकुमार को अपने अंतिम दिनों में गले का कैंसर हो गया था. इस बीमारी के चलते उनका 3 जुलाई 1996 को मुंबई में निधन हो गया था.

राजकुमार को हो गया था मौत का आभास

राजकुमार को मौत से ठीक पहले मौत का आभास हो गया था. गले के कैंसर के चलते एक्टर ने महज 70 साल की उम्र में दुनिया छोड़ दी थी. एक दिन उन्होंने परिवार के लोगों को बुलाया और उन्हें सख्त हिदायत दी थी. दिवंगत अभिनेता ने कहा था कि मेरे मरने के बाद किसी को मेरी मौत की खबर मत देना. मुझे जला देना, मेरा अंतिम संस्कार कर देना. इसके बाद ही लोगों को मेरे निधन की खबर देना.

राजकुमार ने क्यों जताई थी ऐसी इच्छा ?

राजकुमार का अंतिम संस्कार कहां और कब हुआ था इसे लेकर आधिकारिक तौर पर कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है. उनकी इच्छा के मुताबिक उनकी फैमिली ने उनका अंतिम संस्कार गुपचुप तरीके से कर दिया था. दरअसल वो नहीं चाहते थे कि उनकी मौत के बाद किसी तरह का कोई मजाक या तमाशा बने. उनकी इच्छा थी कि न ही लोग और न ही मीडिया उनके अंतिम संस्कार का हिस्सा बने.

फिल्मों के लिए सब-इंस्पेक्टर की नौकरी छोड़ी

राजकुमार कभी मुंबई पुलिस में सब इंस्पेक्टर के पद पर नौकरी करते थे. लेकिन किसी ने उन्हें फिल्मों में आने की सलाह दी तो वो नौकरी छोड़कर बॉलीवुड में आ गए. राजकुमार ने अपने करियर में 'मदर इंडिया', 'तिरंगा', 'पैगाम', 'दिल अपना और प्रीत पराई', 'रिश्ते नाते' और 'सौदागर' सहित कई फिल्मों में काम किया था.

सलमान खान की 'मुझसे शादी करोगी' का बनेगा सीक्वल, खबर पढ़कर भाईजान के फैंस का दिल टूट जाएगा

सलमान खान ने अपने करियर में कई ऐसी फिल्में की हैं, जिन्हें सालों बाद भी उनके फैंस देखना पसंद करते हैं. ऐसी फिल्मों में एक नाम है 'मुझसे शादी करोगी' का, जो साल 2004 में रिलीज हुई थी. डेविड धवन ने फिल्म को डायेरक्ट किया था और साजिद नाडियाडवाला इस फिल्म के प्रोड्यूसर थे. अब इस फिल्म के सीक्वल बनने की खबर है.

सलमान के साथ फिल्म में प्रियंका चोपड़ा और अक्षय कुमार भी दिखे थे. हालांकि, सीक्वल की खबर से इन तीनों स्टार्स के फैंस का दिल टूट सकता है. ऐसा इसलिए, क्योंकि सीक्वल बनने की खबर तो है, लेकिन ऐसा कहा जा रहा है कि ये तीनों सितारे दूसरे पार्ट में नहीं दिखेंगे.

फिल्म की स्क्रिप्ट पर चल रहा है काम

पिंकविला की एक रिपोर्ट की मानें तो साजिद नाडियाडवाला किसी तीन यंग एस्टेब्लिश सितारों के साथ फिल्म बनाने की प्लानिंग कर रहे हैं.

रिपोर्ट में ये भी कहा गया कि अभी 'मुझसे शादी करोगी 2' की स्क्रिप्ट पर काम चल रहा है. हालांकि, सीक्वल बनाना है या नहीं इसका आखिरी फैसला स्क्रिप्ट तैयार होने के बाद होगा. अगर साजिद को फिल्म की स्क्रिप्ट पसंद आई तभी सीक्वल बनेगा. उनका आइडिया तीन स्टार्स के साथ एक कॉमेडी फिल्म बनाने का है.

इन दो फिल्मों के सीक्वल पर भी चल रहा है काम

रिपोर्ट में ये भी बताया गया कि दो और बॉलीवुड फिल्मों के सीक्वल पर काम चल रहा है. पहली फिल्म है विद्या बालन की 'कहानी', जिसका तीसरा पार्ट बनने वाला है. डायरेक्टर सुजॉय घोष फिल्म की स्क्रिप्ट पर काम कर रहे हैं. आइडिया सुनकर विद्या भी फिल्म करने को राजी हो गई हैं. फिलहाल वो स्क्रीनप्ले फाइनल होने का इंतजार कर रही हैं.

दूसरा नाम कंगना रनौत की फिल्म 'क्वीन' का है. बताया गया कि इस फिल्म का दूसरा पार्ट हमें आने वाले समय में देखने को मिल सकता है. विकास बहल ने फिल्म के लिए स्क्रिप्ट क्रैक कर लिया है. फिलहाल लीगल टीम फिल्म के टाइटल के राइट्स पर काम कर रही है. अगर सबकुछ सही रहा तो कंगना हमें 'क्वीन 2' दिख सकती हैं.

महेंद्र सिंह धोनी से मिलने गई

गुल्की जोशी

इस टीवी एक्ट्रेस का हो गया था बुरा हाल, कहा- उस इंसीडेंट ने मुझे हिलाकर रख दिया

गुल्की जोशी टेलीविजन इंडस्ट्री का जाना पहचाना नाम हैं. वैसे तो गुल्की कई शो में नजर आ चुकी हैं, लेकिन उनका सबसे फेमस शो नादान परिंदें से इन्हें काफी पॉपुलैरिटी हासिल हुई थी. हालांकि, फेमस शख्स होने के बाद भी एक वक्त ऐसा आया, जिसने एक्ट्रेस को झकझोर कर रख दिया. हाल ही में एक्ट्रेस ने एक इंटरव्यू में अपनी जर्नी के बारे में बात की. इसी दौरान उन्होंने इंडियन क्रिकेटर महेंद्र सिंह धोनी से भी मिलने का किस्सा शेयर किया.

गुल्की का शो नादान परिंदें काफी फेमस था, जिसकी वजह से उन्हें एक इवेंट में गेस्ट के तौर पर इनवाइट किया गया था. उस इवेंट में उन्हें महेंद्र सिंह धोनी को एक अवॉर्ड देना था. अपनी इस जर्नी को शेयर करते हुए एक्ट्रेस ने उनके साथ हुए एक डरावने हादसे का भी खुलासा किया. उन्होंने बताया कि जब वो इवेंट की लोकेशन पर पहुंची, तो लोगों की भीड़ उन पर काफी हावी हो गई थी. उन्होंने बताया कि उस दौरान उन्हें महसूस हुआ कि ये सिर्फ लोगों की एक्साइटमेंट नहीं है.

छेड़छाड़ का था डर

फिल्मी मंत्रा के साथ बातचीत में एक्ट्रेस ने बताया कि रांची में वो पहली बार था, जब वो आईपीएल के लिए गई थीं. उन्होंने बताया कि वो इवेंट एक वक्त के बाद काफी खतरनाक साबित हुआ. उन्होंने बताया कि लोगों की भीड़ इस तरह की हो गई थी कि उन्हें फिजिकली तौर पर खतरा महसूस होने लगा था. गुल्की ने बताया कि लोगों के धक्का-मुक्की के बीच उन्हें ऐसा लगा कि उनके साथ छेड़छाड़ भी हो सकती है.

पूरी तरह से सहम गई थीं

हालांकि, एक्ट्रेस को बचाने के लिए उनके सिक्योरिटी गार्ड वहां पहुंच गए और उन्हें घेर लिया. चीजों के कंट्रोल में आने के बाद वो भीड़ में से निकल गई थीं. एक्ट्रेस ने बताया कि वो इस भयानक था कि एक सेफ जगह पर जाने के बाद भी मुझे डर लग रहा था. उस घटना की वजह से एक्ट्रेस पुरी तरह सहम गई थीं. हालांकि, इन सभी के बावजूद एक्ट्रेस का इवेंट काफी अच्छा हुआ. उन्होंने एमएस धोनी के साथ मुलाकात भी की.